All Rights Reserved.

श्रीयुक्त बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त प्रणीत

अमर सिंह

BENGAL LIBRARY
4 APR 1907
WRITERS BUILDINGS

सिपाहीविद्रोहमूलक उपन्यास

का

कात्यायनकुमार ८ पं० प्रतापनारायण मिश्र
ब्राह्मणसम्पादक कृत हिन्दी
अनुवाद

श्री बाबू रामरणविजय सिंह द्वारा प्रकाशित

पटना—"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर

चंडीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित

१९०७

प्रथमवार] [दाम ॥)

भूमिका।

संसार का कोई भी काम मनुष के विचारानुसार नहीं होता, होता है उसी दिन जिस दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर कराना चाहते हैं। प्रायः १४ वर्ष से भी अधिक हुए जब इस उपन्यास के लेखक ट्रिब्यून सम्पादक श्री युक्त बाबू नगेन्द्र-नाथ गुप्त अपने पिता (सदराला साहब) के यहां आये थे। मेरे पिता जी उन से मिलने गये। उस के पीछे वेभी प्रेस में आये। और पुस्तकालय आदि देखने के बाद देर तक दोनों आदमियों में बात चीत हुई। उसी समय पिताजी ने उन से आज्ञा लेकर पं॰ प्रतापनारायण मिश्र जी से इस पुस्तक का अनुवाद करवाया। उन्हीं दिनों थोड़ा सा छपा भी, पर कई विघ्न होने से छपना रुक गया पूरा न होसका॥

ईश्वर के परमानुग्रह से अब फिर छपना आरंभ हुआ है। यदि उन्हीं की कृपा होगी तो इसे पूरा करके 'चन्द्रशेखर' और 'राजसिंह' (बड़ा) आदि बंकिम बाबू के कई उपन्यास जो शेष हैं इसीसाल छपवाकर ग्राहकों को भेट करूंगा॥

खड्गविलास प्रेस
बांकीपुर।

रामरणविजय सिंह।

अमर सिंह।

सिपाही-विद्रोहमूलक उपन्यास।

BENGAL LIBRARY
4. APL.1907
WRITERS' BUILDING

प्रथम परिच्छेद।

अनुमान आधीरात का समय है। पानी झमझमा के बरस गया है। सड़क के दोनों ओरवाले पीपल के पत्तों से जलबिन्दु टपक रहे हैं। रात उजियाली है पर आकाश में मेघ छाए हुए हैं, हां वायु के बेग से तितर बितर हो रहे हैं। कभी २ चंद्रमा पर से हट जाते हैं तभी रास्ता दिखाई पड़ता है। सड़क के दोनों अलंग नालियां हैं, उन में बरसा हुवा गदला और फेनीला जल वृक्षों से गिरे हुए सूखे पत्तों समेत बह रहा है। झींगुर और मेंड़कों का शब्द चारों ओर से आ रहा है। वृक्षों की छाया में और भी अधिक अंधेरा है। कभी २ कुछ काल के लिए पत्तों की राह से चांदनी दिखाई देती फिर बादलों के कारण छिप जाती है।

ऐसे सुनसान मार्ग में दो आरा के यात्री पैदल जा रहे हैं। आरा यहां से तीन कोस है, बीच में बस्ती का नाम नहीं है। पथिक दरिद्री हैं पर लुटेरों का डर इन्हें भी है क्योंकि भोजपुरिहा डकैत किसी को छोड़ते नहीं हैं। जिस से कुछ पाते नहीं उस के भी शिर अथवा पीठ पर लाठी का घाव किए बिना नहीं रहते। डर के मारे दोनों यात्री लंबे पांवों चले जा रहे हैं कुछ-बोलते चालते नहीं। इतने में अकस्मात् एक बिकट शब्द दूर से सुनाई दिया। फिर क्या था यात्रियों को काटो तो पसीना नहीं। 'तरे की सांसें तरेहि रह गईं उपरै ऊपर की रहि जायं' चुपचाप खड़े हो रहे। यह तो सुन रक्खा था कि लुटेरे चिल्लाके नहीं बोलते पर ऐसे बिजन मार्ग में डकैतों को छोड़ आवेगा कौन ? ऐसा भयानक शब्द और किस का हो सकता है ?

शब्द फिर सुनाई दिया और निकट होने से साफ़ २ समझ भी पड़ा कि कोई ऊंचे स्वर से कहता है—अलहम्दुलिल्लाह *—पर पथिक हिन्दू हैं इस

* सब स्तुति ईश्वर के लिए हैं।

से कुछ अर्थ न समझि। इस ध्वनि के साथ ही घोड़े का हिनहिनाना और कुत्तों का भौंकना भी सुनाई दिया।

इतने ही में बादल हट जाने से चन्द्रमा देवता भी दिखाई दिए। उन्हीं के प्रकाश में यात्रियों ने देखा कि एक पीपल के तले एक घोड़ा और कई एक कुत्ते खड़े हैं। घोड़े के मुंह में न लगाम है न और कोई बन्धन है न पास कोई मनुष्य ही दिखाई देता है।

यह देख के दोनों पथिक एक दूसरे की ओर ताकने लगे एक ने मृदु स्वर से कहा -- फूलशाह हैं—दूसरा समझ गया पर कुछ बोला नहीं।

दोनों यात्री अपनी राह चले गए और आरा जा पहुंचे।

द्वितीय परिच्छेद।

शाहाबाद जिला के मैजिस्ट्रेट आरा में रहते हैं। आरा साफ सुथरा छोटा नगर है। साहब का बंगला शहर के बाहर है उस के चारों ओर मैदान और पिछवाड़े सुन्दर फुलवारी है।

एक दिन फागुन में प्रातःकाल साहब बहादुर अपनी वाटिका में टहल रहे थे, सूर्य नारायण नहीं उदय हुए थे, वसंत ऋतु के आरंभ की स्वाभाविक शोभा छाई हुई थी, आमों के वृक्ष कोंपल और मंजरी से शोभायमान थे-उन पर कोकिला कलरव कर रही थीं, नाना रंग के फूल फूल रहे थे, सुहावनी पवन चल रही थी। कोकिला की कूक से साहब प्रसन्न हो रहे थे कि नहीं कुछ कह नहीं सकते। वह अपने पतलून की पाकटों में हाथ डाले इधर उधर फिर रहे थे मुंह में चुरट दबा हुआ था उस के धुएं की धार गुलाब चमेली आदि की सुगन्ध में मिल रही थी।

योंही मटरगश्त करते (घूमते फिरते) हुए साहब बहादुर बाग के छोर पर आए। बाग के बाहर चारों ओर बांस बंधे हैं और भीतर ताड़ तथा खजूर के पेड़ हैं, एक स्थल पर बेला की क्यारी हैं, उस में साहब ने देखा कोई फूल तोड़ रहा है।

देखते ही जान पड़ा कि वह बंगले का आदमी नहीं है, न माली है, न चपरासी है, न सईस है, न कोचवान है, न खानसामा है, न सरदार है, कोई

अनजान मनुष्य बाग में घुसा हुवा है यह देखकर साहब ने अचंभे में आके पूछा—टुम कौन है ?—

वह पुरुष ऐसे ध्यान से फूल तोड़ रहा था कि साहब की बात सुन के एक बार देख तो दिया पर कुछ बोला नहीं, अपनी धुन में तोड़ता ही रहा। तब तो साहब झपट कर उस के पास गए और बोले—टुम चोर है ?—

यह बात सुन कर वह व्यक्ति फूल तोड़ना छोड़ के साहब के सामने आ खड़ा हुवा।

साहब ने जो उसे अनजान मनुष्य समझा था सो कुछ निष्कारण न था। उस के शरीर में वस्त्रों के नाते केवल एक कम्बल का चुगा था जो कान्धे से ले कर पैरों तक लटक रहा था, दाढ़ी, मूछ और शिर के बाल लम्बे २ सारी देह पर छिटक रहे थे औ गले में नाना भांति के पुष्पों की माला तथा हाथों में गजरे पड़े हुए थे। शरीर हृष्टपुष्ट रंग श्याम पर मुख पर एक तेज दर्शित होता था, साहब ने देखा कि सब फूल हमारे ही उद्यान के हैं।

उस पुरुष ने बड़ी २ लाल २ आंखों से साहब की ओर देख कर कहा—बिस्मिल्लाह! क्या बोलता है—यह सुनना था कि क्रोध के मारे साहब का मुख तमतमा उठा, एक तो चोरी करना ऊपर से इस प्रकार बोलना! पर ऐसे तगड़े जवान पर हाथ चलाना बुद्धिमानी न थी क्योंकि साहब का शरीर छोटा और फफ्फस (मोटा) था विशेषत: उस पुरुष की लाल २ आंखों से जान पड़ता था कि वह पागल है। इस से साहब ने उस से कुछ न कह के बंगले की ओर मुंह फेर कर पुकारा—कोई हाय—माली दौड़ता हुवा आया, साहब ने कहा—चापरासी को बुलाओ—माली वहीं से चिल्लाया—चपरा आ आसी ईई—उत्तर में आवाज आई—खुदावन्द हाजीर—

चपरासी के आने पर और एक नया कुतूहल हुवा, वह था मुसलमान, इस से उस ने जैसे झुक कर साहब को सलाम किया वैसे ही बरंच कुछ अधिक नम्रता से उस जटाश्मश्रुपुष्पमालाधारी व्यक्ति को भी बंदगी की पर साहब ने यह बात न देख कर कहा—पाकरो ईस को! ये आडमी फूल चूरी किया—

चपरासी ने मुंह लटका के नम्र स्वर से उत्तर दिया—हुजूर यह फूलशाह हैं इन्हें सब लोग फूल देते हैं—साहब ने और भी आगबगूला होके कहा—पाकरो इस को! फूल चूरी किया—

चपरासी का मुंह सूख गया, बोला—खुदावन्द हम इन्हें हाथ नहीं लगा सकते—

साहब ने अत्यंत आश्चर्यित होके कहा—क्यों ?—

चपरासी—यह हमारे पीर हैं। इन पर जास्ती करेगा उस का सत्तिया नास जायगा—

साहब इस बात का अर्थ कुछ २ समझ गए, बोले—टूम आज से बरकास (बरखास्त)।

चपरासी कुछ बोला नहीं बंदगी करके चला गया।

साहब ने दूसरे चपरासी को बुलाया वह आया खानसामा, सईस सब आए पर महा पुरुष को पकड़ना किसी ने अंगीकार न किया।

फूलशाह मूर्ति की नाईं खड़े हुए अपने हाथ के फूलों की ओर देखते रहे।

अंत में साहब ने स्वयं उन का हाथ पकड़ लिया। इन के हाथवाले फूल गिर पड़े। इस घटना के साथ ही बाहर से कई कुत्ते दौड़ आए और साहब पर झपटे पर फूलशाह ने कटाक्ष द्वारा उन्हें निषेध कर दिया, इस से चले गए, जिधर वह सब गए उधर साहब ने देखा कि मैदान में एक घोड़ा छुटा चर रहा है।

साहब ने शाह साहब को पकड़ कर बंगले का रास्ता लिया। फूलशाह ने न कुछ बल प्रकाश किया न हाथ छुड़ाने की चेष्टा की, बालक की भांति चल दिए। यह देख के साहब कुछ प्रसन्न हुए और एक कमरे में जाकर कुरसी पर बैठ गए। महात्मा जी खड़े रहे।

तृतीय परिच्छेद।

साहब ने पूछा—टुम कौन है ?—

फूलशाह ने उत्तर दिया—तुम्हारा खिदमतगार—

साहब मनही मन और भी आनंदित हुए। उन्हें सेवकों का अभाव न था पर ऐसे विचित्र पुरुष का ऐसा कहना कौतुकजनकही था क्योंकि साहब डरते थे कि कहीं यह पागल बखेड़ा न करे। साहब ने फिर कहा—टुमारा नाम क्या है ?

फूल—सुन तो चुके हो हो।

साहब—टुम फूल चूरी किया ?

फूलशाह ने यह सुन कर अपने हाथों की ओर देखा तो फूल नदारद। इस से एक सांस लेके कहा—हां हम ने फूल लिए हैं।

साहब—नाईं! टुम फूल चूरी किया। टुम को कोई फूल डिया नईं। टुम चूरी से ले लिया। टुम जानटा है इस का क्या सज़ा होगा ?

नहीं।

टुम को जेल में जाने होगा।

वह कहां है ?

मैजिस्ट्रेट साहब इन्हें पागल समझ कर हंसी तो करही रहे थे, बोले—हमारा डपटर (दफ़तर) का पासवाला जेल में जाने होगा—

फूलशाह चुप हो रहे कुछ काल के उपरान्त मुसकिरा के कहने लगे—बड़ा जेहलखाना छोड़कर छोटे में जायंगे ?—यह कह कर चारों ओर देखने लगे।

साहब ने उदास हो कर कहा—टूम हामारा बांगला को बड़ा जेल बोलटा है ?

फूल—नहीं। हम इस दुनियां को बड़ा जेहलखाना कहते हैं।

साहब—अस्फुट स्वर से 'ओ:' कह कर चुप हो गए, साहब को चुप होते देख के फूलशाह ने पूछा—यह बंगला तुम्हारा ही है ?

साहब को इस प्रश्न पर कौतुकबोध हुआ, बोले—नैं। हाम केराया लिया।

फूल—जब तुम यहां न रहते थे तब फूल फूलते थे या नहीं ?

बोलने साकटा नईं। क्यों ?

फूल तोड़ने पर हमें चोर बनाते हो इसी से पूछते हैं—फूल क्या तुम्हारे हैं ?

आउर किस का है ?

खुदावन्दे करीम के। हम उस के फूल उसी की खिदमत में लगाते हैं।

साहब ने हंसकर कहा—टूम पागल हाय—

फूलशाह ने भी हंसकर उत्तर दिया—सच कहते हो—

साहब—बस, बौट बाट करने नईं मांगटा। हम कोर्ट में जा के टुमारा मोकडमा करेगा, टुम यहीं ठैरो।

फूलशाह—अब तो ठहरने को जो नहीं चाहता । अब जायंगे—

साहब ने हंसकर कहा—टूम बोला कि 'हाम खिडमटगार है' फिर खिडमटगार हो कर टैरेगा क्यों नहीं ?

फूल—मैं खुदाए आलम के बन्दों का बन्दा हूं और कुल इंसान उस के बन्दे हैं फिर मैं हर शख्स का बन्दा क्यों न हूंगा ?

साहब ने खड़े होकर कहा—कुच डिन जेल में जाने से टुमारा अकल टीक हो जायगा ।

फूल—हम आजाद हैं। जेहल में नहीं जाते ।

साहब—जल्डी जायगा—कह कर कमरे का दरवाजा बन्द करके चले गए । फूलशाह भीतर ही रह गए ।

साहब थोड़ी देर में ताली कुंजी लेकर फिर आए और देखा कि फूलशाह ज्यों के त्यों खड़े हैं । तब साहब ने ताला बन्द किया और चाभी अपने पास रक्खी जिस में कोई नौकरचाकर खोल न दे ।

जिस कमरे में आफिस था उस में जाकर साहब कागज़ पत्र देखने लगे वहां के जंगले से बाहर वाला मैदान दिखाई देता था ।

कुछ काल के उपरांत किसी ने उच्च स्वर से कहा—अलहम्दुलिल्लाह—मैजिस्ट्रेट साहब ने उधर देखा तो फूलशाह मैदान में लम्बे २ डेग भरते चले जाते हैं और पीछे २ एक घोड़ा तथा कई कुत्ते जा रहे हैं ।

जिस कमरे में फूलशाह को बन्द कर गए थे उस में जाकर देखा ताला लगा हुआ है । उसे खोल कर देखते हैं तो भीतर कोई नहीं । साहब जानते थे कि ताली तो पाकेट ही में है इस से सोचे किसी ने खोल दिया होगा ।

खोज बहुत कराया पर फूलशाह सुगंधि की नाईं किसी के हाथ न आये । वा कौन जाने लोगों ने पकड़ा ही नहीं । इस से साहब अपनी झुंझलाहट सेवकों पर उतारी ।

चतुर्थ परिच्छेद ।

कुंवर सिंह को लोग बाबू कुंवर सिंह कहते थे 'बाबू' की पदवी उन दिनों ऐसी सस्ती न थी जैसी आज काल होगई है कि उससे कपड़ों से कोइरी चमार तक बाबू बन जाते हैं । कुंवर सिंह शाहाबाद जिला के प्रधान

जमींदार थे। उन की बराबरी का कोई न था, उन की प्रतिष्ठा डुमरावं के महाराज से भी अधिक थी। आरा के पश्चिम * जगदीशपुर नामक ग्राम में वे रहते थे। वहीं उन के पुरखों का घर था, ऊंचे २ महल किला देवमंदिर सब वहीं थे। एक बैठका आरा में भी था और उस के निकट स्वतंत्र महल में अंतःपुर था।

आरा के जिले में राजपुत्रों की बहुत बस्ती है। यह भी बड़े उच्च कुल के राजपुत्र थे। सब राजपूत इन का आदर करते थे, डर से कोई शिर न उठा सकता था।

कुंवर सिंह बहुधा आरा ही में रहते थे। वहां का बैठकखाना बहुत बड़ा न था उस के चारों ओर बाटिका थी उस में इन्हों ने एक धूप का वृक्ष लगाया था और सब से कह दिया था कि 'हमारी चिता में इसी की लकड़ी लगाना' मृत्यु भी निकट आगई थी, अवस्था अस्सी वर्ष की थी।

बाटिका का आम बहुत मीठा होता था। उस के वृक्षों को यह कभी २ अपने हाथ दूध से सींचते थे। मंदिर के दो ओर फुलवारी थी उस में छोटी २ पक्की नालियां थीं जिन में रंग रंग की मछली रहती थीं उन्हें यह नित्य प्रातःकाल अपने हाथ से चारा देते थे सूर्य निकलते ही कुंवर सिंह फुलवारी में आते थे और मछलियां उन की छाया जल में देखते ही नियत स्थान पर एकत्रित हो जाती थीं उन्हें यह घास पर बैठ कर भोजन कराते थे और इस काम से बड़े प्रसन्न होते थे।

खड़े होने पर पीछे से कोई देखता था तो इन्हें युवक ही समझता था। हां सामने से उजली दाढ़ी मूछ के कारण वृद्ध जान पड़ते थे शरीर नाटा और छरहीला था पर बल और फुरतीलापन अब तक बना हुवा था। नेत्र चंचल और तीव्र थे। दृष्टि कुछ भी न घटी थी इस का कारण कदाचित् यह था कि पढ़ने लिखने में उन का ध्यान कभी न रहता था। भेष वह सदा साधारण राजपूतों का सा रखते थे। उजली पगड़ी, अंगरखा, धोती कभी २ पाजामा और चपकन तथा दिल्लीवाल जूता पहिनते थे।

इतनी सम्पत्ति सुयश और प्रताप होने पर भी मन उन का सदा दुःखी ही रहता था। एक तो रुपये की चिन्ता लगी रहती थी इतनी बड़ी जमींदारी थी तौभी ऋण बना ही रहता-था क्योंकि हाथ था खरचालू, जौवन की उमंग में बहुत सा धन आमोद प्रमोद में उड़ गया था उन्हीं दिनों का देना अभीतक

* कुछ दक्खिन झुकता हुआ है। प्रकाशक।

निपटा नहीं था ऊपर से प्रजागण जब कभी अनावृष्टि आदि का दुःख रोदेते थे तब वह अपने लहने में से कुछ न कुछ छोड़ दिया करते थे इस से भी बहुत सी हानि होती थी। सेवकों के किसी काम का कुछ लेखा जोखा था ही नहीं। कोई कर्मचारी कुछ गोलमाल करता था और उस का समाचार कोई देता था तो कह देते थे "हमारा रुपया न लें तो किस के घर चोरी करने जायं?" ऋण बहुत था पर अग्रवाल महाजन इत्यादि डरते इतना थे कि नालिश करने का साहस न कर सकते थे। इसी से कुंवर सिंह भी बेखटके रहते थे और आवश्यकता के समय और भी उधार ले लिया करते थे। मन में जानते थे कि कभी न कभी चुकाही देंगे जीते जी न चुका तो मरने पर अवश्य ही निवट जायगी फिर क्या सोच है। पर लहनदार यह विचार कर घबरा रहे थे कि इन की मृत्यु के उपरांत रुपये मिलने का कोई निश्चय नहीं है। रुपया भी थोड़ा नहीं है। मूल्य और व्याज मिला के सत्रह अठारह लाख के लग भग है इस से सभों ने जी कड़ा कर के नालिश कर ही दी और डिगरी भी हो गई।

तब कुंवर सिंह उपाय न देख कर कलेक्टर साहब के पास गए। वह इन का बड़ा सन्मान करते थे और जमींदारी का सारा वृत्तांत जानते थे इस से पटना के कमिश्नर को इस आशय का पत्र लिखा कि—"कुंवर सिंह इस जिले के प्रधान पुरुष हैं उन पर डिक्री जारी होने से सारी जमींदारी मट्टी मोल बिक जायगी। आप बोर्ड आफ रेविन्यू को लिखिए कि वे अपनी जमींदारी का सब प्रबंध हम लोगों को सौंपना चाहते हैं। यदि उन की जमींदारी कुछ दिन भी हमलोगों के हाथ रहेगी तो कर्ज़ा भी भुगत जायगा और जमींदारी भी बनी रहेगी।"

इस पर कमिश्नर साहिब ने बोर्ड को लिखा। वहां से उत्तर आया कि "जमींदारी का भार गवर्नमेण्ट को लेना स्वीकृत है पर ऋण का परिशोध कुंवर सिंह ही को करना होगा, वह कहीं से बीस लाख रुपया ले लें फिर जमींदारी की आमदनी से चुका दिया जायगा।" कुंवर सिंह ने यह प्रस्ताव स्वीकार किया। पर इतना रुपया शीघ्रता के साथ कहां से आता? महाजनों के तो ऋणी ही थे इस से नए व्यौहार करने पड़े इस में विलंब हो गया किन्तु थोड़ा २ रुपया आभी चला।

इसी अवसर में बोर्डऔफरेविन्यू ने कमिश्नर साहब को लिखा कि "यदि

कुंवर सिंह एक मास में रुपया न इकट्ठा कर लेंगे तो सरकार उन की जमींदारी का प्रबंध छोड़ देगी" इस पर कलेक्टर साहब ने कुंवर सिंह का पक्ष लेकर बहुत लिखा पढ़ी की पर बोर्ड ने कुछ न सुना।

कुंवर सिंह के माथे मानों बज्र गिरा। उन ने सोचा कि क्या बुढ़ापे में रास्ते का भिखार बनना पड़ेगा। अंगरेजों का वे बड़ा विश्वास करते थे पर इस घटना से वह घट गया। उन्हें जान पड़ा कि अब यह लोग हमारा सर्वनाश करने की चाल चल रहे हैं।

कुंवर सिंह को एक दुःख और भी था। उन के संतति न थी, छोटे भाई अमर सिंह ही को पुत्र की भांति पाला था, इन्हीं को अपना उत्तराधिकारी समझते थे, इससे उन्हें बड़े यत्न से क्षत्रियधर्म की शिक्षा दी थी। अश्वारोहण शस्त्र-संचालनादि में बहुत दक्ष कर दिया था। ब्याह भी एक परम सुन्दरी कन्या से कर दिया था। इस समय अमर सिंह को अवस्था तीस वर्ष की थी पर थे वह एक प्रकार के गृहत्यागी। राजपूतों का सा भेष न रख कर कोपीन और गेरुये वस्त्र पहिनते थे। शिर मुडाये भस्म लगाये संन्यासियों के साथ फिरा करते थे और गांजा भांग भी पीते थे, कभी २ घर आते थे, पर स्त्री से कुछ न बोलते चालते थे। कुंवर सिंह ने दो एक बार समझाया तो बहुत दिन के लिए न जाने कहां चल दिए, जब लौट कर आए तो कुंवर सिंह ने डर के मारे कुछ न कहा और इन्हों ने भी कहला भेजा कि कुछ कहेंगे तो हम छोड़ के चले जायंगे फिर इस देश में कभी न आवेंगे। फिर कौन बोलता। अपनी इच्छा से कभी २ घर आजाते थे पर रात को नहीं रहते थे।

कुंवर सिंह इन्हीं दो चिंताओं में बिकल रहते थे कि एकाएकी एक नवीन आशा उन के हृदय में उदय हुई।

पंचम परिच्छेद।

सन् १८५७—५८ वाले विद्रोह को कोई २ सिपाहीयुद्ध कहते हैं पर वह वस्तुतः युद्ध नहीं था वह विद्रोह मात्र था।

अङ्गरेज यहां के सिपाहियों को वश में रखना नहीं जानते थे, सिपाहियों के हृदय में द्वेषभाव अग्नि की भांति छिपा हुआ सुलग रहा था, वही अवकाश पाकर भड़क उठा था। क्योंकि युद्ध के अतिरिक्त सिपाहियों को और कोई शिक्षा न दी जाती थी, इस से वह समझते थे कि हम लोग

जों चाहें कर सकते हैं। जिस रीति से अन्य प्रजा का शासन किया जाता है उस से उन का शासन भी न होता और कोई राजमार्ग में स्त्रियों को नहीं छेड़ सकता पर उन्हें कोई न रोकता। बात की बात में और कोई दंगा नहीं कर सकता पर सिपाही को कौन रोकता है। उन के अफसर लोग भी किसी अपराध पर ध्यान न देते बरंच कहते हैं कि कठोर शासन से यह लोग दबैल हो जायंगे तो लड़ेंगे क्या! जैसे और अपराधी सहज में पकड़ जाते हैं वैसे सिपाहियों को कोई न पकड़ता। यदि कोई सिपाही कहीं से दंगा कर के आवे तो उस का खोज लगाना कठिन नहीं है पर जिनने सजी हुई सेना देखी है वे जानते हैं कि एक वेषवाले हजार सिपाही में एक को पहचान लेना सहज नहीं है। प्रजा पर मनमानी करते ही रहते हैं। सुविधा पाकर अङ्गरेजों पर भी टूट पड़े। उन के विद्रोह का मूल स्वदेशानुराग अथवा और कोई सदुद्देश्य न था। उन्होंने युद्धधर्म का पालन भी न किया था, केवल पिशाचों की भांति वृद्ध बालक और युवतियों की हत्या की थी। यही नहीं कि अङ्गरेजों ही पर हाथ साफ किया हो, देशियों को भी कब छोड़ा था। इसे कौन युद्ध कहसकता है?

देश अंगरेजों का विरोधी नहीं था। प्रतापी राजगण उन के विपक्षी नहीं थे। सर्वसाधारण अंगरेजों ही के सहायक थे। सिपाहियों को सहायता कोई न देता था। भय से कातर अंगरेज-रमणियों को लोग आश्रय देते थे। अपने प्राण का मोह न कर के अंगरेजों की रक्षा करते थे। केवल थोड़े से लोग भय और लालच से सिपाहियों के साथ हो गए थे पर करोड़ों भारतवासी अंगरेजों ही की जय मनाते थे।

जो युद्ध करते हैं, वे युद्ध का कारण भी जानते हैं। पर सिपाही लड़ने का कारण न जानते थे केवल यह समझते थे कि अंगरेज मार डाले जायंगे तो दिल्लीपति का राज्य फिर हो जायगा। यह ज्ञान उन्हें न था कि मुगलों का सौभाग्य सूर्य अब अस्त हो गया है। उन को यह मालूम न था कि बादशाह के शाहजादे लोग पशु की भांति निर्दई हडसन के हाथ मारे जायंगे।

विद्रोहियों का कोई सिरधरा भी न था। दो चार छोटे २ लोगों ने कुछ युद्धकौशल दिखलाया था किंतु सेना का संचालन करने योग्य प्रधान दलपति कौन था? सिपाही पागलों की भांति मारे २ फिरते थे और सहायहीन बालकों तथा अबलाओं को मार मूर डालते थे, उन्हीं के रक्त से भारत

की पवित्र धरती कलंकित हो गई और ब्रिटिश वंश का शोणितधौत भाग्य भास्कर प्रकाशित हो गया।

युद्ध अंगरेजों और सिपाहियों में हुआ था। सब सिपाही भी विपक्ष में न थे। सिक्ख जाति अंगरेजों ही के पक्ष में थी। बरंच उसी ने विद्रोह को शीघ्र शांत कर दिया था। ऐसे युद्ध को विद्रोह के अतिरिक्त क्या कह सकते हैं।

षष्ठ परिच्छेद।

अंगरेज कुछ जानते ही न थे, भारत के सिंहासन पर बैठे निश्चिंत राज्य कर रहे थे। विलायत से आने के पहिले लार्ड कैनिंग ने अपनी वक्तृता में एक भविष्यद्वाणी कही थी पर उस समय उस का अर्थ किसी ने न समझा था, वक्ता ने स्वयं न समझा था। दो एक अंगरेज विपत्ति की शंका करते थे किन्तु उन के कथन पर कोई ध्यान न देता था। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जिन का राजत्व फैला हुवा था वे छिपी हुई भविष्यद्विपत्ति को क्या भटकते ?

अंगरेजों के शासन में यह बड़ा भारी दोष है कि वे लोग न इस देश-वालों के मन का भाव जानते हैं न जानने का यत्न करते हैं जिस दिन विद्रोह का आरंभ हुवा उस के एक दिन पहिले भी इस विषय का उन्हें ज्ञान न था और अब भी नहीं है। इतने बड़े देश में कहां क्या होता है कहां एक जीव मरा है, कहां किस के घर संतान का जन्म हुवा है। यह सब बातें जानते हैं पर इतने करोड़ मनुष्यों का मन कैसा है यह नहीं जानते।

छिपे २ षड्यंत्र हो रहे थे। छिपे २ सिपाही लोग एक सेना का सम्वाद दूसरी में भेज रहे थे। कोई २ लोग यात्रा के मिष से जहां तहां प्रचार कर रहे थे कि अब अंगरेजों के दिन बीत आए हैं, दिल्लीश्वर का राज्य फिर होनेवाला है। ऐसे लोग चोर से कहते थे 'चोरी करो' साह से कहते थे 'जागो' सिपाहियों को समझाते थे कि अंगरेज सब को एक जाति में करना चाहते हैं। इस से इन का संहार कर के बादशाह के सहायक बनो तो बड़ा सुख पाओगे। भूखे टूटे जमींदारों को समझाते थे कि दिल्लीपति की सहायता दो तो बहुत सी भूमि और सनद पाओगे, अंगरेजों के भरोसे न रहो, इन की राजलक्ष्मी

अब अंतर्धान हुवा चाहती है। किसी को और कोई लालच दिखा के राह पर लाने का उपाय करते थे।

जो लोग ज्वालामुखी पर्वत के पास रहते हैं वे भी कभी२ आग भड़कने के लक्षण नहीं जान सकते वैसी ही दशा अंगरेजों की थी जैसे पहाड़ के ठौर २ पर छिपी हुई अग्नि सुलगा करती है, वैसे ही देश में स्थान २ पर बैरभाव धधक रहा था पर अंगरेज बेसुध खर्राटे भर रहे थे। जब विद्रोहा-नल चारो ओर संदिप्त हो उठा तब इन की आंखें खुलीं।

चुपचाप शीघ्रता के साथ विरोध का बीज देश के अधिकांश में बिथर गया पर अंगरेजों के भाग्य से उस का सींचनेवाला कोई न मिला। इसी से उस का अंकुर उठते ही मुरझा गया नहीं तो अंगरेजों के पक्ष में अवश्य विषमय फल उपज आता।

बिहार प्रदेश में गुप्त मंत्रणा का प्रधान स्थान पटना था। वहीं दिल्ली, लखनऊ तथा अन्यान्य स्थान के समाचार आया जाया करते थे। कुछ दिन पहिले वह मुसलमानों की राजधानी थी इस से उन्हें फिर आशा थी कि उसे अपना राजनगर बनावेंगे।

पटना से आरा दूर नहीं है। वहां के मुसलमान भली भांति जानते थे कि कुंवर सिंह को मिला लेने में बड़ा फायदा है पर वह लोग इन्हें अंगरेजों का परममित्र समझते थे इस से अभी तक कुछ कह न सकते थे। हां इस बात का टोह लगाए रहते थे कि कुंवर सिंह कहां हैं, क्या कर रहे हैं, उन का मिजाज कैसा है, तदनुसार यह पता पाकर कि आजकल उन का जी अंगरेजों से खट्टा हो गया है, एक गुप्त दूत उन के पास आया। और दिल्लीपति का पर्वाना दिखाया जिस में लिखा था कि अगर बाबू कुंवर सिंह साहब हुजूर की तरफ हो जायं तो राजा का खिताब और शाहाबाद के ज़िले की हुकूमत हासिल करेंगे।

परवाने का आशय जान कर कुंवर सिंह ने हंस के कहा—"मौलवी साहब! परवाना रखिए, अब हम बूढ़े हुए, हमें भगवान का भजन करना चाहिये, लड़ने भिड़ने के दिन नहीं रहे।" मेरठ में विद्रोह फैल चुका था पर कुंवर सिंह ने कुछ चिन्ता न की थी क्योंकि अंगरेजों के बल का उन्हें पूरा विश्वास था।

मौलवी साहब कुंवर सिंह का स्वभाव जानते थे इस से बोले—"बाबू साहब

जिस रोज़ आप बुड्ढे होंगे उस रोज़ राजपूतों की कौमीबुज़ुर्गी को जौफ़ आ जायगा (गौरव घट जायगा)। इनकार न फ़र्माइए आप की मदद से राजपूतों और मुसलमानों की ताक़त दूनी बढ़ेगी।"

यह सुनना था कि कुंवर सिंह की आंखें लाल हो गईं कुछ काल मौन रह कर बोले—"मौलवी साहब! क्या कहें अंगरेजों ने तो हमें कंगाल बना देने का उपाय किया है! हमें बादशाह के परवाने का लोभ नहीं है जो अंगरेज हार गए तो राज्य हमारा ही है और उस की रक्षा भी करही लेंगे फिर बादशाही सनद आप ही मिल रहेगी और जो हम हार गए तो भी क्या हानि है, हमारे बैठा ही कौन है इस से एकबार अपनी जातिवालों के प्रसन्न करने के लिये लड़ना ही हम भी उचित समझते हैं फिर जो होगा देखा जायगा—जाइए हमें आप की बात मंजूर है।"

मौलवी साहब यह सुन कर—पुलक प्रफुल्लित पूरित गाता—हो के धन्यवाद देते हुए बिदा हुए।

सप्तम परिच्छेद।

बाबू कुंवर सिंह की बैठक से कुछ ही दूर मैदान में एक मठ था। वहां बहुत रमणीय और एकांत स्थान था, कुछ दिन से अमर सिंह को उस ओर आवा जाही हुआ करती थी। बहुधा रात को वहीं रहते थे। किसी २ दिन और कहीं भी चले जाते थे।

मठ में अनेक भांति के लोग आया जाया करते थे। भिक्षुक, भंड, ब्रह्मचारी, परमहंस सभी रातको वहां टिकते थे। भोर होते अपना२ रास्ता लेते थे। संध्या के समय नित्य ही उस स्थान पर मेला सा हो जाता था। कहीं "दँदकैं चिलमैं रे गांजन की मानो बनमां लागि दवारि" का आनंद आता था। कहीं "कूंडी सोटे को बजा और देख टुक क़ुदरत के खेल। छोड़ सब कामों को गाफ़िल भंग पी और दंड पेल॥" का कौतुक देखा जाता था। उस समय अमर सिंह बहुधा वहीं होते थे और नए २ अभ्यागतों से नाना भांति की चर्चा किया करते थे।

एक दिन रात्रि को मठ में सो रहे थे कि आधी रात के समय नींद खुल गई, गांजा भांग इतनी न खाते थे कि "घर के जानें मर गए आप नशे के बीच" का लेखा हो इस कारण सोते भी बहुत न थे वरंच रातभर जागने का भी

अभ्यास रखते थे, तदनुसार निद्राभंग होने पर मठ के बाहर आए और देखा कि रात अंधेरी है पर इन्हें क्या डर था टहलते हुए उस मार्ग तक आए जो नगर के बाहर को ओर को गया था और थोड़ो हो दूर पर आम्रवृक्षों का समूह मिलता था। वहां से लौट कर मठ तक आए और नगर को ओर चले। फिर खड़े हो कर सोचे कि कहां जाते हैं। यह तो घर का मार्ग है वहां रात को क्या करेंगे। इस से तो यही उत्तम है कि रातभर बाग में घूमें भोर को फिर मठ में चले आवेंगे।

यह विचार कर राजपथ पर आए। इतने हो में किसी ने पीछे से इन के कांधे पर हाथ रख कर ठहरने का संकेत किया।

अमर सिंह भेष संन्यासियों का सा रखते हैं पर हैं तो राजपूत हो न। इन्हें ऐसी धृष्टता क्यों सुहाने लगो ? इस से फिर कर देखा और स्कन्धस्पर्श करनेवाले का हाथ पकड़ कर क्षत्रियों को नाईं क्रुद्ध स्वर से कहा कौन है वे ?

आगन्तुक का हाथ इन के हाथ हो में रहा उस ने मधुर गंभीर शब्द से उत्तर दिया—मैं तुम्हारा गुलाम हूं इसो से गुस्ताखो को है (अंग स्पर्श किया)—

बोली से अमर सिंह ने पहिचाना कि फूलशाह हैं जो नक्षत्रों के धीमे प्रकाश में भली भांति चीन्ह नहीं पड़ते। चुप चाप खड़े हुए बड़े भयानक जान पड़ते हैं। पहिचानते हो अमर सिंह उन के पैरों पर गिर पड़े। फूलशाह ने बीच में हो हाथ पकड़ कर उठा लिया और कहा—देखो अमर सिंह ऐसा करने से मैं परेशान होता हूं। मैं मुसलमान हूं किसी से सिजदा कराना मुझे अच्छा नहीं लगता।

अमर सिंह ने बड़े नम्र भाव से कहा—आप महात्मा हैं आप को दंडवत तो ब्राह्मणों तक को करनो चाहिए मैं क्या हूं ! मुझ से बिना जाने बड़ो भूल हुई।

फूलशाह मुसकिरा कर बोले कोई भूल नहीं हुई पर संन्यासी को गुस्सा न चाहिए वह तुम में अभी तक बना हुवा है।

अमर सिंह ने शिर झुका लिया।

फूलशाह फिर बोले तुम से कुछ कहना है इसी लिए आया हूं लेकिन यहां शायद कोई आ जाय इस से मेरे साथ चलो तो कहूं।

अमर सिंह चल दिए। फूलशाह सड़क छोड़ कर कुछ दूर जा के एक वट वृक्ष के नोचे ठहर गए अमर सिंह भी उन के सामने खड़े हो रहे।

फूलशाह कहने लगे—दोस्त ! जिस दिन से तुम ने दुनिया से मुंह फेरा है उसी दिन से मैं तुम्हारे हर काम पर निगाह रखता हूं। हम लोग बहुत थोड़े हैं क्योंकि दुनियादार लोग हमारे साथी बनाना नहीं पसंद करते इस से हमें चाहिए कि आपसवालों की देख भाल करते रहें इसी से मैं तुम्हारा ध्यान रखता हूं अगर इस का सुबूत चाहते हो तो दे सकता हूं।

अमर—अरे राम २ ! आप की बातों का सुबूत क्या ? कौन नहीं जानता कि आप सर्वदर्शी हैं।

फूल—इस वक्त जो कुछ मैं कहता हूं दिल लगा के सुनो। तुम्हारी फ़क़ीरी अभी दुरुस्त नहीं है क्योंकि तुम राजपूत हो पहिले तुम्हें अपना धरम निभाना चाहिये और उस का ज़माना आगया है।

अमर सिंह मानों सोते से चौंकपड़े और कुछ देर फूल शाह की ओर चुपचाप ताकते रहने के उपरांत बोले—आप की आज्ञा मेरी समझ में नहीं आई।

फूल—देखो चारों तरफ़ झगड़े की आग सुलग रही है और थोड़ी ही दिन में भड़कना चाहती है, उस में तुम्हारे भाई साहब भी अङ्गरेज़ों की मुख़ालिफ़त करनेवाले हैं।

अमर—आपने उड़ती ख़बर सुनी है नहीं तो दादा साहब तो अङ्गरेज़ों के बड़े भारी मित्र हैं फिर यह कैसे हो सकता है ?

फूल—यह बात तुम्हें बाबू साहब ही से मालूम होजायगी, ऐसे वक्त में तुम्हें उन की मदद करनी लाज़िम है।

अमर सिंह को अभी तक इस का ज्ञान न था पर इस समय उन की आंखें खुल सी गईं। युद्ध होने का नाम सुन कर मन आनंदित हो उठा, कुछ काल तक हाथ जोड़े खड़े रहे फिर जिज्ञासा की—तो क्या मुझे फिर गृहस्थ बनना पड़ेगा ?—

फूलशाह ने उत्तर दिया बेशक ! लेकिन इस की पर्वाह न करो। तुम्हारा दिल कभी दुनिया की लज्जतों में नहीं फंसेगा ! पर जो कुछ क़िस-मत का है वह बग़ैर मिले क्यों कर रह सकता है।

अमर सिंह को संन्यास के सुखों का स्मरण आगया इस से लम्बी सांस लेकर बोले—हाय ! क्या भगवान का भजन अब न करने पाऊंगा ! इतने दिन क्या वृथा गांजा ही भांग खाने ही में गंवा दिए !

फूलशाह ने अमर सिंह के बाएं कंधे पर दहिना हाथ रख कर अति कोमल स्वर से कहा—प्यारे! अब तुम्हें नशा न खाना पड़ेगा, देखो दुनिया में कोई अपनी मर्जी पूरी नहीं कर सकता। याद रक्खो अपना धरम निभाना बड़ी अच्छी बात है। खुदा इस में जुरूर खुश होगा। उसको याद तुम्हें हर हालत में रह सकती है पर धरम का निभाना भी जुरूरी अम्र है। उस ने जो काम जिस के लिए मुकर्रर कर दिया है वह उसे जुरूर करना चाहिए—

अमर सिंह चुप हो रहे। फूलशाह फिर कहने लगे—तुम्हें एक दफा बसुलिया बाबा से भी मिलना चाहिए।

अमर सिंह ने उदास हो के कहा वह तो कभी दर्शन ही नहीं देते। मैं जै बेर गया निराश ही हो के लौटा।

फूल—अब की बार मिलेंगे। कल जाना।

अमर—कहां जाऊं?

फूल—उन्हीं के झोपड़े में।

इस के उपरांत महापुरुष ने आज्ञा की—अच्छा अब घर जाव। तुम खुद जाते थे पर राह में सोचने लगे थे कि क्यों जायं कुछ काम तो है ही नहीं। इस वक्त तुम्हें काम भी मालूम हो गया और मौका भी आ पहुंचा है बल्कि इसी से दिल घर जाने पर रुजू हुवा था। इस से जाव, भाई की मदद दो, राजपूतों का धरम निभावो खुदा तुम्हें फ़तेह दे।

अमर सिंह ने पांव छूना चाहा पर फूलशाह ने बालक की भांति उठा कर गोद में ले लिया और अंधकार में अन्तर्धान हो गए। अमर सिंह चिंता में मग्न धीरे २ घर की ओर पधारे।

अष्टम परिच्छेद।

दारोगा रामशरण बड़े हजरतों में थे। उन के बाप अदालत में पियादे का काम करते थे। जज साहब का अरदली बहुत हलका आदमी नहीं होता। रामशरण ने मियां साहब के यहां गुलिस्तां बोस्तां पढ़ी थीं। फिर स्कूल में भरती हुए थे। मकतब में हिल २ कर गा२ के पढ़ने का उन्हें अभ्यास हो गया था, वही स्कूल में भी बना रहा, इस से मास्टर लोग सदा धिक्कारा

करते थे इस रीति से वहां दो चार बरस पढ़ा, पर विद्या इतनी ही आई कि न आने के बराबर। बाप ने समझा कि अब तो लड़का अंगरेजी फारसी पढ़ के पत्थर हो गया। इस से जज साहब के पास हाजिर किया। उन्हों ने दो चार प्रश्न कर के जान लिया कि इतने हैं इस से बाप से पूछा—वेल क्या मागटा है ?

अरदली जज साहब का मुंहलगा था, बोला—हजूर इस ने फारसी पढ़ी है और बहुत सा खर्च कर के मैंने अंगरेजी भी पढ़ाई है। हजूर इसे अपने यहां मोहर्रिर कर लें फिर धीरे २ पेसकार या सरिस्तेदार हो जायगा।

जज साहब ने कहा—नें! ऐसा होने से लोग बुराई करेगा सरकार नाराज होगा। इसे और कहीं काम सीखने होगा।

अरदली—हजूर! सरकार तो आप ही हैं, आप मा बाप हैं, हजूर परवरी करेंगे तो कोई क्या कह सकता है। खुदा हजूर को लाट करे।

जज—ऐसा नईं होने सेकटा। अच्चा हम मैजिस्ट्रेट साहब को लिक्खेगा वह कोई टीक काम डेगा।

अरदली का मुंह लटक गया क्योंकि उसे बड़ी साध थी कि बच्चा जज साहब के सरिस्तेदार होंगे पर यह साध एक रीति से कुछ दिन में पूरी सी भी हो गई, मैजिस्ट्रेट साहब ने जज साहब का पत्र पा कर रामशरण को हेड कान्सटेबिल कर दिया इस से बुढ़ऊ को कुछ सन्तोष हो गया।

उस समय पुलिस के कर्मचारी प्रायः लिखे पढ़े न होते थे पर रामशरण तो उरदू लिख लेते थे और अंगरेजी में भी और न सही तो भी अपना नाम लिखना जानते ही थे इस से बहुत शीघ्र उन की तरक्की हो गई। देखते ही देखते दारोगा हो गए। इस के पहिले जज साहब विलायत चले गए थे और दारोगा साहब के पिता ने लड़के को उच्च पद पर देख के आनन्दपूर्वक परलोकवास किया।

दारोगा जी ने खूब कमाया शहर में बड़ा सा घर बनाया गाड़ी, घोड़ा, नौकर, चाकर सभी ठाठ कर लिए। हाकिमों में भी अच्छी पूंछ पैठार थी। बड़े दिन को जैसी डाली यह भेजते थे कोई न भेजता था। इस के सिवा और भी नज़रें इन के यहां से जाती रहती थीं। पुलिस की रिपोर्ट लिखने में यह बड़े पक्के थे जिला मैजिस्ट्रेट हमेशा सालाना रिपोर्ट में इन की होशियारी की तारीफ़ लिखते थे।

पदमर्यादा के साथ २ रामशरण की वंशमर्यादा भी बढ़ती जाती थी। पिता अरदली का काम करते थे यह कहते इन्हें लज्जा आती थी। कोई जाति पूछता तो अयोध्यावासी कायस्थ बतलाते थे। आरा के लोग प्रायः यह न जानते थे कि इस श्रेणी के भी कायस्थ होते हैं वा नहीं। पर यह सब को विदित था कि रामशरण का बाप रवानी कहार था और पालकी उठाना उस का जातीय व्यवहार था। इन का नाम भी पहिले रामशरण राम था पर अब लाला रामशरणलाल हो गया।

इतने बड़े दारोगा के यहां कुछ धूमधाम न हो तो भी अच्छा नहीं लगता। इस से रात को बहुधा नाच मुजरा हुवा करता था। मिर्जापुर बनारस आदि से कोई प्रसिद्ध वेश्या आती तो पहिले उस का आदर इन्हीं के घर होता था। उस अवसर पर साहब लोग भी न्योते जाते थे। कभी २ कोई २ साहब ब्रांडी के झोंक में बीबी साहब के नैन बाण से ऐसे व्यथित हो जाते थे कि आपे ही में न रहते थे।

वारांगनाओं ही के हाव भाव नृत्य गीतादि से दारोगा साहब की तृप्ति न होती थी बहुत सी कुलकामिनी भी गुप्त रूप से उन का संतोष साधन करती रहती थीं। उन के गोइन्दे जैसे पुलिस में थे वैसे ही इस लीला के लिए दूती और दूत भी थे। तथा धन के लोभ से बहुतेरी कुलांगना कुल की तिलांजली दे के रामशरण की शय्या पर पदार्पण करने को आ जाया करती थीं। जैसे गरीबों का गला काटने में रामशरण को संकोच न था वैसे ही भले मानसों की बहू बेटियों का धर्म लेने में भी ग्लानि न होती थी।

पर इस ऐयाशी के साथ स्वार्थ साधन का भी पूरा ध्यान रहता था। चारों ओर का टोह लगाए रहते थे। वह जानते थे कि इन दिनों अंगरेजों के ग्रह मध्यम हैं इस से विचार रक्खा था कि दोनों पक्ष का अवलम्बन किए बिना टही न जमेगी।

दारोगा साहब कुंवर सिंह से बहुत डरते थे क्योंकि वह थे कुलाभिमानी राजपुत्र इस से इन्हें नीच जातीय समझ कर मुंह न लगाते थे। रामशरण इस बात से अटमस मानते थे और चाहते थे कि मौका लगे तो बदला लें पर कुछ कर न सकते थे क्योंकि जी में जानते थे कि इन से बिगाड़ करने में सब तरह अपना ही नुकसान है। अंगरेजों के बाद इस जिले की हुकूमत इन्हीं की है इस कारण जाहिरा उन की खुशामद ही करते रहते थे।

नवम परिच्छेद ।

अमर सिंह के घर लौट आने का समाचार दूसरे ही प्रभात को सब ने जान लिया। युवन सिंह नामक एक प्रधान राजपूत कई दिन से कुंवरसिंह के साथ रहते थे उन्हें कुंवर सिंह ने अमरसिंह के पास भेजा प्रातःकाल ही इन से उन की भेंट हुई। अमरसिंह ने पूछा क्या दादा जी अंगरेजों से लड़ना चाहते हैं।

युवन सिंह को आश्चर्य हुवा। वह जानते थे कि यह वृत्तांत विदित हो जाना अच्छा नहीं है पर जब इन्हों ने जान लिया है तो छिपा भी के दिन रहेगा जहां इन्हें भांग वा गांजे की तरंग आई वहीं साथियों से कह देंगे यह विचार कर युवन सिंह बोले—आप ने किस से सुना है ?

अमर—सुना नहीं है हम जानते हैं। जान पड़ता है तुम हमारे पास इसी लिए आए हो।

युवन सिंह ने कुछ उत्तर न दिया तब अमर उन का हाथ पकड़ कर कहने लगे—तुम हमें नशाखोर निकम्मा समझते होगे। यह सच है। पर जानते हो हम घर किस लिए आए हैं ? हम भी युद्ध में दादा जी के साथ जायंगे।

युवन—तो इस की सलाह दादा साहब ही से कर लीजिए न यह कह के युवन सिंह मन में हंसे कि मौज ही तो है। नशे में यही सूझ गई।

कुंवर सिंह प्रातःसन्ध्या कर के उद्यान की ओर जारहे थे रास्ते में देखा कि अमर सिंह खड़े हैं।

अमर सिंह ने प्रणाम किया और कहा—दादा जी। हम घर में आगए लड़ाई में हमें भी साथ ले चलिए।

कुंवर सिंह ने बिस्मित हो के कहा—यह तुम से किस ने कहा है कि हम युद्ध में जायंगे ?

अमर सिंह बोले—फूलशाह ने कहा है। हम उन्हीं की आज्ञा से घर आए हैं। आप भी आज्ञा दें हम युद्ध में जायंगे।

कुंवर सिंह ने मन में फूलशाह को नमस्कार किया। वह जानते थे कि अमर सिंह उन की आज्ञा कभी उल्लंघन न करेंगे। पर अमर को भस्म पोते काषाय वस्त्र पहिने देख के कुंवर ने दीर्घ निःश्वास ले कर कहा—अमर।

जो तुम कुछ दिन पहिले घर आजाते तो हम कभी युद्ध का ठान न ठानते ऊपरी मित्रता अंगरेजों के साथ अबभी बनी हुई है।

अमर—आप युद्ध न ठानते तो हमारा घर में काम ही क्या था ?

कुंवर—अब तो लड़े बिना बनती ही नहीं है। पर सावधान रहो अभी कुछ विलंब है। भला इस की चर्चा किसी से न करना नहीं तो बड़ा अनर्थ होगा।

अमर—नहीं दादा जी ! अब हमारा विश्वास कीजिये आज से हम ने नशा खाना छोड़ दिया।

कुंवर सिंह ने स्नेह भाव से कहा—और यह भिक्षुकों का सा भेष कब छोड़ोगे ?

अमर—कल। आज यों ही रहने दीजिए।

कुंवर—कल क्यों भैया ! युवन सिंह आ गए हैं और भी दो एक भले मानस आज ही आनेवाले हैं ऐसे में यह कपड़े नहीं अच्छे लगते।

अमर—कल आप की आज्ञा अवश्य पालन करूंगा आज एक काम है इस से यों ही रहने दीजिए।

कुंवर—अच्छा ! सो सही ! पर कल बदल न जाना।

अमर—नहीं ! मैं आप का भाई हूं ! राजपुत्र कभी झूठ बोलते हैं ?

कुंवर सिंह ने छाती से लगा लिया। अमर सिंह उस दिन किसी से नहीं मिले।

अमर सिंह के विरक्त होजाने पर कुंवर सिंह ने उन की स्त्री को जगदीशपुरवाले घर में भेज दिया था। कुंवर सिंह की अर्धांगिनी का कई वर्ष पहिले देवलोक हो गया था। घर में अमर सिंह की पत्नी और एक विधवा भौजाई तथा एक बहिन रहती थी; इस समय इन सब के बुलाने के लिए कुंवर सिंह ने पालकी और दासियों को भेजा। वे उसी दिन संध्या को आगईं। पर उस समय अमर सिंह को न पाया।

दशम परिच्छेद।

आरा से अनुमान डेढ़ कोस पर एक नाला है। उसे लोग गांगी कहते हैं। क्योंकि वर्षा में गंगाजी की बाढ़ही का जल उस में जाता है और सब ऋतुओं में वह सूखा पड़ा रहता है। उसके तीर पर एक घनी अम्बराई थी उसी

के मध्य एक छोटा सा कुटीर था। उसी कुटी में संध्या समय बंसुलिया बाबा के दर्शन करने को अमर सिंह गए।

बाबाजी उस में रहते न थे कभी २ आते थे। उन के आने जाने का भी कोई ठीक न था इस से अमर सिंह कईबार जा २ कर लौट आए थे महात्मा के दर्शन नहीं हुए थे। इस बार फूलशाह के आदेश से फिर आए थे।

आ के द्वार पर खड़े हुए। कुटी बहुत छोटी है। एक कोने में धुनी जल रही है; ताड़ के पत्तों की चटाई पर एक पुरुष बैठा है। अमर सिंह ने समझा यह भी बाबाजी के दर्शन करने आया है। इस से कुछ झिझक गए क्योंकि यह अकेले में मिलना चाहते थे। फूलशाह ने भी कह दिया था कि शाम को वह अकेले मिलेंगे।

जो पुरुष भीतर बैठा था उस की दृष्टि नीचे की ओर थी इस से अमर सिंह को उस ने नहीं देखा। अमर सिंह उस अँधेरे में खड़े हो कर देखने लगे।

उस व्यक्ति का शरीर नाटा और सुडौल था। अवस्था बहुत न थी। घुंघराले बाल कांधे पर लटक रहे थे। जो तेल से संवारे हुए थे। शिर पर सुंदर टोपी अंग पर छकलिया अंगरखा चूड़ीदार पाजामा और पांव में दिल्लीवाल जूता था। भेष से रसिक सा जान पड़ता था इस से अमर सिंह ने सोचा कि यह यहां किस अभिप्राय से आया है।

कुछ काल परख के अमर सिंह ने पूछा—स्वामी जी कहां हैं?

जो बैठा था उस ने मुंह फेर के देखा और खड़े होकर कहा—यहीं है, आइए। भीतर बैठिए।

अमर सिंह भीतर जा बैठे उन्होंने यह ध्यान नहीं किया कि युवक का जैसा परिधान है वैसा स्वर नहीं है। स्वर गंभीर था।

अमर सिंह ने कुटी के भीतर चारोंओर दृष्टि की उस में सामग्री बहुत थोड़ी थी। एक कोने में चौकी पर साधारण सी बांस की वंशी रक्खी थी इस से अमर ने विचार किया कि स्वामी जी हैं कुटीर ही में। क्योंकि यह उन की नित्य की संगिनी थी वरंच इसी से बाबा जी का यह नाम प्रसिद्ध हो गया था। लोग कहते हैं कि बाबा जी के समान वंशी बजाना कोई न जानता था पर वह किसी के सामने न बजाते थे।

अमर सिंह ने पूछा—स्वामी जी कबतक आवेंगे?

दूसरे पुरुष ने कहा—वह तो आप का रास्ता ही देखते थे। आप संध्या-

सियों के से कपड़े पहिने हैं पर जान पड़ते हैं राजपूत, क्या बाबू अमर सिंह आप ही हैं ?

अमर सिंह इस प्रश्न से आश्चर्यित नहीं हुए क्योंकि उन्हें इस भेष में भी बहुत लोग पहिचानते थे। पर यह पूछा कि—आपने यह कैसे जाना कि मैं यहां आऊंगा ?

युवक ने इस का कुछ उत्तर न दे कर कहा—आप बंसुलिया बाबा से अकेले में क्यों मिलना चाहते हैं आप उदासीन हैं आप के लिए क्या, जैसे अकेले वैसे दुकेले।

अमर सिंह ने देखा कि यह तो हमारे मन का भाव जानता है इस से संशयपूर्वक पूछा—क्या आप ही…?

युवक ने कहा—फूलशाह ने हमें आप से भेंट करने को कहा है इसी से हम आप का मार्ग देख रहे थे।

अमर सिंह का सब संदेह जाता रहा बंसुलिया बाबाजी को साष्टांग प्रणाम किया और हाथ जोड़ के बोले—हम अंधे हैं। आप को इस भेष में नहीं पहिचान सकते।

बाबाजी ने मृदु गम्भीर स्वर से कहा—हां साधारण पहिचान तो भेष ही से होती है। पर जो तीव्र दृष्टिवाले हैं वह छद्मवेशी को भी चीन्हही लेते हैं। मैंने आप की परीक्षा के लिए यह कपड़े नहीं पहने, कभी २ इसी भेष को धारण कर लेता हूं।

अमर सिंह शिर झुकाए सुन रहे हैं। बाबाजी ने कहा—फूलशाह मुझे नहीं मिले पर उन्होंने आप को मुझ से मिलने के लिए कहा है यह मैं जानता हूं। जो परामर्श उन्होंने आप को दिया है वही मैं भी देता हूं। आप अपने भाई को सहायता दीजिए और क्षत्रियधर्म्म का पालन कीजिए। अस्सी वर्ष की अवस्था में बाबू साहब का साहस और पराक्रम देख कर उत्साह ग्रहण कीजिए।

अमर सिंह ने पूछा—स्वामी जी ! इस युद्ध का परिणाम क्या होगा ?

बाबाजी का प्रसन्न मस्तक सिकुड़ गया। विशाल नेत्रों से कुटीर के बाहर की ओर देख कर कहा—हम जो कुछ देखते हैं उस का वृत्तांत सुन कर आप सुखी न होंगे। इस समय अंगरेज़ों का सौभाग्य कोई खंडन नहीं कर सकता। पर इस कारण से आप अपने कर्तव्य से मुंह न मोड़िए। युद्ध का

फल चाहे जो हो पर आप का अमंगल न होगा। इस से घर जा कर गृहस्थ धर्म अवलम्बन करो। राजपुत्र वेश धारण करो। और सब प्रकार बाबू कुंवर सिंह की सहायता करो। हमें इस समय एक स्थान को जाना है।

अमर सिंह ने वंशीवाले बाबाजी के चरणों पर मस्तक धर कर घर को प्रस्थान किया।

एकादश परिच्छेद।

" रानी! खड़ी २ क्या कर रही हो। आवो हमारे संग चलो ननद जी बुलाती हैं "

" आहा! लच्छमी! क्यों? क्या है? "

लक्ष्मी ने रानी के पास जा कर उस के गाल को उंगली से खोद के कहा—मैं क्या जानूं क्या है? वहीं चल के पूछ लेना।

रानी—आज क्या रंग है?

लक्ष्मी ने रानी का हाथ पकड़ के कहा—चलो तो! आह जैसे कुछ जानती ही नहीं, ऐसी भोली।

रानी—अच्छा न सही भोली पर कही तो, तुम्हें हुवा क्या है?

लक्ष्मी ने मंद २ मुसकिरा कर रानी की ठोढ़ी में धीरे से उंगली मार दी, कुछ बात न कही।

रानी ने कहा—आज हाथ बहुत चलता है। जान पड़ता है झाड़ उतारने को और कोई नहीं मिला।

लक्ष्मी ने हंसना छोड़ कर कहा—तुम्हें मिल जायगा। इस पर दोनों की हंसी चुहल बंद हुई दोनों हाथाबाही कर के खड़ी हुईं। रानी सुहागिन हैं, लक्ष्मी बिधवा। इन की अवस्था बाईस वर्ष की है उन्नीस की रानी (अमर सिंह की स्त्री) हैं इन का नाम इन्द्राणी है सबलोग—रानी—कहते हैं। अमर सिंह के और एक भाई समर सिंह थे वह व्याह होने के पीछे स्वर्ग को सिधार गए इस से लक्ष्मी बालविधवा है।

रानी सधवा हैं पर आजतक पति का सुख नहीं जानतीं। क्योंकि अमर सिंह किशोर अवस्था ही से विरक्त हैं कभी स्त्री की ओर देखते भी नहीं।

जगदीशपुर में अमर सिंह के घर आने का समाचार पहुँचने से रानी और लक्ष्मी के आनन्द की सीमा न रही थी। यौवन की उमंग में स्वामी के

दर्शन की आशा रानी के हर्ष का कारण थी और अपनी प्यारी देवरानी के मुख पर प्रसन्नता की चिन्ह देख कर लक्ष्मी फूली न समाती थी। पर आरा में आते ही दोनों का सपने का सा सुख जाता सा रहा था। अमर सिंह घर आए किन्तु अन्त:पुर में पांव नहीं रक्खा। उन की बड़ी बहिन ने बुला भी भेजा पर वह केवल पांव छू कर चले गए कोई बात नहीं सुनी।

इसी कारण इस समय लक्ष्मी की बातों से रानी ने गंभीर भाव धारण किया था उन्हें देख के लक्ष्मी भी गम्भीर हो गई। लक्ष्मी की अवस्था अधिक है तो भी रानी को वह बड़ी बहिन के समान मानती है। रानी के स्वभाव में गम्भीरता है और लक्ष्मी के चंचलता।

रानी का बायां हाथ लक्ष्मी के दहिने हाथ में था दहिने हाथ से लक्ष्मी का मुंह उठा के रानी ने पूछा—ननद जीने क्यों बुलाया है?

लक्ष्मी ने हंस के कहा—तुम्हारा सिंगार करने को। उन्हों ने अमर सिंह को बुलाया है न।

रानी ने शिर झुका के पूछा—वह आवेंगे?

लक्ष्मी—चाल से बुलाये जायंगे तो कैसे न आवेंगे। हमें वह मिले नहीं, नहीं तो पकड़ के तुम्हारे पास ले आतीं। ऐसा कठिन पुरुष तो मैंने कहीं देखा ही नहीं।

रानी ने लक्ष्मी के मुंह पर हाथ लगा के कहा—स्त्री के सामने पति की निंदा! राम २! क्या अच्छा होता जो एक बार उन के दर्शन हो जाते।

लक्ष्मी—तो बुला भेजो किसी के हाथ।

रानी—आने का कौन आसरा है?

बहिन के बुलाने पर अमर सिंह आए थे तब इन दोनों ने उन्हें आड़ में से देख लिया था।

इस समय रानी (अमर सिंह की स्त्री) की शोभा अपूर्व है, दीर्घ नेत्र आगे के से नहीं हैं प्रशंसनीय दीर्घ मूर्त्ति, गौर बरण, शांत और तेजस्वीअंग, राजपुत्र वंशावतंस रमणीमोहन वीरोचितमूर्ति देखते ही बनती है।

अमर सिंह हाथ नहीं आते यह देख के उन की भगिनी तथा लक्ष्मी ने कौशल किया। जगदीशपुर से आते के समय उन के साथ लोहे की सिकली का बना हुवा एक कवच आया था, वह दास दासियों के भ्रम से और सामग्री के साथ अन्त:पुर में पहुंच गया था। यह अमर सिंह ने अपने लिए भाई से

से मांगा था। उसी घर के भीतर सुन के बहिन से मंगवा भेजा। तो बहिन ने कहा बड़ी जरूर हो तो आ के ले जायं।

अमर सिंह भीतर आए और बहिन से पूछा—कवच (बक्तर) कहां है ?

बहिन ने कहा—उत्तरवाले महल के पच्छिमवाले बड़े कमरे में रक्खा है वहां जा के ले आवो।

अमर सिंह को संदेह हुआ कि इस में कोई चाल है, सच तो यह है कि अमर युवा पुरुष होने पर भी बालकों की नाईं लज्जाशील हैं। वह नहीं जानते कि स्त्रियों के प्रति अनुराग क्या कहलाता है। इस से डरे कि उस घर में स्त्री से भेंट न हो जाय। क्योंकि वह युद्ध की इच्छा से घर आए हैं मायाजाल में फंसने को नहीं आए। पर करें क्या उत्तर महल में गए और देखा कि पश्चिमवाली दीवार पर कवच टंगा हुआ है। वह मांजे जाने के कारण गवाक्ष से आनेवाली प्रातःकालिक सूर्य्य की किरणें पड़ने से चमाचम हो रहा था। अमर सिंह ने देखा तो वह शयन-गृह विचित्र शय्या से सुसज्जित है। चारो ओर विविध मूर्ति और अनेक सुख सामग्री रक्खी हुई हैं। कवच के निकट खास उन्हीं की प्रतिमा धरी है। इधर उधर कहीं राम सीता, कहीं सावित्री सत्यवान, कहीं दुष्यन्त शकुंतला की प्रतिकृति शोभा दे रही हैं, अमर सिंह की निज मूर्ति ब्याह के समय के वस्त्राभूषण से सजी हुई थी। उसे देख के पुरानी बातें ध्यान में आईं।

इतनेही में द्वार पर किसी के आने की आहट और गहनों की सी ध्वनि सुन पड़ी। अमर सिंह ने उधर देखा।

द्वार पर रानी खड़ी थीं, राजराजेश्वरी के उपयुक्त रूप यौवन के कारण चंचल हो रहा था। वह परम सुन्दरी वीररमणी थीं, इस समय अंग २ प्रेम से पूरित हो रहा था, दृष्टि अत्यंत कोमल थी, अधर और नासिका कुछ स्फूरित श्वास कुछ रुद्ध हृदय कुछ चंचल हो रहा था। अमर सिंह उन की ओर देख कर चकित से हो रहे दोनों की आंखें चार हुईं। अमर ने कुछ लज्जित हो कर मुख फेर लिया और कवच उतारने लगे।

अमर सिंह ने उन्हें केवल विवाह के समय देखा था, तब वह बालिका थीं, इस से जब कभी स्मरण होता था तब उसी बालरूप का होता था, बालिका युवती होती हैं और सुन्दरता लाभ करती हैं यह वह कभी क्यों सोचने बैठते थे।

इस समय अमर अपने मन को धिक्कार देने लगे—छि! सुन्दरी को देखते

ही इतना चलायमान हो जाना। फिर संन्यासी किस बीरते पर बने थे—उन्हें यह सुध न थी कि यह सुन्दरी हमारी ही धर्मपत्नी है।

अमर सिंह कवच उतार रहे थे। रानी उन के पास आके खड़ी हो गईं और किंचित कम्पित मधुर स्वर से बोलीं 'हम ने इसे अपने हाथ से मांजा है कहिये तो आप को एक बार पहिना कर देख लें।'

अमर सिंह के कानों में मानों अमृत की वर्षा होने लगी। उत्तर दिया—अच्छा पहिना दो।

रानी पहिनाने लगीं। इस के पहिले कभी किसी ने किसी का अंगस्पर्श नहीं किया था। अमर सिंह को क्षण २ पर सिर से पैर तक रोमांच होने लगा। रानी के हाथ ऐसे कांपने लगे कि पहिनाना कठिन हो गया। पहिन कर अमर खड़े हो रहे। रानी कुछ हट कर शोभा देखने लगीं, फिर ठहर कर बोलीं—बहुत अच्छा है, आइए अब उतार दें, लड़ाई में जाते समय पहिर लीजिएगा।

इस समय कोई रानी को देखता तो यह न समझता कि पति से पहिले पहिल बातें करती हैं।

अमर सिंह ने कहा—और क्या। उतार दो। जब कि यह जानती थी हो कि हम युद्ध में जायंगे तो फिर हम से क्यों भेंट करने आई हो? जो लड़ाई पर जाता है वह अपना शिर हथेली पर धर लेता है, हम ने अभी तक कभी तुम्हें नहीं देखा। ऐसे समय में क्यों हमें माया मोह में फंसाती हो?

अमर सिंह को अभी तक वैराग्य की बोली भूली नहीं है।

रानी कवच उतारते २ बोलीं—राजपुत्री के पति का लड़ाई में जाना कोई नई बात नहीं है, इस के कारण स्वामी की सेवा से मुंह मोड़ना कौन समझदारी है?

अमर—अब उतार चुकीं? हम जाते हैं—यह कह के खड़े हो रहे।

रानी—तनिक बैठिएगा नहीं? घर आए हैं तो कुछ देर बैठलीजिए। हम ने कभी आप से बैठने को नहीं कहा। आज कहती हैं।

अमर—हम खड़े हैं, कहना हो सो कह लो।

रानी ने उन का हाथ पकड़ लिया। यही पहिला हस्तग्रहण था। हाथ पकड़ के अमर सिंह को पलंग पर बिठलाया। और आप पैरों के पास धरती पर बैठ गईं।

अमर सिंह ने कहा—जो तुम धरती पर बैठोगी तो हम जाते हैं। तुम्हें यों बैठाकर हम पलंग पर बैठना नहीं चाहते।

इस बार रानी के ओठों में मुसकिराहट आ गई। उठ कर पलंग पर आ बैठीं और बोलीं—जाइएगा काहे को? हम भी तो आप के पास बैठती हैं न।

अमर सिंह के मन में एक साथ अनुताप उत्पन्न हो गया। बोले—तुम हम से इतनी प्रीति करती हो पर हम ने कभी तुम्हारा स्मरण भी नहीं किया। हम भी कैसे निठुर हैं।

रानी का मुख अमर सिंह के मुख से और भी निकट आ गया उन्होंने अति कोमल और प्रेमपूर्ण स्वर से कहा--आप निठुर होते तो आज हम आप को कैसे पातीं? हम ने पहिले जनम में बहुत पुण्य किया था जिस से आप को आज देख पाया है।

अमर सिंह ने कहा—इतने दिन न जानें तुम्हें कितना कष्ट सहना पड़ा होगा।

दोनों जने बहुत ही मिल के बैठे थे अंग से अंग मिल रहे थे। इतना भिड़ के बैठना भी अच्छा नहीं होता। बाहर खड़ी हुई लक्ष्मी कौतुक देख रही थीं। और हंसी रोकने के लिए मुंह में कपड़ा भरे थीं।

रानी बोलीं—स्वामी के दर्शन की आशा में क्या स्त्रियों को कष्ट होता है। अब हमें कौन कष्ट है? कब कौन कष्ट था इस की तो सुध भी नहीं है। आज तो आप को पाया है न।

अमर सिंह का गला रुंध आया, बोले—हमें क्षमा करो। हमने इतने दिन तक ऐसी सुलक्षणा को पहिचाना नहीं था। यह कह के रानी के चरण कमल को पकड़नाचाहा।

रानी ने अतिशय व्यस्त हो कर चरण छिपाए और पति के दोनों हाथ हृदय तथा मस्तक पर धर लिए। बोलीं—प्यारे! क्षमा किस बात की मांगते हैं?—यह कह के गोल २ भरी २ कोमल २ बाहों से अमर सिंह को लिपट गईं। और उन के ओष्ठ पर अपने अरुण अधर धर कर चुम्बन किया।

यही पहिला आलिंगन और पहिला चुम्बन था। रानी का समस्त संचित स्नेह इस समय उमड़ उठा। उस से अमर सिंह को देहदशा का स्मरण न रहा। जो अग्नि कभी उन के हृदय में न जगी थी आज उस के सोत ने उन्हें मूर्छित कर दिया।

रानी भी कुछ काल के उपरांत उठ बैठीं। स्वाभाविक लज्जा उन पर धीरे २ अधिकार करने लगी। उन्हों ने केवल प्राणनाथ से मिलने की आशा से कुछ काल के लिए उसे छोड़ दिया था। जब वह मिल गए तब लज्जा भी लौट आई।

अमर सिंह ने रानी को हाथ पकड़ कर अपने पास खींच लिया। बोले—तुम्हें हम क्या कहा करें? सब लोग रानी कहते हैं न?

इस नाम की अमर सिंह को सुध थी। रानी ने कहा—सब रानी कहते हैं आप दासी कह कर चरणों में पड़ी रहने दीजिए।

अमर सिंह बोले—तुम हमारे हृदय की रानी हो। तुम्हें हृदय में रक्खेंगे। यह कह के छाती से लगा लिया। और लज्जा पूरित मुखारबिंद को बारम्बार चूमने लगे। रानी को देह की सुध आ गई, लज्जित हो कर प्रियतम के हृदय में मुंह छिपा लिया।

इसी अवसर पर बाहिर किसी ने हंस कर कहा—हहारे भंड तपस्वी! धन्य है! आप कभी स्त्री का मुंह नहीं देखते! क्यों नहो!

अमर सिंह ने अत्यन्त लज्जित और आश्चर्यित होके कहा कौन है?

रानी ने स्वामी के चुम्बन का उत्तर देकर कहा—लक्ष्मी हैं—बाहर काहे खड़ी हो दीदी! आओ न।

द्वादश परिच्छेद।

पटना के कमिश्नर टेलर साहब से बहुत लोगों का अत्यन्त मतभेद चला आता था। कोई २ कहते हैं कि उन्हीं के कारण पटना, आरा और गया जी में बलवा हुआ था। बंगाल गवर्नमेंट ने पीछे से उन की कार्यवाहियों से अप्रसन्न हो कर उन्हें कर्मच्युत भी कर दिया था। पटना में तीन वहाबी मौलवियों ने विद्रोह का बीज बोया था। उन्हें भेंट करने के व्याज से बुलाकर टेलर साहब ने कारागार में भेज दिया। यह यद्यपि और कारावासियों की अपेक्षा आदर के साथ रक्खे गए थे पर गवर्नमेंट ने इस पर अप्रसन्न हो कर कहा कि टेलर साहब ने मौलवियों के अपराध का विशेष प्रमाण पाए बिना उन्हें छल से बन्दीगृह में डाल दिया यह बुद्धिमानी का काम नहीं किया इस से मुसल्मान और भी क्रुद्ध हो गए। टेलर यह समाचार पाकर डर गए और अपने आधीन ज़िलों के सारे प्रधान अंगरेज कर्मचारियों को पटने में बुला भेजा।

इस से विद्रोहियों को बड़ा सुभीता मिल गया। सच पूछो तो टेलर साहबही की करतूत से बिहार में इतने अनर्थ हुए थे।

टेलर साहब तथा उन के सपक्षियों का कथन है कि वह न होते तो और भी विपत्ति भोगनी पड़ती। छलपूर्वक विद्रोहकारियों को काराबद्ध करदेना कौशल था बुद्धि का दोष नहीं था और २ जिलों के हाकिम अपनी प्राण-रक्षा के निमित्त पटने चले आए थे टेलर साहब ने उन्हें बुलाया नहीं था। पटना में टेलर साहब ने जैसी बुद्धिमत्ता और साहस दिखलाया था उस के लिए वे पुरस्कार के पात्र थे। उन्हों ने अपराध केवल इतनाही किया था कि घोर विपत्ति के समय प्रत्येक कर्म के लिए गवर्नमेंट की अनुमति न ले कर अपने विचार से काम लिया था इसी लिए उन्हें पदच्युत होना पड़ा। यदि उन्हें सर्कार उचित सहायता देती और उन की अनुमति से काम लेती तो कभी बिहार में गदर न होने पाता।

आरा के मजिस्ट्रेट ने बोर्ड आफ रेविन्यू के आचरण से कुंवर सिंह के असन्तुष्ट हो जाने का समाचार पाया तो टेलर साहब को लिख भेजा कि—"इस ज़िले में कुंवर सिंह के द्वारा बहुत कुछ अनिष्ट हो सकते हैं। और यह भी सुनने में आया है कि वे विद्रोहियों के साथ मंत्रणा कर रहे हैं पर इस का पुष्ट प्रमाण प्राप्त हुए बिना वे बन्दी नहीं किए जा सकते। उन का बंदी करना प्रमाण पाने पर भी सहज नहीं है क्योंकि जहां ऐसा हुआ वहीं सब राजपुत्र बिगड़ खड़े होंगे। इस विषय में आप जो उचित समझिए कीजिए।"

टेलर साहब ने देखा कि कुंवर सिंह का विद्रोहियों से मेल करना बड़ी विपत्ति का कारण होगा और आरा में उन्हें पकड़ना भी सहज न होगा। इस से उन्हें किसी मिष से पटना में बुला लें तो कारागार भेजने में सुविधा होगी। तथा इस रीति से एक बड़ी भारी शंका मिट जायगी। कमिश्नर साहब के यहां एक प्यारीलाल नामक मुंशी बड़ा चतुर और विश्वासी पुरुष था। उसे बुला के टेलर साहब ने कहा—"डेको मुंशी टुम आरा में चला जाओ और बाबू कुंआर सिंह से बोलो कि साहब उन से मिलने मांगटा। कुच जमी-डारी का बावत सेला करेगा। हाम चिटि बी लिक डेटा वह बाबू को डो और अपना टरफ़ से बी कूब समजाओ जिस में वह टुमारा साट पटना में चला आवे।"

प्यारीलाल अभिप्राय समझ गया, सलाम करके बोला जनाब आली, हत्तुलमकदूर उन्हें लेही के आऊंगा।

इधर कुंवर सिंह को विदित हो गया कि कमिश्नर साहब छल से द्वारा नजरबन्द करना चाहते हैं, इस से वह शीघ्र ही जगदीशपुर चले गए और आरा में प्रसिद्ध हो गया कि बाबू साहिब पीड़ित हैं।

प्यारीलाल ने आरा में आकर यह समाचार सुना तो जगदीशपुर पहुंचा। वहां अमर सिंह तथा युवन सिंह ने उसे बड़े आदर से बैठाया और अमर सिंह ने कहा 'दादा साहब बहुत मांदे हैं, इस से नहीं आ सके'।

प्यारीलाल ने कहा—उन से मुलाक़ात करने की तो निहायत ज़रूरत है। कमिश्नर साहब ने मुझे हुक्म दिया है कि बाबू कुंवर सिंह से मुलाक़ात किये बिना मत आना।

अमर—अच्छा तब तक आप भोजन ओजन कीजिए हम उन से कहेंगे। अभी तो वैद्यराज आए हुए हैं।

आहारादि के उपरान्त अमर सिंह ने भाई से सब कथा कही तो कुंवर सिंह ने मुंशी जी से कहला भेजा कि कृपा कर के आप ही आ जाइए तो भेंट हो सकती है। वहां क्या था प्यारीलाल घर के भीतर भी पहुंचे। कुंवर सिंह पलंग पर पड़े थे, धीरे से बोले—मुंशी जी! क्षमा कीजिएगा मुझे उठने की शक्ति नहीं है।

द्वार और गवाक्ष रुद्ध (खिड़की बन्द) होने के कारण घर में कुछ अन्धकार था। प्यारीलाल ने कहा—आप की तकलीफ़ देख कर मुझे अज़हद रंज होता है। बड़ी उम्मेद थी कि आरा में मुलाक़ात होगी।

कुंवर—क्या करूं पीड़ा के मारे यहां चला आया हूं। इस अवस्था में रोग होने से तो बहुत ही कष्ट होता है न। परमेश्वर जानें अब हम उठें वा न उठें।

प्यारी—ऐसा न फ़र्माइए। मैं कमिश्नर साहेब का ख़त लाया हूं। उन्हों ने आप को याद फ़र्माया है और मुलाक़ात का निहायत इश्तियाक़ रखते हैं।

कुंवर सिंह ने क्लिष्टस्वर से कहा—यह मेरा सौभाग्य है।

प्यारी—आप की ज़मींदारी और क़र्ज़ के बावत जो खरखशा है साहब मौसूफ़ एक बार आप से मिल कर उसी की कुछ तदबीर किया चाहते हैं, इसी लिए मुझे भेजा है कि साथही आना।

कुंवर—साहब से मेरा बहुत २ सलाम कहिएगा। उन से मिलने की

मुझे भी बड़ी इच्छा है, उन्हीं ने जो मेरा स्मरण किया है यह मेरा भाग्य है। पर अभी तो मैं खाट से उठने योग्य भी नहीं हूं, पटना तक कैसे जाऊंगा।

प्यारी—तो मुझे हुक्म हो तो कुछ रोज़ यहीं बना रहूं आप के आराम हो जाने पर हमराह चलूंगा।

कुंवर—यह आप की बड़ी कृपा है। पर मैं कह नहीं सकता आप के यहां रहने से काम में हानि होगी। मैं इतना दुर्बल हो गया हूं कि रोग छुट जाने पर भी बल शीघ्र न आवेगा। इतने दिन आप कैसे ठहर सकते हैं। इस से साहब से मेरी ओर से विनय कीजिए कि अच्छा हो जाने पर मैं आपही उन से मिलूँगा।

फिर प्यारीलाल क्या कहते अपना सा मुंह लेके चले गए। उन्हें बिदा करके कुंवर सिंह बाहर आए और उन के सब बन्धु बांधवादि उन के निकट खड़े हुए।

कुंवर सिंह की आंखों से चिनगारी निकलने लगीं। अस्सी वर्ष की अवस्था का राजपूत पचीस वर्ष के युवा पुरुष की भांति सदर्प खड़ा हुवा और तीव्र स्वर से बोला—आज से हमारी और अंगरेज़ों की मित्रता जाती रही। अब मैं उन का शत्रु हूं। आज एक धूर्त से धूर्तता करने के निमित्त झूठ बोलना पड़ा—यह कह कर कटि प्रदेश से तलवार निकाल ली। अमर सिंह इत्यादि क्षत्रिय वीरों ने भी साथही अपना २ खड्ग खींच लिया-दुपहर की तीक्ष्ण किरणों के योग से तलवारें बिजली सी चमकने लगीं।

कुंवर सिंह उत्तर की ओर मुंह किए खड़े थे। गंगाजी उधर ही हैं, गंभीर स्वर से बाबू साहब ने कहा—गंगाजी सामने हैं, सूर्यनारायण साक्षी हैं। इसी खड्ग से हम अंगरेज़ों का रक्त बहावेंगे।

और सब राजपुत्रों ने भी यही शपथ की।

उधर प्यारीलाल के मुंह से सारा वृत्तान्त सुन कर टेलर साहब सूख गए, कि कुंवर सिंह मेरा अभिप्राय समझ गया।

त्रयोदश परिच्छेद।

रात्रि गम्भीर है, अत्यन्त अंधकार छाया हुआ है। बस्ती बहुत दूर है। सुनसान मैदान है। न वृक्ष देख पड़ते हैं न मनुष्य का शब्द सुन पड़ता है।

अन्धेरे के मारे 'सूझ न आपन हाथ पसारा'। आकाश में चन्द्रमा भी नहीं हैं। केवल नक्षत्र जुगजुगा रहे हैं। उन का प्रकाश ही क्या? पवन भी अतिमन्द है। स्थान भयानक है पर शांतिपूर्ण भी है। योगाभ्यास के लिए अति उपयुक्त है।

वहां से धीरे २ वंशी की ध्वनि उठी। और मन्द पवन में संचार करने लगी मानों आकाश की निस्तब्धता अभी तक अपूर्ण थी वह पूर्ण हो गई। अलस रागिनी में कमल कोष के मध्य प्रवेश करते हुए भ्रमर की मृदु गुंजार के रूप में मुरली बजने लगी। रह २ कर वायु में लीन हो २ कर वंशी का शब्द नीरव हो जाता है फिर प्रभात पवन की भांति धीरे २ जाग उठता है। अत्यन्तकरुणापूर्ण स्वर से रो २ कर झूम २ कर वह स्वर प्रान्तर में विचरने और आकाश में उठने लगा।

धीरे २ वंशी ध्वनि उठने लगी। क्रमशः स्पष्ट रीति से पूरित हो चली। दिशाओं को प्रतिध्वनित कर के आकुलरव से वंशी बजने लगी। और स्वरलहरी आकाश में लहराने लगी। मर्म के उच्छ्वास, हृदय के अभिमान, और गंभीर प्रेम से वंशी का स्वर होने लगा। उस से सर्वत्याग की अभिरुचि प्रकाशित होने लगी। अनन्त प्रेम का आकुल आह्वान आकाश में ध्वनित होने लगा।

उस मधुर मुरली का सुननेवाला कोई न था। नक्षत्र शोभित आकाश अथच सुविस्तीर्ण प्रान्तर में उस का स्वर विहार कर रहा था। मानों वही श्रीवृन्दावनवाली मुरली बज रही थी जिस ने यमुनातीर कदम्बमूल पर सर्वत्याग का महामन्त्र प्रचार किया था जिस के श्रवण से कदम्बकुसुम रोमांचित और श्रीमती कलिन्दनन्दिनी स्थगित हो रही थीं, तथा व्याकुल-हृदया गोपीगण सर्वस्व त्याग कर वहीं आ गई थीं।

बंसुलिया बाबाजी किसी के सामने वंशी नहीं बजाते थे। कोई जान भी न सकता था, जो सुन लेता उन्मत्त सा हो जाता था। उन्हों ने निर्जन में मुरलीवादन सीखा था और निर्जन ही में वे बजाते थे।

वंशी लहरें ले रही थी। इतने में एक पुरुष बाबाजी के सामने चुपचाप आ के खड़ा हो रहा। उन्हों ने वंशी बन्द करने पर पूछा—कौन?

'मैं हूं खुदा के बन्दों का बन्दा'—यह फूलशाह थे।

बंसुलिया बाबा ने कहा—यह तो मैं पहिले ही जान गया था कि आप हैं। नहीं और कोई होता तो बांसुरी कब की बंद हो गई होती।

फूलशाह बोले—मैं भी तो इसी की आवाज़ सुन कर दौड़ता हुआ आया हूं।

बाबाजी—क्यों नहीं 'भगवति रसिक रसिक की बातें रसिक बिना कोऊ समुझि सकैना'।

फूल—जनाब! मैं मुसलमान हूं मुझे आप हिन्दुओं की तरह क्यों मुहब्बत करती हैं?

बाबाजी—भक्तों की जाति स्वतन्त्र होती है। भक्तों में हिन्दू मुसलमान नहीं होते।

फूलशाह हंसने लगे। बोले—असल बात तो यही है। इस वक्त मेरा भी गाने को जी चाहता है। ज़रा बांसुली लीजिए तो।

बाबाजी वंशी बजानेलगी और फूलशाह उस के संग कंठ मिला कर मधुर स्वर से गानेलगे।

इस के उपरांत दोनों महापुरुषों में अति गंभीर तत्त्व की चर्चा होने लगी। भक्ति और साधन आदि का कथोपकथन होने लगा। फिर क्या था, 'कटी रात हर्फों हिकायात में। सहर हो गई बात की बात में।'

प्रातःकाल दोनों जने उठ कर एक साथ चल दिए। मार्ग में बाबाजी ने कहा—क्यों भाई! आपत्ति तो बड़ी भारी आनेवाली है। हमलोगों को क्या करना चाहिये?

फूलशाह बोले—लड़ाई तो सभी जगह होगी। जी चाहे तो हिमालय की तरफ चलो। पर मेरी समझ में यहीं रहना मुनासिब होगा। यहां रहने से आफ़तज़दा लोगों की कुछ न कुछ ख़िदमत हो सकेगी।

बाबाजी ने कहा—मेरी भी यही इच्छा है। इस अशांति में हमलोगों की कोई हानि नहीं हो सकती।

चतुर्दश परिच्छेद।

जिस समय विद्रोह की अग्नि चारो ओर फैलनेवाली थी उन्हीं दिनों आरा के इंजिनियर साहब को अपने घर में एक छोटा सा दुर्ग बनाने की सूझी। जिस बंगले में वह रहते थे उस के सामने एक और दुमंज़िला मकान था, वह भी उन्हीं का था। उसी को उन्हों ने गढ़ी के रूप में परिणत किया। यह देख के उस नगर के और साहब लोग हंसी करने लगे क्योंकि वहां

उपद्रव की संभावना न थी। साहब लोग कहने लगे—डिको राट को इसी कोला में छिप रहा करो नई आउल * लोग रहेगा।

इंजिनियर साहब ने कहा—हम सब को इसी में छिपना होगा।

इंजिनियर साहब की यह बात कुछ ही दिन में आगे आई।

दानापुर बांकीपुर से तीन कोस पश्चिम है। वहां तीन पलटनें देशी योद्धाओं की, एक गोरों की, और एक विलायती गोलंदाजों तथा एक देशी गुलचलों की थी, जनरल लएड सेनापति थे। वह बुड्ढे थे और चतुर भी न थे, यह बात टेलर साहब जानते थे इस से चाहते थे कि कोई कार्यकुशल सेनापति नियुक्त किया जाय पर उच्चाधिकारियों ने न माना। वरंच कह दिया टेलर साहब सेनाविभाग का विषय क्या जानें।

सिपाहियों का सेनापति बड़ा विश्वास करते थे। इस से कई बार कलकत्ते को लिख भेजा था कि दानापुर में उपद्रव का सम्भव नहीं है। टेलर साहब सिपाहियों के विषय नाना भांति की बातें सुनते थे और जनरल साहब को समाचार देते थे पर उत्तर यही पाते थे कि—लोग जूट कैटा है।

क्रमशः सिपाही लोग असन्तोष प्रकाश करके अपने अधिकारियों की आज्ञा भंग करने लगे। यह विद्रोह के लक्षण देख कर लएड साहब डरे। सेनापति ने आज्ञा प्रचार की कि सिपाहियों की बन्दूक की टोपी लेली जाय। इस पर सिपाही अप्रसन्न तो बहुत हुए पर सूबेदारों के समझाने से, सामने सजी हुई गौरांग सेना देखने से, बहुत बखेड़ा नहीं कर सके। सेनापति लएड ने बड़ी प्रसन्नता से फिर आज्ञा की, सिपाहियों को सन्ध्या समय निरस्त्र हो कर शिक्षाभूमि में उपस्थित होना पड़ेगा। बन्दूकें अस्त्रागार में रक्खी थीं।

सिपाही कुछ बोले नहीं, दिन भर छिपे २ परामर्श करते रहे। सेनापति महाशय ने देखा कि विद्रोह का भय जाता रहा, इस से प्रसन्नता पूर्वक अग्नि नौका में बिराजते रहे, दानापुर गंगातट पर है।

सन्ध्या को सिपाही शून्यहस्त हो कर शिक्षाभूमि पर आए। उन्हें शांत देख कर अध्यक्षों ने छावनी में लौट जाने की आज्ञा दे दी। सिपाही फिरने को उद्यत हुए। मार्ग में अस्त्रागार था, उस के सन्मुख पहुंचतेही सिपाहियों ने भीम गर्जनपूर्वक धावा कर दिया। उस समय अंगरेज रक्षक भोजन

---

* आउल = घुगघू = उल्लू।

कर रहे थे, जो दो चार रक्षा कर रहे थे उन्हें निरस्त्र होने में कितनी देर लगती थी। इस से सिपाही अस्त्रागार में घुस गए और बहुत से हथियार निकाल लाए।

'बोलो गंगा माई की जय' कहते हुए सिपाही पश्चिम की ओर चले। जिधर आरा है। राह में शोण नद मिलता है।

अङ्गरेज सेनाध्यक्षों ने सेनापति के निकट सम्वाद भेजा। छावनी गंगाजी से कुछ दूर थी। अश्वारोही दूत के आने जाने में कुछ विलम्ब हुआ। कुछ काल के उपरांत सेनापति की आज्ञा से अङ्गरेज़ गोलन्दाजों ने सिपाहियों को लक्ष्य कर के कईएक गोले चलाए। गोलंदाज सिपाही चले गए थे, पर तोप छोड़ गए थे।

तोप छोड़ने की आज्ञा होते २ सिपाहीगण अनुमान कोस भर के टप्पे पर निकल गए थे। पीछे से गोले का शब्द सुन कर प्रसन्न होके बोले—हहहुर्र अरे क्या सलामी दगती है?—

उस समय जो अंगरेज़ उन का पीछा करते तो क्या होता यह नहीं कह सकते, सिपाहियों को भागना दुष्कर हो जाता पर लएड साहब को ऐसी समझ कहां?

आरा में उसी समय समाचार पहुँच गया। कुंवर सिंह तथा उन के साथी पहिले ही से जानते थे। सिपाही आते हैं यह सुन कर उन्हों ने प्रकाशरूप से अस्त्रधारण कर लिए। सहस्रों अस्त्रधारी राजपूत उन के साथ हो गए। घड़ी भर में आरा से अंगरेजों का आधिपत्य जाता रहा। सारा जिला कुंवर सिंह के आधीन हो गया। अंगरेज़ कर्मचारीगण इंजिनियर साहब की गढ़ी में जा छिपे। उन के साथ पचास के लगभग सिक्ख भी थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल सिपाहीगण शोणभद्र के तीर पर पहुंचे। सावन का महीना था, नदी बाढ़ पर थी। कुंवर सिंह ने उन के लिए नावों का प्रबन्ध कर रक्खा था। इन सिपाहियों में बहुतेरे कुंवर सिंह के सजातीय थे। बहुतेरे रइयत, इस कारण उन से जा मिलने की ही मनशा से दानापुर से आए थे।

सन्ध्या को वे सब आरा में पहुंच गए। कुंवर सिंह हाथी पर चढ़े हुए नगर के बाहर उन की मार्गप्रतीक्षा कर रहे थे। अमर सिंह योधा के वेश में घोड़े पर चढ़े हुए उन के पास खड़े थे। युवन सिंह, निसवन सिंह आदि प्रधान क्षत्रिय भी साथ थे।

अमर सिंह को रानी ने अपने हाथ से कवच पहिनाया था। घोड़ा श्यामवर्ण का था और चलने में 'हवा से बातें करता था' शिर पर पगड़ी शोभा दे रही थी। अभी भिलम टोप पहिनने का क्या काम था।

कुंवर सिंह का वेश साधारण राजपुत्रों का सा था। केवल पगड़ी में एक बड़ा सा हीरा दमक रहा था। उन्हें देख कर सिपाही जयध्वनि करने लगे। नगरनिवासियों ने भी उन का साथ दिया। सहस्रों स्वर से बारम्बार 'जय बाबू कुंवर सिंह की जय' का शब्द गूंजने लगा जिसे सुन २ कर दुर्ग में छिपे हुओं के शरीर सुन्न हुए जाते थे।

सिपाहियों ने आते ही कारागार के बन्दियों को खोल दिया और खजाना लूट लिया। कालक्टरी में प्राय: एक लच रुपया था वह जितना जिस ने पाया ले लिया। इस के उपरांत गढ़ीवाले अंगरेजों के विनाश का उद्योग किया गया।

रामशरण ने देखा कि अब अंगरेज़ों का बचना कठिन है इस से बाबू कुंवर सिंह की शरण में चले आए और यह विदित करने लगे कि उन का हितैषी तथा अंगरेज़ों का द्वेषी इन के समान कोई नहीं है। बाबू साहब इन के लचण जानते थे इस से कभी सूधे मुंह बोलते न थे पर उन्हें यह भी अवगत था कि हैं यह एक ही चालबाज़ अत: इस समय नगर का कोटपाल (कोतवाल) बना दिया। दारोगा के मातहत भी बहुत लोग थे।

सिपाहियों ने देखा कि अंगरेज लोग एक छोटे से द्वितल गृह में छिपे हैं। सिक्खों समेत उन की संख्या सौ से भी न्यून है। इस से एक साथ उस घर को तोड़ कर अंगरेजों के मार गिराने के लिए अग्रसर हुए। मन्दिर की चहारदीवारी में चारों ओर छिद्र थे। उन के पास एक २ सिक्ख वा अंगरेज भरी हुई बन्दूक लिए खड़ा था।

सिपाही निर्भयता के साथ बढ़ रहे थे समझे थे कि जब तक वह दो चार योद्धाओं को मारेंगे तब तक हम किले के भीतर जा धमकेंगे। थोड़े से अंगरेज और सिक्ख खड़े उस की रचा कब तक करेंगे।

सिपाही हर्षध्वनि करते और अलमगलम बकते हुए ज्यों ही उस गृह के निकट पहुंचे त्योंही भीतर से पचास बन्दूकों की धायं धायं ध्वनि सुनाई दी। और पचास सिपाही एक साथ ही हत अथच आहत हुए। तौभी बढ़ेही चले गए। एक बार फिर बन्दूकें छुटीं और बहुत से सिपाहियों को बिथरा

दिया तब तो सिपाही ठिठक गए और लौट कर दूसरे घर में तथा वृक्षों की आड़ में जा छिपे ।

दुर्ग पर दनादन गोलियां बरसती थीं पर प्राचीर में लग कर व्यर्थ हो जाती थीं। केवल कहीं थोड़ासा चूना गिर पड़ता था कहीं एक आधी ईंट फूट जाती थी न किसी अंगरेज के घाव लगता था न सिक्ख के।

सिपाही किसी के आधीन न थे । कुंवर सिंह वा अमर सिंह को सन्मुख देखते थे तभी उन की आज्ञा पालन करते थे पर उन के आंखों की ओट होते ही फिर मनमानी चाल चलने लगते थे । यदि वह एका करके दुर्ग का आक्रमण करते तो अंगरेजों की रक्षा कठिन थी।

सिपाही तोप की खोज में घूमने लगे। कुंवर सिंह की एक बहुत पुरानी तोप भूमि में गड़ी पड़ी थी। उसे वह लोग निकालकर कूल के इंजिनियर साहब के दूसरे घर तक घसीट ले गए और छत पर भी चढ़ा ले गए पर गोला कहां से आवे ? वह भी थोड़े से ढूंढ़ ढांढ़ हाथ लगे पर उन के द्वारा दुर्ग के प्राचीर का केवल थोड़ा ही सा भाग भग्न हुआ और कोई विशेष क्षति न हुई । इंजिनियर साहब के यहां एक पियानो बाजा था उसे तोड़ तार कर पुरजों से गोलों का काम लिया गया पर क्या होता है ? ओस चाटने से कहीं प्यास बुझी है ? किला न टूटा।

तब सिपाहियों ने सुरंग खोद कर बारूद से गढ़ी उड़ा देने का उद्योग किया पर भीतर से किलेवालों ने भी सुरंग खोद कर यह चेष्टा निष्फल कर दी।

फिर बहुत सी लालमिर्च जला कर दुर्गस्थित अंगरेजों को विकल करने का यत्न हुआ पर पवन देवता उस का धुआं भी इधर उधर उड़ा ले गए।

सिपाहियों के द्वारा कोई बड़ी हानि न होने पर भी एक घोर विपत्ति ने गढ़ी में प्रवेश किया। दोही एक दिन के पश्चात् जल का कष्ट उपस्थित हुआ। उस के निवारण करने को अंगरेजों और सिक्खों ने संगीन से कुवां खोदा । पानी अच्छा निकला पर अब भोजन सामग्री निघट गई। सब के खाने भर को चावल न रहे तो सिक्खों ने अंगरेजों से कहा—"तुसी तो चावल खाओ ते असी चनई खाके रेने"*।

दो एक दिन यों भी कटे। एक रात्रि को किले के निकट कुछ भेड़

* तुम तो चावल खा लो हम चनाही खा के रहेंगे। अनुवादक।

चरती हुई देख पड़ीं उन्हें कई अंगरेज और सिक्ख जोपर खेल के पकड़ लाए। सिपाही सावधान न थे इस से यह काम भी हो गया।

पर इस प्रकार के दिन निर्वाह हो सकता है ? बाहर सहस्रावधि शत्रु विद्यमान थे, भागने को रास्ता न था सब लक्षण हारने ही के देख पड़ने लगे। सिपाहियों ने कई बार कहला भेजा कि निकल आओ तो हम कुछ न बोलेंगे दानापुर पहुंचा देंगे पर किलेवालों ने इस का विश्वास न माना। कानपुर की घटना का उन्हें स्मरण था सिपाही लोग सिक्खों को भी प्रलोभन दिखलाते थे कि—आओ, तुम्हारे लिये क्या डर है ? तुम तो हमारी सेना में मिल जाओगे तो इनाम पाओगे—इस के उत्तर में सिक्ख हंस कर कहते थे—को आखदे हो, तुसां दी गल्लां समझ विच नहीं आंउदियां हैं, नेड़े आनके दसो * पर सिपाही जानते थे कि उन की बन्दूकों का सामना करना कठिन है इस से पास न जाते थे।

दुर्गवासियों ने निश्चय कर लिया कि अब जो दानापुर से सहायता न मिली तो सिपाहियों के साथ लड़ कर मर जानाही ठीक होगा। हार मान लेना उचित नहीं है। बड़ी कुशल थी कि किले में स्त्री एक भी न थी। सब अंगरेजों ने अपना २ परिवार कलकत्ता वा दानापुर में पहिले ही भेज दिया था।

पंचदश परिच्छेद।

दानापुर में यह सम्वाद शीघ्र ही पहुंच गया। जनरल लएड की आंखें खुलीं। पटना के कमिश्नर इत्यादि ने उन से सहायता के लिए सेना भेजने का अनुरोध किया। पर दानापुर में सेना थोड़ी ही थी। जो थी भी वह अंगरेजों के बाल बच्चों की रक्षा में लगी थी नहीं तो उन को बिहार में और कहीं शरण न थी।

जिस दिन दानापुर के देशी योद्धा आरा चले गए थे उसी दिन पटना-विभाग के अंतर्गत बेतिया राज्य के निकट वाले सुगौली नामक स्थान में एक अश्वारोही दल ने बिगड़ कर सेनाध्यक्ष और उन के कुटुम्ब तथा अन्य अंगरेजों के प्राण ले डाले थे। यह रिसाला सुशिक्षित और प्रशंसित भी था

---

*क्या कहते हो, तुम्हारी बातें समझमें नहीं आतीं, पास आके कहो। अनु॰

इस से पटना तथा और २ स्थान के अंगरेज कर्मचारियों को पदाती विद्रोहियों से अधिक इस का भया था क्योंकि जहां पैदल सिपाही चार दिन में पहुंचते वहां इस के सवार एक ही दिन में जा सकते थे।

दानापुर में सिक्ख सेना भी थी। जनरल साहब ने सिक्ख और अंगरेजों को मिला के चार सौ से कुछ अधिक सेना आरा को भेजी। कुछ अंगरेज अपनी इच्छा से भी उस के साथ हो लिए। जिस दिन आरा के दुर्गवासियों पर सिपाहियों ने आक्रमण किया था उस के तीसरे दिन दानापुर से सेना भेजी गई।

दानापुर से आरा को दो रास्ते गए हैं एक तो वही जिस से सिपाही लोग गए थे औ दूसरा जलपथ। गंगातट से आरा अनुमान पांच कोस पर दक्षिण ओर है।

इस सेना के अध्यक्ष कप्तान डनबार साहब नियत हुए, और, दानापुर में स्टीमर था उसी पर दल के सहित चढ़ कर आरा को चले। दानापुर और पटना के बहुत से साहब, मेम और बाबा लोग तट पर खड़े हो कर देखने लगे इन सब को पूरा विश्वास था कि यह सेना जीत ही के आवेगी इस से जिस समय स्टीमर खुला उस समय असंख्य गौरांगों ने टोपी और रूमाल नचा २ कर 'हिप हिप हुर्रे' का शब्द किया और नौकावालों ने भी बड़े चाव से इस का उत्तर दिया था।

स्टीमर दो बजे आरा के सम्मुख आया। उतरने में तथा योद्धाओं को श्रेणीबद्ध करने में भी विलम्ब हुवा इस से चलने का उद्योग करते २ सांझ हो गई।

बीच में छोटा सा गांव मिला जिस में दो एक साधारण सी दुकानें और दोही चार अहीरों के घर थे। उन्हें गोरे लूटने लगे ग्रामवासिनी मारे डर के छिपने लगीं पर डनबार साहब ने बचा दिया।

और किसी ओर बस्ती का चिन्ह न देख पड़ता था वर्षाऋतु के कारण गंगाजी बाढ़ पर थीं, कहीं २ कगार फट पड़े थे। तीर पर के वृक्ष गिर गए थे। मत्स्यभक्षी पक्षी जल पर मंडला रहे थे। अन्य जाति के पखेरू घोंसलों को जा रहे थे। आकाश में मेघ न थे इस से सन्ध्याकालीन सूर्य के प्रकाश से गगनमण्डल की नीलिमा निखरी हुई थी। गांव के निकटवाले आम्र-कानन तक गंगाजल फैला हुवा था। पानी कुछ घट गया था। वृक्षमूल में उस का चिन्ह देख पड़ता था। वृक्ष पर मैना और काक बैठे थे।

वहां से आरा पांच कोस था। यदि सब लोग शीघ्र २ चले जाते कहीं ठहरते नहीं तो आधी रात तक पहुंचते। क्योंकि मार्ग दूर न होने पर भी सुगम न था, कुछ दूर बालू पर चलना था। बहुत दूर तक सड़क टूटी फूटी थी, बीच में कुंवर सिंह के सपक्षियों का डर भी था, समय रात्रि का पद पद पर विपद का सामना था पर डनबार साहब ने चलनेही की ठान दी।

अंगरेज और सिक्ख सैनिक * अपने भाइयों को काल के गाल से निकाल लाने को चुपचाप शीघ्रगति से आगे बढ़े, देखते२ सूर्य्यदेव अस्ताचल को सिधार गए। शुक्लपक्ष तो था पर तिथि चतुर्थी थी उस के चन्द्रमा का प्रकाशही कितना ? तो भी डनबार साहब चले ही गए। आगे बस्ती देख पड़ने लगी शत्रु भी कोई न मिला रास्ता भी कुछ अच्छा था। उस समय सेनापति ने कहा—कुच डर नई है। इतना डूर आ गया लौटने सकटा नई।

सब चलते २ गांगी नामक नाले पर पहुंचे उस पर पुल था उसे देख के लोगों को संदेह हुआ क्योंकि सब जानते कि पुल कुंवर सिंह ने तुड़वा दिए होंगे। इस से किसी २ ने कहा—हमारे डुबो देने के लिये शत्रुओं ने यह धोखे का पुल बनाया हो तो क्या आश्चर्य्य है ?—पर डनबार साहब बोले—डुशमन हमलोगों का आने का कबर पाटा टो रास्ता में जुरूर मिलने सेकटा।

इस समय चन्द्रमा अस्त हो गया। इस से जो थोड़ा सा प्रकाश था वह भी न रहा। समय अनुमान दस बजने के हो गया। स्टीमर से उतर कर अभी तक अन्न से भेंट न हुई थी। इस से सेनापति ने खड़े खड़े बिसकुट खाने और थोड़ी सी ब्रांडी पीने की आज्ञा दी। दो एक अंगरेजों ने उस समय उन से कहा—अब राट को आगे जाना टीक नईं हाय—एईं टैरें—डुशमन लोग बौट हाय राट को उस से नई बचने सकटा—इस के उत्तर में डनबार साहब मुंह लटका के बोले—आरा टीन माइल हाय यहां काए को टैरेगा ? राट को यहां रहने से हामलोग बलबट बचने सकटा लेकिन किला का सायब लोग जो राट को मारडाला जाय तो हाम डानापुर में मुंह डिकाने सकेगा नईं—यह सुन कर किसी ने कुछ उत्तर न दिया। आरा जाना निश्चित हुआ।

---

* भदवरवासी बाबू विश्वेश्वर सिंह कहते थे कि सिक्ख न थे। प्रकाशक।

पुल पर घंटे भर ठहर के आगे का रास्ता लिया। जहां पर सामने शत्रुओं के मिलने की सम्भावना हो वहां थोड़ी सी सेना पहिले भेज कर समाचार जान लेना चाहिए पर डनबार साहब ने यह नीति भूल कर सब को एक साथ आगे बढ़ने का हुक्म दे दिया और आगे २ आप हो लिए। पुल के उस पार लम्बी चौड़ी सड़क थी उस के दोनों ओर चौड़ी गहिरी नाली थी, अन्धेरा भी थोड़ा न था। आम्रकानन दूर तक चला गया था और बाईं ओर एक छोटा सा मन्दिर था। सेना राजपथ पर आई उस के चलने का शब्द अन्धकार की निस्तब्धता में सुनाई देने लगा। इतनेही में एक बन्दूक की आवाज़ हुई। और नाली में से धुएं की धार दिखायी दी तथा कप्तान डनबार साहब का मृतक शरीर धरती पर गिर पड़ा। क्षण ही मात्र में दोनों ओर से अंगरेजी सेना पर गोलियों की वर्षा होने लगी। अन्धेरे में अंगरेजी सेना मरने लगी।

आरा के क्षुद्र द्वितल गृह में छिपे हुए अंगरेज यह शब्द बड़े मनोयोग से सुनते और समझते थे कि विद्रोहियों को मारते हुए हमारे सहायकगण आ रहे हैं।

अंगरेज साहसी बड़े होते हैं मरने को नहीं डरते पर एक बार शत्रु के द्वारा आक्रान्त हो जाने पर फिर युद्धक्षेत्र में नहीं ठहरते। उत्साह भंग हो जाने पर आश्वास वाक्य नहीं सुनते। आस्ट्रेलिया के किसी जंगली प्रदेश में एक बार प्रायः चार सौ अंगरेजों ने पांच सौ असभ्य मावरी जातिवालों पर चढ़ाई की। अंगरेजों के पास तोप बन्दूक आदि सब शस्त्र थे और मावरियों के पास केवल थोड़ी सी पुरानी बन्दूकें थीं उन्हीं ने वृक्षों की डालों और गारे का प्राचीर बनाया था, उस के पीछे छिपे हुए थे, दिन भर अंगरेज लोग उस के ऊपर और भीतर गोली चलाते रहे और वे गढ़े खोद २ कर प्राण बचाते रहे, जब प्राचीर का बहुत सा भाग तोप से उड़ गया और सेना के लिए भीतर घुसने का मार्ग खुल गया उस समय सेनापति ने अग्रसर होने की आज्ञा दी। अंगरेजों का दल जय शब्द करके प्राचीर में प्रविष्ट हुवा उसी समय पांचों से मावरी विकट चीत्कार करके टूट पड़े और लगी गोलियां बरसाने। बन्दूकें अच्छी न थीं उन से धुवांही बहुत निकलता था पर अंगरेज मावरियों की गरजने ही से सूख गए और समझे कि अगणित शत्रुओं का सामना है इस से ऊर्ध्व श्वास से पलायन किया मावरियों ने पीछा कर के बहुत से योद्धाओं

और अध्यक्षों को मार गिराया। फिर अंगरेज सेनापति किसी प्रकार न ठहर सके। यह घटना अंगरेजोंही के इतिहास में वर्णित है।

कप्तान डनवार साहिब के मरने पर सेनापति का भार लेने को कोई न रहा। फिर सैनिकगण किस का कहा मानते इस से जहां जिस के सींग समाए भाग खड़ा हुवा। कुछ लोग मन्दिर में जा छिपे, कुछ आमों के बन में जा घुसे, कुछ एक गढ़े की शरण में जा गिरे। और कहीं रक्षा का स्थान भी न था विद्रोही लोग अन्धकार में छिप कर और वृक्षों पर चढ़ २ कर अंगरेजों का बध करने लगे। अंगरेजों को हक्की बक्की भूल गई। बन्दूकें दागते थे पर व्यर्थ, शत्रु तो कहीं देखही न पड़ते थे। इस से बहुत से अंगरेज सजातियों ही के हाथ से यमपुरी को पधार गए।

केवल सिक्खों ने साहस नहीं छोड़ा। कुछ दूर जा के पीठ में पीठ सटा के ठहर रहे और जिधर से शत्रुभय था उधर को भुशुंडी ले २ कर डट गए। इस रीति से प्रभात की प्रतीक्षा करने लगे।

जो अंगरेज अपनी इच्छा से आए थे उन्हों ने भी अच्छी वीरता दिखलाई। दो चार साहसियों ने बचे खुचे सैनिकों को एकत्र भी किया। शत्रु लोगों ने रात भर गोली बरसाई।

प्रातःकाल वह स्थान बड़ाही भयानक देख पड़ने लगा। राजमार्ग, आम्र-कानन, मन्दिर, प्रणाली जहां देखो मुर्दे ही दृष्टि पड़ते थे। उन में अंगरेज ही अधिक थे, जो जीते बचे थे वे स्टीमर में जाने का उद्योग कर रहे थे। विद्रोहियों के गरजने और बन्दूकों के छूटने की ध्वनि से मिला हुवा घायलों का कराहना सुन पड़ता था। और चारों ओर बिगड़े हुए योद्धा फिर रहे थे।

जिन अंगरेजों ने रात्रि को बचे बचाए साथी एकत्रित किए थे उन्हों ने सेना का भार ग्रहण किया। सिक्ख भी जैसे खड़े थे वैसेही आगे बढ़े। विद्रोहियों ने सब को घेर लिया। अंगरेजों को अग्निवर्षा सहन करने की शक्ति न रही। इस से उन का गोल फूट गया और भगदड़ पड़ गई, पर सिक्खों की श्रेणी भग्न नहीं हुई।

अंगरेज भागने पर भी न बचे सिपाही उन्हें खदेड़ २ कर मारने लगे। जो अंगरेज भागकर गांव में छिपे थे उन्हें ग्रामवासियों ने लाठी से भुरता कर दिया वरंच स्त्रियों तक ने काड़ी झाड़ी फेंक मारी।

एक साहब गंगाजी की ओर जा रहे थे वे बड़े शिकारी थे और उन के

साथ एक गोरा भी था उस के पांव में गोली आ लगी इस से गिर पड़ा और शिकारी साहब से बोला—टूम बाग जाओ। हाम टो बचने सेकटा नईं—साहब ने फिर कर बन्दूक चलाना चाहा पर विद्रोही उन का शिकारीपन जानते थे हट गए इस से इन्हों ने अपने घायल साथी को उठा कर आगे का मार्ग लिया। जब विद्रोही पास आ जाते थे तब साहब उस गोरे को लिटा के उन का सामना करते थे जब वह भाग जाते थे तब यह फिर उसे लेकर आगे बढ़ते थे इसी रीति से गंगातट तक आए। इन की दया और वीरता पर बहुतों को आश्चर्य हुवा था।

स्टीमर में सौ से भी थोड़े लोग लौट कर आए थे केवल पचास जनों को छोड़ के और सब घायल थे। यह स्टीमर जब दानापुर पहुंचा तो अगणित लोग घाट पर राह देख रहे थे पर जब वह घाट पर आ लगा और किसी ने उस में से आनन्दध्वनि न की तब तो मार्ग प्रतीक्षकों के विषाद की सीमा न रही क्योंकि इन में से बहुतेरे हत और आहतों ही के बन्धुवर्ग थे।

षोडश परिच्छेद।

आरा में बाबू कुंवर सिंह का प्रभुत्व हो गया था पर किला उन का जगदीशपुर ही में था जिस के भीतर परिवार भी रहता था। उस बड़े गढ़ के पिछवाड़े बड़ा भारी जंगल था। हारने पर आश्रय लेने के लिये उस से उत्तम स्थान मिलना सहज न था। वहां के महल और किले में कई मास पहिले से गुप्त रूप से बहुत सी आवश्यकीय सामग्री संचित कर ली गई थी। परम हितैषी युवन सिंह से बाबू साहब ने कहा था—"भाई रसद का क्या प्रबन्ध होगा? कम से कम इतना अन्न तो इकट्ठा कर लेना चाहिये जो बीस सहस्र योद्धा छः मास तक खा सकें इतना अन्न शीघ्रता से कहां से आवेगा?" इस के उत्तर में युवन सिंह ने मुसकिरा के कहा था—चील्ह के घर में मांस की क्या कमी रहती है?

कुंवर सिंह ने फिर मुसकिरा के उत्तर दिया था—जब चील्ह झपट मारती है तो कौए को खबर हो जाती है। फिर कौवा उस को दिक करता है। सावधान रहना जिस में कौवे को खबर न लगे।

युवन सिंह ने कहा इस बात का डर न कीजिए।

जगदीशपुर पर कुंवर सिंह का अचल अनुराग था पुरखों की देहली वहीं

थी। आरा के आस पासवाले लोग एक गीत में गाते थे 'जगत में जगदीशपुर सम ठौर नाहिंन आन' बाबू साहब जिस समय अपनी अट्टालिका और उस के सन्मुखवाले सरोबर, तथा दुर्ग के प्राचीर एवं दूसरी ओर विशाल बन देखते थे उस समय वह भी प्रेमपूरित स्वर से यही गीत गाने लगते थे।

अट्टालिका के भीतर एक प्रकोष्ट में रानी और लक्ष्मी बैठी थीं। दिन भर बादल घिर रहेथे और संध्या समय कुछ वृष्टि भी होगई थी। सूर्य अस्ताचल की यात्रा को उद्यत थे। बरसा के जल से धुले हुए वृक्षों के पत्तों पर वारिबिंदु शोभा दे रहे थे उन पर दिवाकर का प्रकाश और भी सुंदर दिखाई देता था, नाना जाति के पक्षी वृक्षों की शाखाओं पर बैठे पर भाड़ रहेथे। ऐसे समय में रानी पलंग पर विराज रही थीं और लक्ष्मी उठ के खिड़की के पास खड़ी हुई थीं सायाह्न सूर्य की अरुण आभा से उनका मुख और भी दीप्तिमान हो गया था।

लक्ष्मी खड़े २ बन की शोभा देखने लगी फिर मुंह फेर के रानी की ओर देखा और मुसकिरा कर यह गीत गाया कि—

"सैयां नहीं आए बरसि गई बदरा। *

संगीत लहरी प्रकोष्ट के मध्य तरंगित होने लगी लक्ष्मी के कंठ का स्वर कोमल, मधुर और आवेग पूर्ण था। रानी ने कुछ हँस के कहा—यह क्या तरंग आगई ?—

लक्ष्मी ने उत्तर न देकर गाने का तार बंधा रक्खा।

"बड़े २ बूंद बरसि गए बदरा।
भींजे मोर चुनरी भींजे मोर चदरा॥"

रानी ने कहा—तुम्हारा ?—

लक्ष्मी ने कुछ होंठ बिदूर के उत्तर दिया—मेरा काहे को ? जो कहती है उसी का……—

रानी—हमारा कपड़ा तो सूखा पड़ा है!

लक्ष्मी—कपड़े का आंचल देखो! बरसा के जल से न सही तो आंसुओं से भींग रहा है।

रानी—वाह! कैसे सुख के समय गाना सूझा है ?

---

* यह गीत ग्रन्थकार वा अनुवादक का रचित नहीं है विहार की ओर गाया जाता है।

लक्ष्मी—क्यों दुखही काहे का है ?

रानी—वह लड़ाई में गए हैं ऐसे में हमें गाना बजाना चाहिए ?

लक्ष्मी ने वेग के साथ कहा—ऐं ! लड़ाई कैसी ? अंगरेज़ तो भाग गए ! और न भी भागे हों तो क्या डर है, फूलशाह ने कह रक्खा है कि अमर सिंह को लड़ाई में कुछ खटका नहीं है।

रानी—तौ भी डर हई है ।

लक्ष्मी ने कुटिल हास्य कर के कहा—क्यों नहीं ? डर भी तो कई तरह का होता है न, लड़ाई का डर न सही तौ भी यह डर है कि नया पंछी कहीं हाथ से बे हाथ न हो जाय, क्यों न ?

रानी ने कुछ गंभीरता से कहा—हमें इस समय हंसी नहीं सुहाती हंसना हो तो ननद जी के पास चली जाओ।

लक्ष्मी रानी के पास आके खड़ी हो गई। रानी ने न उन की ओर देखा न कोई बात कही। लक्ष्मी अत्यन्त निकट बैठ के और मुंह के पास मुंह कर के गाने लगीं :—

हाहा इतनो मान न ठानि। इत हग फेरि निहारति कस नहिं, भरि बैठी अंसुवानि॥ केहिं तेरो अपमान कियो है, मुख निकसति नहिं बानि। कौने तेरो हियो दुखायो, को तो सों रिसियानि॥ १॥

लक्ष्मी ने बड़े आदर के स्वर में कल झंकार की भांति गान किया। गीत समाप्त होने पर रानी ने कमलनाल सी कोमल बांहैं लक्ष्मी के गले में डाल कर स्नेहपूरित स्वर से कहा—तुम से हार मानी भाई।

लक्ष्मी—हार न मानोगी करोगी क्या ? मैं अमर सिंह तो हई नहीं हूं कि तुम्हारे गले लिपटने से फिसल पड़ूं और आंखें फिराने से आपे में न रहूं, फिर मुझ से कैसे जीतोगी भला।

रानी ने इस का उत्तर न देके कहा—देखो बहिन हमें एक बात का बड़ा दुख है।

लक्ष्मी ने चिंतित होके पूछा—क्या ?

रानी—वह जब मिले तब जी भर के दो बातें न करने पाईं, और पालकी पर चढ़ने के पहिले उन से मिलने का भी जोग न लगा।

लक्ष्मी ने रानी का हाथ छोड़ दिया और खड़े होके कहा—आज हमें बातें नहीं अच्छी लगतीं, गानाही गाना सूझता है—यह कह के स्वर साध कर गाने लगीं :—

जिय की जिय में बात रही। प्रीतम चलन लगी जब सजनी तब हौं कछु न कही ॥ हिय दरकत मुख बचन न आवत जाने मरम वही । प्रभुदयाल वे हंसत सिधारे हौं बिरहागि दही ॥ २ ॥ *

गीत पूरा होते २ लच्मी का गला कांपने लगा। रानी ने देखा नेत्रों से आंसू भी निकल रहे हैं। स्नेह उमड़ उठा अश्रुजल से अधिक रमणियों के हृदय के लिए और बन्धन नहीं है। रानी ने बड़े स्नेह से पूछा लक्ष्मी! रोती क्यों हो ?

लच्मी ने रोते ही रोते मुसकिरा के कहा तुम्हारे आंसू मेरी आंखों में चले आए।

इस पर दोनों जनी गले मिल कर रोने लगीं। इस का कारण क्या था ? किस के जी में क्या बात आ गई ? कौन जाने। दोनों जनी एक साथ रोईं, इस से अधिक मन की बात जानने की क्या आवश्यकता है ?

दूसरे दिन अमर सिंह जगदीशपुर में आनेवाले थे।

सप्तदश परिच्छेद।

जौन सी रूपराशि जगदीशपुर की अट्टालिका को सुशोभित कर रही थी। वही आराके दो पुरुषोंके हृदयमें भी विराजित थी। अमर सिंह युद्धयात्रा के समय रानी का दर्शन न प्राप्त कर सके थे। कुंवर सिंह ने स्त्रियों का आरा में रहना अच्छा न समझ कर जगदीशपुर भेज दिया था। अमर सिंह बहुधा घर में न रहते थे सेना के कामकाज में लगे रहा करते थे। कुंवर सिंह और सब प्रबंध करते थे पर अभी तक सेना का संभार न कर सकते थे। इस से योधागण अवकाश पाते ही स्वेच्छाचारी हो जाते थे। अमर सिंह को रानी का विरह असह्य जान पड़ता था। नई२ गहिरी प्रीति ने उन के हृदय में अधिकार जमा लिया था। पर क्या करें युद्ध के समय आरा से जा भी तो न सकते थे। जिस समय कप्तान डनबार की सेना का नाश हुवा उस समय अमर सिंह ने विचार किया कि अब शीघ्र युद्ध का काम न पड़ेगा इससे दो एक दिन के लिए जगदीशपुर हो आने का ठीक किया और समाचार भेज दिया । रानी की

---

* ये दोनों गीत प्रियवर पंडित प्रभुदयाल जी पांडे के द्वारा अनुवादित हुए हैं।

छबि आठ पहर उन के हृदय में बसती थी। लक्ष्मी से भी बड़ी प्रीति करते थे उन की दशा पर दुःखी रहते थे इस से उन का भी स्मरण किया करते थे।

रानी की चिंता में रहनेवाला दूसरा व्यक्ति रामशरण था। कई वर्ष की बात है कि वह एक बार जगदीशपुर गया था उस गांव से कुछ ही दूर बन में एक छेर नाम नदी है जिस का पानी बहुत अच्छा है। रामशरण उसी बन में भ्रमण कर रहा था। इतने में नदी के तट पर उस ने दो सुन्दरी युवतियों को देखा, रूपवती दोनों थीं पर एक तो अनुपम ही थी। दोनों जनी स्नान कर चुकी थीं पास ही पालकी रक्खी थी उस पर बैठ के चली गईं। दारोगा ने पता लगाया तो जान पड़ा कि वे दोनों बाबू कुंवर सिंह की भ्रातृबधू हैं। एक विधवा है और दूसरी अमर सिंह की स्त्री है। दोनों को विधवा कहें तो भी अनुचित न था क्योंकि उन दिनों अमर सिंह घर से प्रयोजनही न रखते थे।

रामशरण ने जो कुछ देखा उसे भूला नहीं पर उस समय कुछ कर न सका। क्योंकि सिंह के घर में सियार का घुसना सहज न था इस से यही ठीक समझा कि मौक़ा मिलने पर देखा जायगा।

इस बात को कई वर्ष बीत गए। जिस दिन रानी और लक्ष्मी इस बार जगदीशपुर आईं उस दिन कई सवार भी पालकी के साथ थे। बाबू साहब की यहां की सवारी समझ कर लोग आदरपूर्वक मार्ग छोड़ देते थे और दोनों कुलबधू अमर सिंह के देखने की लालसा से खिड़की की दरार से बाहर दृष्टिक्षेप करती जाती थीं, रास्ते में रामशरण घोड़े पर चढ़ा खड़ा हुआ था, उस की आंखें पालकी पर पड़ीं तो 'होश जाता रहा निगाह के साथ। सब्र रुख़सत हुवा एक आह के साथ॥' रानी की भी दृष्टि इस पर पड़ी तो उन्हें इस का देखना बुरा जान पड़ा इस से पालकी की खिड़की बंद कर ली। इस बार रामशरण को किसी से पूछना नहीं पड़ा देखते ही जान लिया। और कुवासना की अगिन में स्वाहा हो गया॥

अष्टादश परिच्छेद।

आरा के अंगरेज और सिक्खों ने कप्तान डनबोर की मृत्यु और उन की सेना के हारने का समाचार पाया। विद्रोही लोग घमंड के साथ कहते थे कि—दानापुर के गोरों को यमपुर भेज दिया—तुम भी अपना भला चाहो तो हार मान कर बाहर निकल आओ नहीं तुम्हारा भी वही हाल होगा—बाहर

निकलने से जो दशा होती वह अंगरेज जानते थे। अब प्राणरक्षा की आशा भी न रही थी पर तौभी जी पर खेल के गढ़ी की रक्षा करने लगे।

मेजर आयर नामक एक सेनापति गाजीपुर जाते थे उन की कुछ सेना जल के मार्ग से जाती थी कुछ स्थल के मार्ग से। उन्हों ने बकसर के निकट आरा के अंगरेजों की दुर्गति का समाचार पाया इस से गाजीपुर न जा कर आरा की ओर चल दिए। रास्ते में सेनासमेत डनबार साहब का वृत्तान्त सुना इस से मार्ग में न ठहर कर शीघ्र २ प्रस्थान किया।

आरा से प्रायः चार कोस पश्चिम बीबीगंज है, वहां विद्रोही लोग उन की राह देख रहे थे। आम, पीपल, कटहल, इत्यादि, वृक्षों से पूरित बड़े भारी जंगल होके रास्ता था उसी के इधर उधर वे ठहरे हुए थे। वहां यदि वे मेजर साहब को घेर लेते तो डनबार ही की सी दशा कर डालते।

दिन ढल गया था इस से बन में बड़ा अन्धकार हो रहा था वहां जब आयर साहब पहुंचे तो जङ्गल में से भेरी का शब्द सुनाई दिया उसी को सुन के इन्हों ने रक्षा पाई।

मेजर साहब ने देखा कि बन में शत्रु हैं। यदि भेरी का शब्द न सुनते तो यह शंका न होती और अनजाने मृत्यु के मुख में चले जाते पर अब सावधान हो गए इस से सेना के दो भाग करके एक को जङ्गल के नुक्कड़ पर रक्खा एक को कुछ पीछे, इस पीछेवाले दल का भार उन्हों ने अपने ऊपर लिया और अगले का दूसरे सेनाध्यक्ष को सौंप दिया। आगेवाली सेना का विद्रोहियों से युद्ध होने लगा वे वृक्षों की आड़ से अंगरेजों को मार चले।

आयर साहब ने आगेवाली सेना को धीरे २ पीछे हटने की आज्ञा दे रक्खी थी तदनुसार वह हटने लगी तो विद्रोहियों ने जाना कि हार गई है इस से जङ्गल से निकलना आरम्भ कर दिया।

इतने ही में मेजर साहब ने शीघ्रता से कानन में प्रवेश किया।

विद्रोही बहुत से थे अतः उन के द्वारा कितने ही अंगरेज मारे गए। पर जब आयर साहब एकाएकी टूट पड़े तब भागने के सिवा कुछ न बन पड़ा उसी समय बन के बाहरवाला दल भी आ मिला इस से मेजर साहब सहज में जंगल पार हो गए।

विद्रोहियों ने वहां भी पीछा किया मेजर साहब ने देखा कि उन का दल बहुत अधिक है जीतना सहज न होगा तौभी साथ में जो दो एक छोटी२

तोपें थीं उन के छोड़ने का आदेश कर दिया पर उन के गोलों से शीघ्रता के साथ कुछ फल न दिखाई दिया तब मेजर साहब ने एक और युक्ति की। उन के साथ कई बोरे गोरखपुरी पैसों के थे उन्हें काम में लाने का विचार किया।

इतने ही में दूसरी ओर से एक सवार काले घोड़े पर चढ़ा हुआ वेगपूर्वक आता दिखाई दिया। घोड़ा पसीने से भींग रहा था, मुंह से फेन निकलता था। सवार दोनों हाथ में तलवार लिए था। मुंह में बागडोर थाम्हे था। वह था अकेला ही पर निर्भय रूप से अंगरेजी सेना में आ घुसा।

जैसे तीक्ष्ण शस्त्र मांस में प्रवेश करता है, अच्छी नौका का तलदेश पानी में प्रवेश करता है, वैसे ही अश्वारोही ने गौरांग सेना में प्रवेश किया कोई उसे रोक न सका जो सामने पड़ गया कट के गिर पड़ा।

मेजर आयर भी घोड़े पर थे। देखा कि सवार तोप की सीध पर आ रहा है इस से अपना घोड़ा भी उधर ही को बढ़ाया। सवार ने आते ही इन पर तलवार चलाई, साहब ने भी सामना किया पर इन की तलवार टूट गई और अश्वारोही का खड्ग इन के घोड़े की ग्रीवा में तैर गया, घोड़ा गिर पड़ा, साहब कूद पड़े।

अश्वारोही ने फिर उधर दृष्टि न की, एक मशाल लिए हुए गोलन्दाज को काट डाला। और एक तोप के रंध्र में लौहखंड ठोंक के उसे बेकाम कर दिया।

आयर साहब ने धरती पर खड़े २ पिस्तौल चलाई पर वह अश्वारोही के बकतर में लगतेही व्यर्थ हो गई। अश्वारोही ने अपना मार्ग लिया।

जिस तोप में पैसों के बोरे भरे थे वह सवार की दृष्टि में नहीं पड़ी थी उस में मेजर साहब ने अपने हाथ से आग देदी, इस से विद्रोही आरा की ओर भाग खड़े हुए।

कुछ आगे बढ़ने पर आयर साहब ने देखा कि एक (बनास) नदी बड़े वेग से बह रही है और उस का पुल टूटा है। अंधेरा हो आया है इस से पार उतरने का उपाय सोचने लगे।

इसी अवसर पर एक सैनिक ने मेजर साहब के सम्मुख एक दूत को लाके हाजिर किया। साहब ने पूछा—टुम कौन हाय ?

उस ने कहा—हुजूर मैं आरा का दारोगा रामशरण लाल हूं मैं हमेशा से कम्पनी बहादुर का नमकखुवार रहा हूं।

साहब—टो क्या मांगटा है ?

रामशरण—हुजूर रास्ता ढूंढ़ रहे हैं वही बतलाने को हाज़िर हुवा हूं। यहां से नज़दीकही दूसरा पुल है उसे बागियों ने नहीं तोड़ा, हुजूर उस पर से तशरीफ़ ले जायं।

आयर साहब उसे देख आए फिर सेना को उसी के द्वारा उत्तीर्ण किया।

रास्ते में रामशरण ने कहा—खुदावन्द गुलाम को भूल न जाइएगा।

साहब—नहीं टुम को बकसीस मिलेगा—फिर कुछ काल के उपरांत पूछा—वेल डरोगा ! टुम जानटा है वो सवार कौन है ? जो बकटर पहिनटा।

रामशरण ने उत्तर दिया—हुजूर अमर सिंह वही है।

साहब—वोह ! कुआरसिंह का बाई है ?

राम०—जी हुजूर।

रात को मेजर आयर साहब आरा के अंगरेजों से आ मिले।

कुंवरसिंह जगदीशपुर चले गए थे। इस से आरा फिर अंगरेजों के अधिकार में आगया॥

ऊनविंश परिच्छेद।

बीबीगंज की लड़ाई में अमरसिंह बराबर नहीं उपस्थित रहे। युद्ध समाप्त हो जाने पर आ के देखा कि जीत अंगरेजों की रही। इस से सिपाही साहस हीन हो गए हैं। अब न ठहरेंगे, केवल मेरेही आने की राह देखते हैं। जिस दिन इनको जगदीशपुर में अवाई थी उस दिन नहीं जा सके। दूसरे दिन जाकर सुना कि दोनों बहू आरा गई हैं *।

अमरसिंह ने अचंभे में आके पूछा—सो क्यों ?

जिस ने यात्रा का सम्वाद दिया था उस ने कहा लाल बाबू साहब ने बुला भेजा था।

अमर—बुलाने कौन आया था ?

कई जने थे, साथ में रामशरण दारोगा भी थे।

---

* इस ऐतिहासिक उपन्यास में रामशरण एवं लक्ष्मी की कथा तथा कुलबधुओं के आरे जाने की कथा सम्पूर्णत: औपन्यासिक है। ग्रन्थकार ने क्षत्रियरमणी का वीरता के साथ प्राणपण से सतीत्व रक्षा करना दिखाने के लिये इन कथाओं को लिखा है। प्रकाशक।

रामशरण का नाम सुनके अमरसिंह को और भी आश्चर्य हुवा। दादाजी उस को इस काम को आज्ञा कभी न देंगे। यदि वह बहुओं को बुलाया भी चाहते तो क्या हमसे न कहते। ऐसे समय आरा में स्त्रियों का कामही क्या है।

ऐसी २ बातें सोचते हुए अमर सिंह उन्हीं पैरों आरा को लौट पड़े। वहां के पुररक्षक से पूछा क्या यहां स्त्रियां आई हैं ?

उस ने बड़े विस्मय के साथ कहा नहीं तो,—अमर सिंह उसी समय कुंवर सिंह के पास गए वहां बहुत लोग बैठे थे इस से एकांत में भेंट की। कुंवर सिंह ने इन की चेष्टा देख के शंकित भाव से पूछा—क्यों, क्या है ?

अमर—रानी और लक्ष्मी जगदीशपुर में नहीं हैं—और कभी यह बड़े भाई के सामने स्त्री का नाम न लेते पर इस समय लज्जा जाती रही थी।

कुँवर—ऐं। तुम क्या कहते हो ?

अमर सिंह का शरीर थर २ कांपता था, बोले कल रामशरण कई लोगों के साथ वहां गया था और आप का नाम ले के उन्हें बुला लाया था।

कुँवर सिंह यह बात सुनते ही सूख गए। प्राण से प्यारे भाई की मृत्यु के समाचार से भी इतने व्यथित न होते। वे रामशरण का चरित्र जानते थे पर यह न समझते थे कि इतना साहस करेगा।

बड़ी देर तक चुप रहने के उपरान्त बाबू साहब ने तलवार उठा ली और बाहर जाने को उद्यत हुए।

अमर ने पूछा कहां जाते हैं ?

कुंवर सिंह ने कहा—बाहर।

बाहर न जाइए—कह कर अमर सिंह ने उन का हाथ पकड़ लिया। वह बाहर न गए, वहीं से पुकारे—युवन सिंह।

युवन सिंह पर कुंवर सिंह का बड़ा स्नेह था, कोई बात उन से न छिपाते थे।

युवन सिंह आए। कुंवर सिंह ने सब वृत्तांत सुना के कहा—रामशरण को जीता पकड़ लाना तुम्हारा काम है।

युवन सिंह—जो आज्ञा—कह कर बाहर जाने लगे।

कुंवर सिंह ने कहा—तनिक ठहरो, यह जानते हो यहां उस का कौन है ?

युवन—हां, उस की स्त्री और बहिन है।

कुंवर—उन्हें ले आओ।

अमर ने कहा—क्यों ?

कुंवर—क्यों क्या पूछते हो ?

अमर—नहीं दादा ! उन के बुलाने का काम नहीं है, अपराध रामशरण ने किया है। स्त्रियों को कष्ट देना राजपूतों का धर्म नहीं है।

कुंवर सिंह चुप हो रहे। युवन सिंह ने कहा—अमर सिंह ठीक कहते हैं। रामशरण को उचित दण्ड दे देंगे। यह बात विदित भी न होनी चाहिए। सब से यही कह देना चाहिए कि वह अपने पिता के घर गई हैं। रामशरण राजपूतमहिलाओं का करही क्या सकता है।

कुंवर सिंह अपने होंठ चबाने लगे। अमर सिंह भी कुछ कहे सुने बिना बाहर चले गए। युवन सिंह भी उठ के चल दिए।

अमर सिंह ने बहुत खोज किया पर रामशरण का पता न लगा। सन्ध्या को बीबीगंज में युद्ध ठन गया। बन्दूकों का शब्द सुनकर अमर सिंह ने विचार किया कि संसार की चिन्ता में पड़ कर कर्तव्यसे विमुख होना उचित नहीं है इस से समरचेत्र को प्रस्थान किया।

विंश परिच्छेद।

आरा से अनुमान तीन कोस की दूरी पर पूर्व की ओर वन में एक ईंटों का बना हुवा घर था। वह बाहर से टूटा फूटा सा देख पड़ता था पर भीतर दो तीन साफ कमरे थे। उन्हीं में रानी और लक्ष्मी अवरुद्ध थीं।

उस में दो स्त्रियां और भी थीं, एक बुड्ढा दूसरी प्रौढ़ा। प्रौढ़ा पर पहिले रामशरण का स्नेह था पर इस समय वह दूती का काम करती थी। इन दोनों को देख के रानी और लक्ष्मी ने भागने का विचार किया तब प्रौढ़ा ने अभिप्राय बूझ के कहा—भाग के कहां जावगी ? दरोगा जी के मारे चिरई तो बाहर जाही नहीं सकती—इस समय रानी और लक्ष्मी खड़ी थीं, दोनों स्त्रियां भी उन के सन्मुख खड़ी थीं, बाहर का द्वार बन्द था। रानी स्थिर और भयरहित थीं केवल मुख पर कुछ मलिनता थी। लक्ष्मी का मुख सूखा हुवा था तथा रोते २ आंखें लाल हो गई थीं और पलकें सूज आई थीं।

प्रौढ़ा कह रही थी तुम रोती काहे हो ? ऐसे रसिया के घर आई हो

कि जनम सुधर जायगा, तुम्हारे गंजेड़ी भंगेड़ी मरद का जाने मेहरिया का कादर।

रानी ने कुछ उत्तर न दिया।

प्रौढ़ा ने लक्ष्मी से कहा—तुम क्या कहती हो ? अब की तुम को भी जान पड़ेगी कि पुरुषन के साथ कैसा सुख मिलता है।

रानी ने कहा—तुम बाहर चली जाव।

प्रौढ़ा बोली—काहे को ? फिर तुम्हारी टहल कौन करेगी? बहिनी तुम्हहीं नहीं एक दिन हम को भी दरोगा साहब चाहते रहे—छिछि छिछि।

यह सुन के रानी का मुंह लाल हो गया। पर कुछ कहा नहीं दूसरी ओर देखने लगीं।

प्रौढ़ा और भी हंस कर कहने लगी—आहा! मान करती है न! पर रानी हम को तो ऐसे दरसन की साध नहीं है न। दरोगा जी आवें तब रूठो, वे ही देख के परसन्न होंगे।

बुढ़ा ने भी कहा—उदास काहे को होती हो बच्ची! यह सच कहती है। इहां जो कोई आती है पहिले तुम्हारी ही नाईं मुड़फोरी अपने ही करती है, पर पीछे सुधरी हो जाती है, इसी से कहती हूं कुछ खा पी लो नहीं तो मुंह और भी सूख जायगा दारोगा जी हम पर रंज होंगे।

रानी हट गईं पर लक्ष्मी झुंझला उठीं बुढ़िया को ढकेल दिया वह गिर पड़ी और गालियां देने लगी।

इतने ही में किसी ने बाहर के किवाड़े खटखटाए। प्रौढ़ा ने द्वार खोल दिया, रामशरण भीतर आया और आते ही बोला। तुम दोनों बाहर जाव, दोनों चली गईं। दारोगा ने द्वार मूंद लिया।

लक्ष्मी डर के मारे रानी से सट के खड़ी हो रहीं रानी रामशरण की ओर फिर कर खड़ी हुई दहिना हाथ अंचल में छिपाए हुए।

रामशरण ने थोड़ी सी मदिरा पी थी हाथ में बोतल लिए था पलंग पर बैठ कर कहने लगा मुझे अफ़सोस है कि आप लोगों को जगदीसपुर के से महल में नहीं ठहरा सका पर वहां आप को आराम ही क्या था ? यहां देखिएगा कैसे मजे में गुज़रती है। यह कह कर फिर मद्यपान किया।

लक्ष्मी कांपने लगीं। रानी बोलीं—हम राजपूतिन हैं हम को क्या डर है, पर तुम्हारा काल आ पहुंचा है

रामशरण ने कहा—हमें मारनेवाला है ही कौन कुंवर सिंह ख़ौफ़ के मारे भाग गए, और अमरसिंह क़त्ल हो गए फिर क्या अंदेशा है? बिहतर है कि अब आप भी रंज न करें हमें खिदमत में क़ुबूल फरमावें।

रानी ने उत्तर दिया—क्यों वृथा की बातें बकते हो? वह क़तल हो जायंगे तो तुम्हें इन करतूतों का फल कौन देगा?

रामशरण ने हंस के कहा—हम तो अपने कामों का फल पा चुके अब और खाहिश नहीं है—यह कह कर फिर एक प्याला पी गया और लाल २ लालच भरी आंखों से दोनों वीररमणियों को देखने लगा। रानी के मुख पर अहंकार का चिन्ह प्रकाश कर रहा था और खड़े होने की धज अपूर्व शोभा दे रही थी। इस सौंदर्य पर विमूढ़ हो कर रामशरण फिर बोला—क़सम खुदा की आप का सा हुस्न मेरी नज़र से आज तक नहीं गुज़रा है। हैं आप की साथिन भी हसीन पर आप को कहां पाती हैं सच कहा है 'बिसियार खूबां दीदअम् लेकिन तु चीज़े दीगरी'।

रानी ने जब तक इसे मद्यपान करते न देखा था। तब तक निर्भय थीं पर अब कुछ डर सी गईं क्योंकि एक तो बलिष्ट पुरुष दूसरे उन्मत्त फिर शंका क्यों कर न होती।

रामशरण अपनी धुन में फिर कहने लगा—मैं आप से निहायत खुश हूं आप का गुस्सा और गुरूर खूबसूरती को दूना किए देता है। अगर आप मर्द होतीं तो कुंवर सिंह को तरफ़ से खूब ही लड़तीं। पर शर्म आप को नाज़ेबा है हम पर मिहरबानी करके इसे दूर कीजिए 'बड़ा सितम है तुम्हारे हिजाब से होता'।

यह कह कर रामशरण ने मद्यपात्र धरती पर धर दिया और खड़े होकर बाहें फैला के रानी को आलिंगन करना चाहा। लक्ष्मी मारे डर के रानी से लिपट गईं। रानी ग्रीवा टेढ़ी करके दहिने हाथ में तीक्ष्ण छुरिका ले के खड़ी हुईं और शुद्धस्वर से बोलीं—बस आगे मत बढ़ना। एक पग भी बढ़ाया तो यही छूरी तेरे कलेजे में रख दूंगी। नीच! तेरे मारने में मरदों का कौन काम है।

रामशरण डर कर पीछे हट गया। उस का पांव लगने से बोतल लुढ़क गया, दारू गिर गई और सारे घर में दुर्गन्धि छा गई।

कुछ काल के उपरान्त रामशरण सावधान होके बोला—ऐ है यह तमाशा

तो नया देखने में आया। पर तुम्हारी सी परीजादों को छुरी वगैरह रखने की क्या ज़रूरत है? "तलवार से उश्शाक़ को मारा नहीं करते। क्यों खंजरे आब्रू का इशारा नहीं करते।" (कटाक्ष बाण से मैं मरता हूं)।

इसी अवसर पर द्वार पर प्रचण्ड आघात लगा और किवाड़े घोर शब्द के साथ गिर पड़े एक दीर्घकाय पुरुष घर में घुस आया। वह रामशरण की ओर देखा भी नहीं केवल युवतियों से कोमल अथच गम्भीर स्वर में कहने लगा—तुम बाहर निकल चलो—

रानी ने विस्मित होके पूछा—आप कौन हैं?

आगन्तुक ने कहा—मैं हूं तुम्हारा लड़का फूलशाह। मेरे साथ बेखौफ़ चली चलो।

फूलशाह को कौन न जानता था। रानी और लक्ष्मी उन के साथ हो लीं। चलते समय फूलशाह ने रामशरण से कहा—मुझे गुनाहगारों को सज़ा देने का इख़्तियार नहीं है लेकिन याद रक्खो बचा कुंवर सिंह और अमर सिंह तुम्हें कभी मुआफ़ न करेंगे।

बाहर पालकी रक्खी थी उस पर चढ़ते समय रानी ने पूछा—पिताजी हमें कहां ले चलोगे?

फूलशाह ने उत्तर दिया—जगदीशपुर।

इक्कीसवां परिच्छेद।

रानी और लक्ष्मी जगदीशपुर आईं। कुंवर सिंह सेना समेत वहीं थे। उन्हों ने दोनों बधुओं सहित फूलशाह के आगमन का समाचार पा कर भेंट की और पूछा—प्रभो! इन्हें हम घर में क्यों कर ले सकते हैं?

फूलशाह ने उत्तर दिया—मेरे हुक्म से ले जाओ, कोई शुबहा न करना, इन्हें छूने की मजाल किसी को नहीं है, यह राजपूतों की बहू बेटियां हैं देवीजी की तरह पाक और बेख़ौफ़ हैं! कुंवर सिंह फिर कुछ न कह सके।

अमर सिंह स्त्री से मिलने आए। स्नेह सम्भाषण कुछ न कर के पूछा—सच बतलाओ क्या हुआ?

रानी ने कहा—जो हुआ सो तो आप जानते ही हैं। हम अनजाने उस पापी के हाथ पड़ गई थीं।

अमर—फिर?

रानी—फिर फूलशाह ने हमारी रक्षा की। राजपूतिन प्रान से अधिक अपने धर्म को समझती हैं। हमारे धर्म में बाधा पड़ती तो हम इतनी देर न जीतीं आप से मुंह दिखाने भी न आतीं।

अमर सिंह ने संदिग्ध भाव से कहा—तुम ने धर्म बचाया क्यों कर ?

रानी—दो दिन बन में कैद रहीं, वहां न कुछ खाया न सोई, दिनरात सावधानी से रक्षा की।

अमर ने मृदुस्वर से कहा—यही बात फूलशाह भी कहते थे। वह तो मानो अन्तर्यामी हैं।

रानी बोली—अन्तर्यामी न होते तो हमारी विपत कैसे जान लेते। हमारे जीने को कुछ आसरा थोड़ी थी। यह देखिए।

छुरी निकाल कर सामने रख दी।

अमर सिंह ने उसे देखा, नींद भूख सहने के कारण रानी का सूखा हुआ मुंह भी देखा, इस से संदेह जाता सा रहा।

इस समय अभिमान से रानी की आंखें डबडबा रहीं थीं। बोलीं—मेरी बात का विश्वास नहीं करते ? आप मेरे देवता हो, आप के दरसन की साध मिटी नहीं है इसी से मैंने प्रान बनाए रक्खे थे। मैं जानती हूं कि धर्म के साथ ही प्रान रह सके तो रखना चाहिए—इस बात पर सन्देह करिएगा तो जानिएगा—यह कहते कहते रानी का गला भर आया और छुरी उठा कर छाती में मार लेने की चेष्टा की।

अमर सिंह ने हाथ पकड़ लिया। हृदय में प्रेम उछल उठा। रानी को हृदय से लगा कर अश्रुपूर्ण नेत्रों का चुम्बन किया। रानी भी आनंद और अभिमान से बारम्बार अश्रुवर्षा करने लगीं बारम्बार प्राणपति को आलिंगन करने लगीं, बारम्बार मुख और लोचन चूमने लगीं। जब कुछ सावधान हुईं तब अमर सिंह ने जिज्ञासा की—लक्ष्मी कहां थीं ?

रानी—वह भी मेरे ही साथ थीं भगवान ने उन की भी रक्षा की।

इस के उपरांत और २ बातें होने लगीं; अमर सिंह ने कहा—जान पड़ता है अंगरेज यहां भी आवेंगे उस समय हम को बन में आश्रय लेना पड़ेगा। पर तुम कहां रहोगी ?

रानी ने अमर सिंह के कपोल पर अपना कपोल रख कर उत्तर दिया—तुम्हारे ही साथ रहेंगी, और कहां रहेंगी।

अमर—यह कैसे हो सकता है? तुम्हारा बन में क्योंकर निर्वाह होगा?

रानी ने मृदु स्वर से हंस कर कहा—जानकी जी का रामजी के साथ कैसे निवाह हो गया था।

अमर सिंह ने हंस कर उत्तर दिया—उन्हें रावण हर भी तो ले गया था।

रानी—यहां तो बन जाने के पहिलेही हरन हो चुका है। फूलशाह की दया से जी बच गया नहीं तो—

अमर—हां कुशल तो बड़ीही हुई पर बन में भी तो डर ही है न। इसी से चाहते हैं कि तुम्हें और कहीं भेज दें।

रानी—जैसा जी चाहे। जहां रक्खेंगे वहीं बनी रहेंगी पर दरसन देते रहिएगा।

बाईसवां परिच्छेद।

मेजर आयर सात दिन आरा में रहे। इतने ही दिन में शहर उजाड़ सा हो गया। विद्रोहियों को भय दिखाने के लिए बहुत से निरपराधियों को दंड दिया गया, यहां तक कि फांसी के काठ न मिल सके इस से वृक्षों की डालों में कितने ही लोग लटकादिए गए। सेना के अत्याचार से बहुत लोग नगर छोड़ २ भाग गए। इस प्रकार शांति स्थापन कर के मेजर साहब कांवर सिंह पर आक्रमण करने के मानस से जगदीशपुर चले। वहां का किला ढहाए बिना आरा के अंगरेजों का कलेजा कैसे ठंढा होता।

रामशरण ने जब आरा से जाकर रानी और लक्ष्मी का हरण किया था उस समय उसे और कोई चिंता न थी। न अंगरेजों की शरण के बिना और कोई उपाय था, इस से फूलशाह के द्वारा विफलमनोरथ होने पर वह आरा लौट आया। और मेजर आयर से भेंट करने को पहुंचा।

मेजर ने पूछा—टुम कौन है?

रामशरण ने कहा—हुजूर मैं सरकार का पुराना खादिम हूं। मैं ही ने हुजूर को बीबीगंज में पुल दिखलाया था।

मेजर—टो टुम अपना ओहदा पर फिर बहाल किया जायगा।

आरा के दुर्ग में जो लोग बन्दी थे उन में एक मुसलमान डिप्टी मजिस्ट्रेट भी थे, वह इस समय मेजर साहब के पास ही खड़े थे, उन्हों ने रामशरण से पूछा—तुम तो पुलिस के दारोग़ा हो न ?

रामशरण—जी हां ?

डिप्टी—तुम ने कुंवर सिंह को मदद दी थी ?

रामशरण का मुंह सूख गया। बोला—नहीं जनाब ! मैंने सरकार का नमक खाया है, फिर क्यों कर नमकहरामी करता !

डिप्टी—कुछ हो तुम ने कुंवर सिंह के यहां की दारोग़ागरी तो ज़रूर की थी।

रामशरण और भी कांप कर कहने लगा-ऐसा न करता तो जान न बचती, लेकिन दिल से सरकार ही का ख़ैरख़ाह रहा हूं।

मेजर साहब ने कहा—कुच नईं, टुम को कैद में जाने होगा पिर इन्साफ़ किया जायगा—रामशरण कारागार में भेजा गया।

सप्ताह के मध्य मेजर साहब ने जगदीशपुर को प्रस्थान किया आरा में केवल थोड़ी सी सेना रह गई और सब उन के साथ गई।

अभी तक कुंवर सिंह का युद्धकौशल भली भांति विदित नहीं हुआ था। कुछ दिन उपरांत जब उन के प्रताप से इलाहाबाद से लेके पटना तक अंगरेज़ थर्राने लगे तब लार्ड केनिंग ने कहा था कि—कुंश्चार सिंह अस्सी बरस का हाय टब ऐसा गजब करटा है—चालिस बरस का होटा टो बराही मुशकिल करटा।

जगदीशपुर में अंगरेजों की अवाई सुन कर कुंवर सिंह ने अपने दल के दो भाग किए एक भाग जगदीशपुर में रहा और दूसरा नदी पार जा कर एक गांव में शत्रुओं की प्रतीक्षा करने लगा। जगदीशपुर का गढ़ बड़ा दृढ़ था यदि कुंवर सिंह सारी सेना समेत उस की रक्षा करते तो अंगरेज़ों का थोड़ा सा दल उस में सहजतया प्रवेश न कर सकता पर बाबू साहब ने अपनी सेना विभाजित कर दी इसी से हार हो गई।

आयर साहब ने पहिले गांववाली सेना पर चढ़ाई की। वह कुछ ही काल लड़ कर पराभूत हो गई और जगदीशपुर के किले की ओर भागी पर साहब ने इस में भी विघ्न डाल दिया तथा जब तक छिन्नभिन्न सिपाही दुर्ग तक आवें २ वे पहिले ही उस के सम्मुख आ पहुंचे वहां के योद्धा भी भय से विकल

हो गए। कुछ लोग लड़े भी पर बहुतेरे दूसरे द्वार से बन को भाग गए। इस से थोड़े ही काल में मेजर साहब ने गढ़ी मार ली और उस में अपना झंडा जा गाड़ा। सिपाहियों ने लूट मचा दी जो कुछ पाया तोड़ फोड़ के फेंक फांक दिया।

मेजर आयर ने सैनिकों को विश्राम की आज्ञा दी। एक दल को पहरे पर नियुक्त किया। बहुत से सेनापतियों से किले के चारो ओर सुरंग खोद कर उस में बारूद भरने को कह दिया।

सिपाही भोजन के पश्चात् कुछ काल विश्राम करने पाए थे कि भेरी बजी। हथियार और लूट का माल लेके अंगरेज़ी सेना बाहर आई और कुछ दूर पर एक मैदान में खड़ी हुई। संध्या होने में कुछ ही विलंब था। किला, तालाब, और बन सूरज की किरणों से शोभित था।

सेना खड़ी हो कर देख रही थी। सेनापति की आज्ञानुसार कई सिपाहियों ने पलीता से सुरंग में आग लगा दी। आग लगा कर वे लोग शीघ्रता से भाग गए। उन बड़ी पलीतों से कुछ धूआं निकलने लगा।

क्षणही भर में बारूद जल उठी और एक एक बार सहस्रों बज्र समान भयंकर शब्द सुन पड़ने लगा। नीचे की भूमि हिल गई। किला के सामने धूम और धूल छा गई। अंगरेज कुछ पीछे हटकर खड़े हुए।

धूम और धूल के कुछ हटने पर उन लोगों ने देखा कि किले की दीवाल गिर गई है और अट्टालिका तालाब के भीतर गिर गया है। जल चारो ओर उछल कर आग पर पड़ा है जिस से उजला वाष्प उठ रहा है।

वह बज्र समान गर्जन का शब्द चारो ओर दिग दिगंतर में फैल गया। बन ही में बाबू कुंवर सिंह ने शब्द सुनकर समझा कि निवासगृह विनष्ट हुआ। अब तक उस दुर्ग का अवशिष्ट वर्त्तमान रह कर उन के पूर्व पुरुषों की कीर्ति बता रहा है। कुंवर सिंह की वंशकीर्ति उन के जन्मस्थान से लुप्त हुई किन्तु लोगों के मुंह में उन का नाम रह गया है।

तेईसवां परिच्छेद।

जगदीशपुर से जो रास्ता आजमगढ़ को गया है उस में एक सुन्दर सा अंगरेज का घर था। उस के परिवार में स्त्री और एक पुत्र ही मात्र था। आजमगढ़ के निकट कोई विद्रोह का भय न होने के कारण वे सब उसी स्थान

में बने रहे थे, और भाग कर जाते भी कहां ? जिधर जाते उधर ही विद्रोहियों की शंका थी।

प्रभात का समय था, सुहावनी पवन चल रही थी, पूर्व दिशा में लालिमा छा गई थी पर सूर्य के उदय में कुछ विलम्ब था, घर के निकटवाली फुलवारी में नाना वर्ण के पुष्प पुष्पित हो रहे थे, भांति २ के पक्षी कलरव करते थे। ऐसे समय में साहब का पांच वर्ष का बाबा फूल तोड़ रहा था और एक तितली को पकड़ने को हंस हंस कर चेष्टा कर रहा था।

इतने ही में कुछ दूर पर कोलाहल उठा, और क्षण ही भर में एक सिपाहियों का झुंड बाग में घुस आया, बालक भागा उसे एक सिपाही ने पकड़ लिया।

साहब हाथ मुंह धो चुके थे कपड़े पहिनते थे। चीत्कार सुन कर उन के मुख का रंग बदल गया, भरी बन्दूक ले कर बाहर आए, एक विद्रोही घर में प्रवेश करने को उद्यत था कुछ सिपाही उस के पीछे थे, साहब की बन्दूक से आगेवाले सिपाही का काम तमाम हो गया। पर दूसरे ने बन्दूक छीन ली और तीसरे ने तलवार निकाली किन्तु एक ने पीछे से हाथ पकड़ कर कहा— वाह ! अबहीं ? फिर तमासा कैसे होई !

इस पर उस ने तलवार मियान में कर ली और तीन चार सिपाहियों ने साहब को बांध लिया। साहब से कुछ कहते सुनते न बन पड़ा।

मेम साहब सो रही थीं। हल्ला गुल्ला सुना तो जाग पड़ीं और बाहर आईं। आते ही मूर्ख सिपाहियों ने उन्हें भी बांध लिया। किसी ने गाली दी, किसी ने निर्लज्ज संकेत किया, किसी ने अंग पर हस्तक्षेप किया। बिचारी अबला क्रोध और लज्जा से पति की ओर देखने लगी पर वेही क्या करते !

दोनों जनों को सिपाही वाटिका में पकड़ लाए जहां एक निर्दयी उन के बालक को पकड़े खड़ा था। बालक माता पिता को देख कर रोने लगा हाथ छुड़ाने की चेष्टा की कि उन के पास जाऊं तो दुष्ट सिपाही ने उस के कोमल कपोल पर ऐसे जोर से थप्पड़ मारा कि लहू छहराने लगा।

यह देख कर माता कांपने लगी। आंखें बन्द कर लीं आंसू बहने लगे। एक अधम सिपाही ने मुद्रित नेत्र में गुलाब का कांटा चुभो दिया और कहा— वाह ! मेम साहब ! तोहार नींद अब्बै लगी नाहीं गैल ? आंखी खोलः तमासा देखः।

कांटे की पीड़ा से बिचारी ने आंखें खोल दीं। साहब पाषाणपुत्तलक की नाईं देखते रहे।

एक सिपाही बन्दूक में संगीन लगा के बालक के पास खड़ा हुआ और एक बलवान ने उसे दृढ़ता से पकड़ा।

इतने में एक सिपाही ने मेम साहब के चिबुक देश को स्पर्श करके कहा— देखः बीबी! तोहरी जातिमां बिधवा कर बियाह होत अहै औ तू अबहिंने बिधवा होति अहा, तब हमरे साथ बियाह कर लिह्या—भला! पर ई सब हमार साथी संगी हिस्सा मागत अहैं इन के का कहति अहा?

एक सिपाही ने चिल्ला के कहा—हे भैया! मिठाई पीछेः खायः पहिले तमासा तो देखजाः।

एक सिपाही ने आ के बालक का दूसरा हाथ पकड़ लिया और कहा एह का छांड़ देव हो, यो तो गभुआर बच्चा है।

यह सुन कर दूसरे सिपाही जल उठे। एक ने कहा—दुबेजी महराज! ऐसिही दया है तो घर मां मेहरियन के लगे बैठ रहत्यो, हियां काहे का आए हो।

दूसरे ने कहा—कस हो दुबे! बाघ का बच्चा मिल जाय तो का करो?

तीसरा बोला—बाघ का नाहीं! सांप का।

दुबेजी शांत हो रहे। जो बली व्यक्ति बालक को पकड़े था उस ने उसे गेन्द की नाईं ऊपर को फेंक दिया दूसरे ने उसे गिरते हुए संगीन पर लेलिया बिचारे बालक के प्राण निकल गए।

सूर्यनारायण निकल आए थे। किरणें चारों ओर फैलने लगी थीं। एक तितली फूल पर बैठी रस पान कर रही थी। उस पर बालक के निरपराधी रक्त की बून्द जा पड़ी वह उड़ कर दूसरे श्वेत पुष्प पर जा बैठी उस में भी अरुण चिन्ह बन गया।

यह राक्षसी कर्म देख कर अंगरेज रमणी चिल्ला के गिर पड़ी और मूर्छित हो गई। एक सिपाही ने लात मार के कहा—नखरा न करो अबै तुम्हार तमासा होय का बाकी है।

दूसरे सिपाही ने मेम का अंग स्पर्श कर के कहा—देखो यारो! यह मर तो नहीं गई? सिपाहियों ने उस मूर्छिता धूली लुंठिता अबला को आके घेर लिया। यदि वह योंही मर जाती तो उन का आनन्द जाता रहता।

साहब बहादुर ने अवकाश पा कर बड़े बल से अपना बन्धन तोड़ कर एक सिपाही की बन्दूक छीन ली और अपनी भार्या का मस्तक ताक के गोली मार दी। रमणी कुछ कांप कर स्थिर हो गई।

सिपाहियों ने समझा था कि अंगरेज किसी सिपाही का वध करेगा पर साहब ने ऐसा न करके अपनी प्यारी का धर्म बचा लिया। यह देख के जब तक सिपाही सब चकितही हो रहे थे कि इतने में साहब ने उस बालहत्याकारक दुष्ट सिपाही पर बाघ के ऐसा कूद कर बन्दूक घुमा कर मारा—सिपाही ने बंदूक उठाने वा प्राण बचाने का अवकाश न पाया। प्रचण्ड आघात से उस हिन्दूकुलकलंक का मस्तक चूर हो गया। वह भी यमपुरी को चला गया।

इस प्रकार बदला लेकर साहब हंसने लगे ऐसे अवसर की हंसी में कुछ पागलपन की सी लटक भी रहती है। कुछ प्रतिशोध की।

सिपाहियों ने साहब को टुकड़े २ कर डाला और घर में आग लगा के दूसरी ओर चले गए।

अनेक स्थान पर इस से भी अधिक क्रूर कर्म हुए थे। समय पाकर अंगरेज भी पलटा लेते थे, पर व्यर्थ पिशाचवृत्ति न ग्रहण करते थे, किन्तु बहुतेरे विद्रोहकारी निरे राक्षस हो रहे थे। ऐसों से देश की रक्षा क्या होती?

चौबीसवां परिच्छेद।

रामशरण के घर में कई पहरेवाले रहा करते थे, इस से कोई सैनिक प्रवेश न करता था पर जब वह कारागार भेजा गया तो पहरेवाले भी चले गए। एक दिन दो मतवाले गोरे घर में घुस पड़े, उन्हें देख के घर के नौकर चाकर भी भाग खड़े हुए। गोरों ने बैठकखाने की झाड़ फ़ानूस आदि तोड़ डालीं और जब देखा कि रोक टोक करनेवाला कोई नहीं है तो अन्तःपुर में प्रवेश किया। वहां अकेली दारोगा की स्त्री थी। बहिन ससुराल गई हुई थी। गोरों को देख के स्त्री डर के मारे एक कोठरी में भाग गई और भीतर से किवाड़ बन्द कर लिए। गोरों ने उसे भागते देखा और यौवन तथा सौन्दर्य पर भी दृष्टि की इस से दरवाज़ा तोड़ने को उद्यत हो गए पर वह कठिन था टूटा नहीं।

आंगन में एक मूसल पड़ा था उसे एक गोरा उठा लाया और उस से किवाड़ तोड़ डाले। स्त्री भयातुर होके चिल्लाने लगी। दोनों गोरे कोठरी में चले आए। एक ने—बारा खुसी ! चुप रात्रो—कहकर स्त्री को पकड़ने की चेष्टा की। इतने में किसी ने आके उस के हाथ पीछे से पकड़ लिए गोरे ने फिर के देखा तो एक दीर्घकाय पुरुष खड़ा था। दोनों गोरे उसे घूसों से मारने लगे। पर आगंतुक महाशय बड़े बलिष्ट थे, इंस के दोनों गोरों को पकड़ कर बाहर छोड़ आए। गोरों ने बल तो बहुत दिखाया पर कुछ कर न सके।

मार्ग में कई एक सिक्ख जाते थे उन से इस उदासीन मनुष्य ने कहा—यह दोनों एक औरत पर जबरदस्ती करते थे इन्हें पकड़ ले जाओ सिक्ख लोग स्त्रियों का अंग स्पर्श न करते थे। इस पुरुष की शक्ति देख के विस्मित हो गए और गोरों को पकड़ ले गए।

पुरुष फिर घर में गया स्त्री खड़ी हुई कांप रही थी उस से इस ने कहा—मा ! यहां रहना मुनासिब नहीं है। मेरे साथ आओ—

रामशरण की स्त्री फूलशाह को पहिचानती थी उन के साथ चल दी। शाह साहब उसे शहर के बाहर ले गए। कुछ दूर पर एक देवमंदिर था उस के द्वार पर पहुंच के फूलशाह ने कहा—इस के पुजारी साहब बड़े ईमानदार हैं इन के यहां बनी रहो—जब गद्र मिट जाय तो बाप के घर चली जाना।

स्त्री शाह साहब के पैरों पर गिर पड़ी और पांव पकड़ लिए। फूलशाह ने छुड़ाने की चेष्टा की। पर उस ने न छोड़े। तब वह बोले—औरतें मेरी मा हैं उन्हें पैर न छूना चाहिए। मिहरबानी करके छोड़ दो।

स्त्री ने रोते हुए कहा—आप देवता हैं, जैसे मुझे बचाया है मेरे स्वामी को भी बचाइए।

फूलशाह ने विस्मित हो के कहा—तुम्हारे साथ उसे ज़रा भी मुहब्बत नहीं है तुम उस का सोच क्यों करती हो, वह अपने गुनाहों का फल पा रहा है।

स्त्री ने कहा—नहीं महाराज ! हमारे वही सब कुछ हैं उन की रक्षा कीजिए।

फूलशाह—उसे अंगरेजों ने कैद कर रक्खा है मैं क्यों कर छुड़ा सकता हूं ?

स्त्री—आप सब कुछ कर सकते हैं महाराज ! मेरे स्वामी का संकट काटिए।

फूल—अच्छा पैर छोड़ दो तुम्हारे स्वामी को भी छुड़ाऊंगा।

स्त्री ने चरण छोड़ कर प्रणाम किया।

रामशरण बड़ाही पापी था स्त्री को सीधी आंख से देखता भी न था वह कभी पास आती तो गाली देता वा मार बैठता था। तौ भी स्त्री उस को बहुत चाहती थी।

रात्रि के समय एक मनुष्य सिपाहियों के से कपड़े पहिने रामशरण को साथ लिए हुए मंदिर में आया और दूर से दिखा के बोला—देखो इस मन्दिर में तुम्हारी औरत है तुम ने उसीके सबब रिहाई पाई है याद रखना।

रामशरण ने पूछा—मुझे रिहाई किन साहब ने दी है ?

सैनिक ने उत्तर दिया—हमें बतलाने की मुमानियत है पर जिन्हों ने तुम्हें बचाया है उन्होंने यह भी फरमाया है कि अगर अब की दफ्अ अंगरेजों के हाथ पड़े तो फिर न बचोगे। और अमर सिंह से भी बचे रहना। यह कह के योद्धावेषी पुरुष चला गया। रामशरण मंदिर में गया। एक छोटे से कमरे में साधारण सी खाट पर एक स्त्री को बैठे देखकर पुकारा—पियारी।

पियारी अचंभे में आके खड़ी हो गई। रामशरण कभी उस का नाम न लेता था। इस बार स्वामी के मुख से अपना नाम सुन के पियारी के हृदय में हर्ष पूरित हो गया। प्रेमपूर्ण नेत्रों से पति की ओर देखने लगी।

पियारी कुरूपा न थी पर रामशरण कभी स्नेहपूर्वक उसे न देखता था इस से उस की सुंदरता का ज्ञान भी न रखता था किंतु आज देखा तो जाना कि सुंदरी है।

रामशरण ने उस का हाथ पकड़ लिया। वह मारे हर्ष के रोमांचित हो के प्रेमाश्रु पूरित नेत्र से देख प्रेम स्वर से बोली—पियारे—

यह सम्बोधन रामशरण को बहुत प्यारा लगा जब से कारागार गया था तब से यह शब्द किसी के मुंह काहे को सुना था। पियारी को देखते ही बोला—तुम बदसूरत तो नहीं हो। हम ने शायद तुम्हें कभी अच्छी तरह देखा न था।

पियारी ने मुसकिरा कर मुंह झुका लिया और पास आ बैठी रामशरण ने छाती से लगा लिया। यह सुख की घड़ी पियारी को आज तक न प्राप्त हुई थी। एक हाथ पति के गले में डाल कर बोली—इतने दिन तुम्हें बड़ा दुख सहना पड़ा।

रामशरण के चित्त में स्नेह का संचार हो रहा था। बोला—यह जिक्र जाने दो, हमने सुना है घर लुट गया, क्या यह बात सच है?

पियारी ने कहा—घर न लुट जाता तो मैं यहां काहे को आती।

रामशरण सोचने लगा—हाय पिछले सुख कहां गए? सारी दौलत क्या हुई? आज सब कुछ खो के हम जान चुराए चोरों की तरह पड़े हैं! अंगरेजों का बुरा हो, कुंवर सिंह का नास हो, जिन के सबब मेरी यह हालत हुई है! अफसोस कोई हौसिला न पूरा हुवा! सब की नज़रों से उतर गए।

कुछ काल के उपरांत पूछा—तुम यहां कैसे आई?

पियारी ने उस के होंठ पर उंगली रख के उत्तर दिया—मैं भगवान की किरपा से यहां आगई नहीं बचना मुसकिल था बस और कुछ न पूछो बतलाने की मनाही है।

रामशरण ने कुछ रूखे स्वर से कहा—नहीं, बचानेवाले का नाम ज़रूर बतलाना होगा! हम पूछते हैं।

पियारी इस का क्रोध जानती थी डर कर बोली—बहुत हो जी चाहे तो बता दूं पर उन्हों ने नाम बतलाने को रोक दिया है।

रामशरण—नहीं ज़रूर बतलाओ।

पियारी ने विवश हो कर फूलशाह का नाम बतला दिया।

रामशरण वेग से खड़ा हो गया और कम्पित स्वर से कहने लगा—हम भी यही समझते थे कि वही होगा! हुं: फ़क़ीर हो के उसे इन बातों से क्या मतलब था!

पियारी को विस्मय हुवा, सोची कि इन्हों ने मेरी बात नहीं समझी, बोली—रिस काहे को करते हो, उन्हों ने तो मेरे परान बचाए हैं।

रामशरण—परान बचाए हैं! क्या कोई आफ़त पड़ी थी?

पियारी—हां आफत ही थी, घर में दो गोरे दारू पीके के घुस आए थे फूलसाह न होते तो कहीं ठिकाना न था गोरे मार डालते।

रामशरण ने ठट्ठा मार के कहा तुम्हारी सी खूबसूरती को गोरे मार नहीं डालते। यह तो तुम ने अभी तक ज़िक्र ही नहीं किया। कहो तो गोरों के साथ कैसी कटी?

पियारी ने कानों पर हाथ धर के कहा—राम २! वह मुझे छू भी लेते तो मैं कुंवा में कूद पड़ती।

रामशरण – तो क्या वह दरसन ही करके चले गए ?

पियारी – नहीं वह तो जुलुम करना चाहते थे पर फूलसाह ने आके बचा लिया। तुम्हें भी तो उन्हीं ने छुड़ाया है।

रामशरण—फूलशाह की आप बड़ी भगतिन हैं मालूम होता है उस ने तुम्हें अपने वास्ते गोरों से बचाया था।

पियारी यह सुन के डर के मारे कांप उठी वह यह कभी सोचती भी न थी कि फूलशाह को कोई ऐसी बात कह सकेगा इस से कानों पर हाथ धर कर बोली—खबरदार ऐसा न कहो नहीं गजब हो जायगा, वे बड़े पहुंचे फकीर हैं उन्हें कुछ कहोगे तो बिपत में भी कोई और बिपत खड़ी हो जायगी—राम ! राम !

रामशरण ने कहा—अब और वह क्या करेगा करना था सो तो कर चुका।

पियारी ने साहस कर के पति के पांव पकड़ लिए। और मुंह उठा के बोली—मेरी बात को झूठ न समझना मैं पतीबरता हूं।

रामशरण को अभ्यास था कि जब उस की स्त्री पांव पड़ती थी तब लात मार देता था वैसेही मार कर बोला—हूं: चली है हम को सिखाने। हम ने सैकड़ों ऐसी पतीबरता देख डाली हैं—एक तूही रह गई है।

लात की चोट से और उस से भी अधिक बात की चोट से विकल हो के पियारी सिर झुका कर रोने लगी। सारा आनन्द सपने की संपत हो गया।

रामशरण मंदिर के बाहर आया रात अंधेरी थी कोई शब्द न सुनाई देता था, इधर उधर वृक्ष बहुत थे। रामशरण बाहर आ के खड़ा हुवा। उसी शब्द रहित अंधकार में किसी ने मेघ के समान गरज कर कहा—धिक ! चांडाल !

रामशरण चारों ओर देखने लगा। कोई दिखाई न दिया। डर के मारे कांप के फिर मन्दिर में चला गया।

पचीसवां परिच्छेद।

एक दिन प्रात:काल एक अंगरेजरमणी पैदल जा रही थी। उस के घर से थोड़ी ही दूर और एक अंगरेज का घर था। रास्ते में विद्रोहियों का डर न था इसी से वहां दो चार अंगरेज छिपे हुए रहते थे। सोचते थे कि अवसर पावें तो सेना के आश्रय में चले जायें। यह भी खबर थी कि दो चार दिन में उधर से अंगरेजी सेना निकलेगी।

यह रमणी युवती है पर ब्याह अभी नहीं हुआ। अपनी विवाहिता भगिनी के यहां रहती है। इस समय एक अंगरेज के घर जा रही है जहां उस की समवयस्का सखी है। दोनों घरों के बीच में दूरी बहुत नहीं है रास्ता संकीर्ण है इधर उधर बांस के वृक्ष हैं।

युवती सुंदरी भी है। शीघ्र २ जा रही है, इतने में चौंक के ठिठक गई, देखा कि सामने एक शस्त्रधारी पुरुष आ रहा है। रमणी ने विचार किया यह विद्रोही है उस के कपड़े मैले और फटेफुटे थे जान पड़ता था कि राह भूल के आ गया है।

रमणी को देख के सिपाही उसी की ओर झुक पड़ा युवती डर गई। उस के लिए मार्ग छोड़ दिया पर सिपाही ने आकर हाथ पकड़ लिया।

युवती ने वेग से हाथ छुड़ा लिया तो सैनिक हंस के बोला—बीबी साहब कहां तशरीफ़ लिए जाती हो? ज़रा ठहरो दो बातें तो कर लो—यह कह कर उस के वक्षस्थल पर का कपड़ा पकड़ लिया।

रमणी ने फिर हाथ छुड़ाना चाहा पर इस बार सिपाही ने बहुत दृढ़ता से पकड़ा था इस से छुड़ा न सकी वरंच वस्त्र फट गया।

लज्जा और क्रोध के मारे युवती का ललाट, गंडदेश, वक्षःस्थल लाल हो गया। इधर सिपाही ने वक्षःस्थल पर हस्तक्षेप करने की चेष्टा की।

पीछे से एक और पुरुष आ रहा था उसे न स्त्री ने देखा न सिपाही ने। उस ने आतेही सिपाही को ऐसी लात मारी कि वह भरभरा के गिर पड़ा।

युवती ने बचानेवाले को धन्यवाद दे के चल देने की चेष्टा की इतने में सिपाही ने उठ कर आगन्तुक राजपुत्र पर आक्रमण किया यह देख कर रमणी वहीं खड़ी हो रही।

सिपाही ने कटि प्रदेश से खड्ग निकाल कर राजपुत्र पर चलाया वह आत्मरक्षा करने लगा। सिपाही तलवार चलाने के सिवाय बुरी २ गालियां भी बकने लगा राजपुत्र चुपचाप अपनी रक्षा करने लगा।

कुछ काल के उपरान्त राजपुत्र ने कहा कि "तू ने जिस हाथ से स्त्री का अपमान किया है वह काट डालूंगा"—यह कह के दहिना हाथ काट डाला तलवार भी हाथ के साथ भूमि पर गिर पड़ी। सिपाही पीड़ा के कारण बैठ गया। इतने में युवती एक और सैनिक को आते देख कर चिल्ला उठी। सिपाही ने अलक्षित रूप से आके राजपूत के मस्तक पर तलवार चलाई पर

वह बाएं कंधे पर लगी। चिल्लाना सुन कर वह पीछे न फिरता तो सिर पर लगने से मरही जाता। राजपूत ने उस के सिर पर खड्ग प्रहार किया। वह मर कर गिर पड़ा और राजपूत के स्कन्ध देश से भी रक्त प्रवाह होने लगा।

उसी समय एक नाटे से संन्यासी बंसवारी के भीतर से निकल आए उन्हें देख कर राजपुत ने दंडवत किया।

आगंतुक ने कहा—हमारे संग चलो, इस मार्ग से बहुत दुराचारी सिपाही आते हैं वह तुम्हें पहिचानेंगे नहीं।

फिर युवती से कहा—तुम्हारा भी यहां रहना ठीक नहीं है, कई सौ सिपाही इधर आया चाहते हैं वे तुम्हारे घर में भी प्रवेश करेंगे अब तुम्हारे घर में समाचार भेजने का भी समय नहीं है इस से मेरे साथ चलो कोई शंका न करो।

रमणी डर कर राजपूत की ओर देखने लगी राजपूत ने कहा—कोई डर नहीं है हम लोगों के साथ चली चलो—यह तो देवता हैं।

युवती पिछली बात तो भली भांति न समझी पर राजपुत के वाक्य पर संशय भी न किया। दुष्ट सिपाहियों का कोलाहल सुन पड़ने लगा। रमणी फटे हुए वस्त्र से वक्षदेश छिपाकर दोनों जनों के साथ चल दी। चलते समय राजपूत ने हथकटे सिपाही से कहा—याद रखना, अमरसिंह दुष्टों को यों ही दंड देता है। हमारे शत्रु हैं तो अंगरेज हैं पर स्त्री और बालकों पर हाथ चलाना योद्धा का काम नहीं है।

संन्यासी जी आगे २ चले। बांसों के लांघ जाने पर घना जंगल था उस में सब ने प्रवेश किया। लहू बहुत बहने से अमर सिंह दुर्बल हो गए थे कुछ काल में चलने की शक्ति न रही आंखों के आगे अंधेरा दिखाई देने लगा यह देख कर अंगरेज कन्यका ने लज्जा के साथ कहा—टुम को बरा टकलीफ़ है टुम हमारा हाट पकर के चलो।

अमरसिंह ने कहा—नहीं, मजे में चला चलता हूं हम राजपूत हैं ऐसी २ तकलीफों को डरें तो लड़ें कैसे। संन्यासी जी ने मुंह फेर के अमर सिंह की दशा देखी तो उन का हाथ पकड़ लिया और कहा—जान पड़ता है चोट बहुत आगई है पर आश्रम पहुंचे बिना लहू रोकने का क्या उपाय हो सकता है हमारे ऊपर सहारा कर के चले चलो कुटी दूर नहीं है।

कुछ दूर चल के संन्यासी जी एक वृक्ष के नीचे ठहरे वहां एक बिल था जिस के द्वार से एकही मनुष्य प्रवेश कर सकता था। संन्यासी जी अमर सिंह

को उस के भीतर ले गए। रमणी डर कर खड़ी हो रही इन्होंने कहा—डर की कोई बात नहीं है चली आओ।

भीतर जाके स्त्रीने देखा कई एक टूटी सी सीढ़ियां हैं उन पर से उतार कर देखा चार छोटी २ कोठरी हैं एक में संन्यासीजी की दो चार आवश्यकीय सामग्री और एक वंशी धरी है। तीन में कोमल पर्णशय्या बिछी हैं।

अमर सिंह को शय्या पर बिठला के संन्यासी जी ने कई एक पत्ते और जड़ें संग्रह कीं, उन्हें घाव पर बांध दिया। लहू निकल जाने से अमरसिंह बहुत निर्बल हो गए थे इस से पर्णशय्या पर लेटतेही बेसुध हो गए।

फूलशाह और वंशीवाले बाबाजी ने दो स्वतंत्र वृत्ति ग्रहण की थी। जिस पर विपत्ति पड़ती थी उस की रक्षा का भार शाह साहब ने लिया था और आर्त लोगों की शुश्रूषा स्वामी जी करते थे। अमर सिंह को बड़ी गहिरी चोट आ गई थी, इस से बाबाजी उन की सेवा करने लगे।

छब्बीसवां परिच्छेद।

रानी और लक्ष्मी कहां रहीं ?

जिस समय अंगरेज़ों ने जगदीशपुर को घेर लिया उस समय दोनों कुल-लक्ष्मी कुंवर सिंह और अमर सिंह के साथ बन में गईं। जगदीशपुर का किला टूट जाने का समाचार पा के कुंवर सिंह सहसराम नगर की ओर गए और दोनों बहुओं को भी लेते गए।

सहसराम के चारो ओर पर्वत हैं उन के मूल में बड़े घने जंगल हैं उन का मार्ग ऐसा अगम्य है कि शत्रु का आना सम्भव नहीं पर कुंवर सिंह और उन के साथी वह मार्ग जानते थे। इस से वहीं ठहरे।

कुंवर सिंह की इच्छा छिप कर प्रान बचाने की न थी। अब जगदीशपुर लौट जाना व्यर्थ था, इस से विचार किया कि और कहीं अंगरेज़ों से युद्ध करना चाहिए। आजमगढ़ और बारानसी अरक्षित थी. अतः उधर ही जाने की ठान ली।

कुछ दिन छिपे रहना भी आवश्यक था जिस में अंगरेज़ कोई संधान न पा सकें। अंगरेज़ समझते थे कि कुंवर सिंह फिर जगदीशपुर आवेंगे पर कुंवर सिंह का उन्हें पता भी न मिला। आरा में केवल यह समाचार फैल गया कि वह सहसराम की ओर गए हैं।

युद्ध में परिवार के साथ जाना ठीक नहीं होता और जिस प्रकार के युद्ध में बाबू कुंवर सिंह प्रवृत्त हुए थे उस में जय पराजय दोनों एक सी थीं वरंच पराजय ही की अधिक सम्भावना थी। कब कहां ठहरेंगे, कब किधर जायंगे इस का भी निश्चय न था इस से कुंवर सिंह ने विचार किया कि स्त्रियों को इसी वन में रहने दें, अमर सिंह को भी यही सम्मति हुई।

पर्वत में जहां पर ऊंचा नीचा मार्ग बहुत ही कठिन था और बन बहुत ही घना था वहीं पर एक छोटा मन्दिर था उस के पास दो घर भी थे उन्हीं में रानी और लक्ष्मी का निवास ठहराया गया और कईएक विश्वासपात्र क्षत्रिय उन की रक्षा में नियत किए गए।

कुंवर सिंह ने भाई से कहा –मैं सेना लेके आजमगढ़ जाता हूं तुम कुछ दिन यहीं रहो। पता लगाते रहो कि दानापुर और आरा के इधर उधर अंगरेज़ क्या करते हैं। हमारे दूत सदा तुम्हारे पास आते जाते रहेंगे। आवश्यकता होगी तो तुम्हें भी बुला भेजेंगे।

अमर सिंह ने कहा –हम यहां क्या करेंगे? चलिए आप के साथ चलें स्त्रियों के लिए कोई डर तो है नहीं।

कुंवर सिंह बोले—तुम्हें इन की रक्षा के लिए यहां रहने को नहीं कहते यहां एक जने को अवश्य रहना चाहिए हम चाहे जहां जायं काम पड़ने पर यहां आ सकते हैं पर ऐसा प्रबंध अवश्य करना चाहिए जिस में जगदीशपुर जा सकें तुम पर हमें बड़ा भरोसा है इसी से तुम्हें यहां रखते हैं हम यह नहीं कहते कि इसी पहाड़ में छिपे बैठे रहो पर तुम्हारे रहने से अंगरेज़ों को विदित होगा कि यह ज़िला राजपूतों ने छोड़ नहीं दिया इसी से रहने को कहते हैं। अवसर पाना तो उन पर आक्रमण करना पर थोड़े दल के साथ युद्ध में प्रवृत्त न होना। हम तुम्हारे आसरे रहेंगे बुलावें तब हमारे पास चले आना।

अमर सिंह ने लाचार हो भाई की आज्ञा मान ली। कुंवर सिंह आजमगढ़ चले गए। अमर सिंह ने अपने साथियों को लेके ज़िले भर के अंगरेज़ों को सशंकित कर दिया। जहां उन की रसद पाते थे छीन लेते थे बन्दियों को मुक्त कर देते थे अंगरेज़ योद्धा को देखते ही मार डालते थे और फिर अपने पर्वताश्रम में आ जाते थे अंगरेज़ों को यह न विदित होता था कि अमर सिंह कहां रहते हैं कहां जाते हैं कहां हैं। पहाड़ के अज्ञात मार्ग में

उन के खोजने का साहस किसी को न होता था और जो कोई दृढ़ता कर के बन में जाता भी था वह लौट के न आता था।

रानी और लक्ष्मी पर्वत पर रहने लगीं, अमर सिंह कभी सात २ दिन कभी दश २ दिन उन के पास न आते थे। कभी सेना के साथ आते थे कभी अकेले ही आते थे। कभी चले भी अकेलेही जाते थे दोनों कुलबधू उन के आने के दिन गिना करती थीं।

सत्ताईसवां परिच्छेद।

अमर सिंह जब पर्वतवाले घर में आते थे तब रानी अपने हाथ से उन का बकतर उतारती थीं। किसी २ दिन बकतर में से गोलियां निकलती थीं तब रानी डर कर कहती थीं कि—जो इन में से कोई गोली आप की देह में लग जाती तो……।

अमर सिंह हंस कर उत्तर देते थे—तो क्या, लौट के न आते बस, राजपुत्रों के लिए तो युद्ध में मरनाही श्रेष्ठ होता है।

रानी कातर स्वर से कहती थीं—आप को केवल थोड़े दिन से देखती हैं सो भी भली भांति नहीं देख सकतीं। जहां जातेहैं सावधानी से जाया करें हम आप ही को देखने को जीती हैं।

अमर सिंह कुछ उदास स्वर से कहते थे—हम ने तो पहिलेही दिन की भेंट में कह दिया था कि मायामोह न बढ़ाओ।

रानी फिर कुछ न कहती थीं चुपचाप पति का मुख चूम लेती थीं।

दिन को प्रायः रानी और लक्ष्मी घर से कुछ दूर पर एक वृक्ष के तले आ बैठती थीं वृक्ष के चारों ओर छोटे २ पौधे थे। रक्षकगण दूर रहते थे कई जने पहाड़ के नीचे भी रहते थे वे कोई आता था तो समाचार देते रहते थे पर अमर सिंह के अतिरिक्त आनेवाला था ही कौन?

अमर सिंह तथा उन के साथी पर्वत पर चढ़ने लगते थे यह स्त्रियां उन्हें देख लेती थीं वे कभी घोड़े पर आते थे कभी पैदल। पहाड़ियों पर चढने का उन्हें अभ्यास सा था। जिस दिन रात को आते थे उस दिन आके किवाड़ खड़काते थे। रानी वा लक्ष्मी द्वार खोल देती थीं।

एक दिन अमर सिंह संध्या के समय आए और बोले कि आज पूर्णमासी है इसी से तुम्हें देखने आए हैं।

कुछ काल के उपरान्त पूर्णचन्द्र का उदय हुआ। पर्वत के ऊपर और बन के बीच में उंजेरी अंधेरी का अपूर्व मेल देख पड़ने लगा। पवन से छाया हिलने लगी। कभी कोई उजले बादल का टुकड़ा चन्द्रमा को छिपा कर भूमि पर कुछ काल के लिए अंधकार कर देता था। फिर हट जाता था एक तो पूर्णिमा की चांदनी सो भी शरद ऋतु की, उस प्राकृतिक शोभा का क्या ही कहना था।

पर्वत में एक छोटासा झरना था। उस के निकट अमर सिंह लक्ष्मी और रानी के साथ जाकर एक चट्टान पर बैठे। स्थान स्वच्छ था चांदनी चारों ओर छिटकी हुई थी। उस पार एक छोटा सा बांस का वृक्ष था उस की छाया झरने के इस पार आती थी उसी के पास सब जने बैठे थे वायु चलने से बांस के पत्ते खरखराते थे। दो एक पत्ते जल में गिर रहे थे। निर्झर के जल पतन का शीतल अस्फुट शब्द चंद्रमा की शीतल किरणों से मिश्रित हो रहाथा। कभी २ जलकण उछल २ कर चांदनी में चमक जाते थे।

अमरसिंह शिला पर लेट गए रानी एक शिला से पीठ लगाए बैठी थीं उन्हों ने अमर सिंह का शिर हृदय पर रख लिया। अमर सिंह प्रीतिपूरित नेत्रों से उन के मुख का दर्शन करने लगे। दोनों जने कोई बात चीत न करते थे केवल कभी कोई किसी को चूम लेता था। कभी आदर का एक आधा शब्द कह देता था। समय बड़ा सुहावना जान पड़ता था। मन का भाव बातों से कब प्रकाशित होता है वह तो मन ही जान सकता है। ऐसे स्थान पर ऐसे समय ऐसे सुख से बैठना बातों के द्वारा कैसे वर्णित हो सकता है।

लक्ष्मी कुछ दूर पर बैठी थीं वह भी किसी चिंता में मग्न थीं ऐसे समय में दुःख की चिंता बहुत ही सताती है। लक्ष्मी रानी के सुख से सुखी होती थीं पर कभी २ अपने भाग्य पर दुःख भी करती थीं इस समय वही दशा थी सोच रही थी कि ऐसा सुख सदा होता तो क्या बात थी।

रात अधिक होने लगी अमरसिंह रानी का हाथ पकड़कर घर चले लक्ष्मी पीछे २ होलीं। दो दिन के उपरांत अमरसिंह फिर चले गए और पन्द्रह दिन तक लौट कर न आए। उन के साथी फिर कर आगए। यहां आके सुना कि अमरसिंह नहीं आए तो अत्यन्त विस्मय हुआ। सब कहने लगे—हमें यहां आने की आज्ञा देके आप नहीं आए तो अवश्य किसी प्रयोजन से कहीं और चले गए होंगे।

अमर सिंह के न आने से रानी ने समझा कि शत्रुओं के हाथ से मार डाले गए। पर राजपूतों ने बहुत २ कहला भेजा कि शत्रुओं के सम्मुख जाते तो अकेले कभी न जाते। और कहीं गए होंगे काम हो जाने पर अवश्य लौट आवेंगे। पर इन बातों से रानी को धैर्य न हुवा शोक से विकल हो के अहि-वात के चिन्ह त्याग करने को उद्यत हुईं किन्तु लक्ष्मी के अनुरोध से धारण किए रहीं। राजपूत लोग अमर सिंह को ढूंढ़ने निकले, पर कहीं पता न पाया।

अट्ठाईसवां परिच्छेद।

रामशरण डरपोक परन्तु लोभी पुरुष था। प्राण के भय से मंदिर में रहता था पर पूर्वपद की प्राप्ति की चिन्ता सदा किया करता था। सोचता रहता था कि आरा से भागकर और कहीं अंगरेजों से मिलूं तो जरूर फायदा होगा नहीं तो बागियों से मिलने में तो नुकसान है ही नहीं। चोरों की तरह छिपा रहना नाहक है।

कुछ दिन रामशरण की खोज की गई, फिर समझा गया कि कुँवर सिंह से जा मिला होगा अन्त में अंगरेजों को उस की सुध ही भूल गई।

मन्दिर के पुजेरी से रामशरण को सब समाचार मिलते रहते थे। कुछ दिन के उपरांत वह भेष बदल कर बाहर निकलने लगा। इस से बहुधा लोग पहिचान न सकते थे।

एक दिन उस ने रास्ते में फूलशाह को देखा। देखते ही जलभुन गया। वह समझता था इसी के सबब मेरी खराबी हुई है। इसी समय पांच छ: गोरे उधर से जाते देख पड़े। रामशरण ने उन के पास जा कर फूलशाह की ओर हाथ उठा के कहा—उसे जानते हो?

गोरे बोले—वेल वो फकीर हाय।

रामशरण ने मुसकिरा के उत्तर दिया—फ़क़ीर के धोखे में न रहना वह कुंवर सिंह का पक्का गोइंदा है।

गोरों ने पूछा—टीक कहटा है?

रामशरण कहा—हां! लेकिन वह बड़ा चालाक है यों न खुलेगा, पकड़ ले जाओ तो हाल मालूम हो जायगा और तुम्हें भी इनआम मिलेगा।

गोरे इनआम के विचार से बड़े प्रसन्न हुए और शीघ्र जा के फूलशाह को पकड़ लाए।

शाहसाहब न भागे न बल प्रकाश किया। वरंच मुसकिरा के कहने लगे – तुम्हें तो हम जानते हैं। रामशरण सूख गया वह न जानता था कि फूलशाह मुझे जान लेगा उस ने सोचा, यह बुरा किया। फूलशाह ने कहा— जैसे हमें क़ैद कराने का बन्दोबस्त किया है होशियार रहना कोई तुम्हें भी न क़ैद करा दे। अब की दफ़अ पकड़ गए तो नहीं बचोगे। ख़ैर भाग जाओ, हम से कोई दहशत न करना।

गोरों ने फूलशाह को बांध लिया। एक ने कहा—जो आडमी इस को बटलाया उस को बो ले चलने से टीक होगा। वुह गवाही डेगा।

इस पर और गोरों ने इधर उधर देखा तो रामशरण न दिखाई दिया सभों ने अचंभे में आके उसे ढूंढ़ा भी पर न पाया।

एक ने कहा—वो आडमी हाम को डोका डिया वही गोइंडा है।

दूसरा बोला—बाग गया अच्चा हुआ अब वह हमारा बकसीस में हिस्सा लेने सकटा नें।

फूलशाह को गोरे सेनापति के पास ले गए। सेनापनि ने पूछा— ए कौन आडमी ?

एक गोरा बोला—कुआर सिंग का गोइंडा है। हाम पटा पा के पकड़ लाया है।

सेनापति ने सन्देहपूर्वक प्रश्न किया—टुम को कौन बोला ?

गोरा कुछ गड़बड़ा के कहने लगा—एक आडमी बोलटा। हाम उस को लाया नई।

गोरा राम यह न कह सके कि वह आदमी हमें नहीं मिला।

सेनापति ने फूलशाह से जिज्ञासा की—टुम कौन है ?

फूलशाह ने कहा—तुम्हारा ग़ुलाम।

सेना—नाम बटलाओ।

फूल—ग़ुलाम।

सेना—कोमार सिंग कहां है ?

फूल—आजमगढ़ की तरफ़।

सेना—वो: हम भी जानटा है। टुम को उस ने किस मटलब से बेजा ?

फूल—उन्हों ने मुझे नहीं भेजा।

सेनापति ने हंसकर कहा—पुइ बाट टुम सहल में नहीं बोलेगा। हाम डूसरा बंडोबस्त करटा है। सेनापति के इङ्गित से एक मनुष्य चाबुक ले आया। सेनापति ने उसे दिखा कर कहा—अब बोलेगा।

फूलशाह ने कुछ ध्यान न दिया। सेनापति ने समझा यह भी चालाकी है। कहा—डेको टीक बाट बोलो।

अकस्मात् फूलशाह के मुख पर अद्भुत परिवर्तन हो गया। मुंह और आंखें लाल हो गईं। पहिले की सी नम्रता न रही। गर्व का भाव उपस्थित हो गया। साहब की ओर देख कर कठिन स्वर से बोले—बिस्मिल्लाह! क्या कहता है।

सेनापति ने कुपित हो कर कोड़ा मारने की आज्ञा दे दी। फूलशाह शिर झुका के चुप हो रहे। एक गोरे ने उन की पीठ पर से कपड़ा हटा दिया। दूसरा चाबुक उठा के खड़ा हुआ। सैनिकों की भीड़ जुड़ गई। उन में से एक पुलिस के जमादार ने कहा—हुजूर! आप करते क्या हैं?

सेनापति—क्यों?

जमादार—यह गोइन्दा नहीं हैं, यह तो एक बड़े अच्छे फ़क़ीर हैं।

सैनिक हाथ में कोड़ा लिए खड़ा था वह सेनापति की आज्ञा से रुक गया। सेनापति ने पूछा—टुम इस को जानटा है?

जमादार ने कहा—हुजूर इन्हें कौन नहीं जानता, यह फूलशाह हैं।

सेनापति—ए नाम टो हाम भी सुना है, यह कुआर सिंग का गोइंडा काए हुआ?

जमादार—इन्हें गोइंदा कहता कौन है?

साहब ने गोरों की ओर देखा के कहा-एई लोग बोलटा है।

जमादार-इन्हों ने किस से सुना है?

साहब गोरों की ओर मुख कर के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। गोरों ने कुछ उत्तर न दिया तो जमादार ने कहा—हुजूर यहां डिपुटी साहब हैं, और भी कई साहब लोग हैं, इतने आदमी खड़े हैं, इन में से किसी से पूछ देखिए वह फूलशाह का हाल बतला देगा।

सेनापति ने कई लोगों से पूछा, उत्तर यही पाया कि-वो आडमी पागल

है किसी का नुकसान करने नहीं मांगटा, गोइंडा नहीं है, उस को चीर डो, इस जिला का लोग उस का बरा काटिर करटा है।

सेनापति ने कुछ लज्जित हो कर गोरों का तिरस्कार किया और शाह साहब को छोड़ दिया। फूलशाह बन्धन छुट जाने पर भी पहिले ही की नाईं आंखें झुकाए खड़े रहे। दो एक गोरों ने उन्हें धक्का मारा तो उन्होंने कह दिया बिस्मिल्लाह! क्या बोलता है?

दो चार तरुण सेनाध्यक्षों ने उन के साथ हंसी करनी चाही, एक ने कहा—वेल हमारा साट चलो।

फूलशाह चल दिए।

वह उन्हें अपने साथ एक घर में ले गया जहां तीन जने और भी थे उन्होंने उठ २ कर व्यंग की रीति से इन्हें सलाम किया। इन्होंने सहज स्वभाव से आशीर्वाद दे दिया। अंगरेज इस विचार से बड़े खुश हुए कि यह हमारी दिललगी नहीं समझ सका। एक ने उन के आगे अपना हाथ फैला के कहा—वेल हमारा हाट डेको।

फूलशाह ने कहा—हम हाथ देखना नहीं जानते।

अंगरेज—सब का हाट डेकटा है हमारा डेकेगा काए नहीं?

फूलशाह—हम किसी का हाथ नहीं देखते, और देखते होते तौ भी न देखते तुम्हारे हाथ में देखने लायक कोई बात नहीं है।

अंग—डेको हम लाट होगा?

फूल—नहीं।

जेनेरेल होगा?

नहीं।

रुपयावाला?

नहीं।

टो क्या होगा?

खुद ही देख लोगे।

वह अंगरेज चुप हो रहा। दूसरे ने पूछा—टुम कुच डवा ज

फूलशाह—नहीं।

अंग—हाम सुना टुम औरट लोग को राजी करने का डवा जानटा है। ऐसा डवा हाम को डो।

फूल—ऐसी दवा होती तो बहुत बुरा होता पर याद रक्खो दवा मिलने पर भी तुम किसी औरत को राजी नहीं रख सकते।

अंगरेज सज्जन न था इस बात से कुछ अपना अपमान समझा। तबतक एक और बोला—डेको शाह शायद बाट चीट बहोट हो गया अब टुम को कुच काना काने होगा।

फूलशाह ने कहा—इस वक्त भूख नहीं है।

अंगरेज बोला—तौ भी हमारा काटिर से कुच काओ।

खानसामां खाना ले आया। एक असाधु अंगरेज ने अभक्ष मांस शाह साहब को देकर कहा—डेको कैसा अच्छा है, इस को काओ।

फूलशाह—भूख नहीं है।

अंगरेज—टोरा सा काओ।

फूलशाह—देदो।

उसने दे दिया, वह खागए, अंगरेज ने विस्मित हो के अन्य मांस दिया शाह साहब वह भी खा गए। वह लोग जितना देते गए यह सब खाते चले गए। चार पांच जनों का भोजन खा गए। तब तो अंगरेजों ने आश्चर्य में आ के कहा—भूक नईं है टब इटना काटा है, भूक में किटना काटा होगा।

इस के उपरांत और सबने भी आहार किया। फिर मदिरा आई उन का भी एक पात्र एक ने फूलशाह को दिया वहां क्या था पानी की नाईं उसे भी पी गए। अंगरेजों ने आनंदित हो के ताली बजाई। कहा—ओह टुम टबी इटना टैयार। हाम टुमारा बराबर काने सकटा नईं।

एक २ ग्लास सभों ने पिया। फूलशाह को तीन चार ग्लास दिए वह सब चढ़ा गए। अङ्गरेज लोग फिर एक एक ग्लास पी कर रंजित हो गए पर शाह साहब जैसे पहिले थे वैसे ही शांत बने रहे। यह देख के सब दंग हो गए। मदिरापान से प्रफुल्लित हो के अङ्गरेजों ने कहा—शाह साहब चलो एक और टमाशा डेको—यह कह कर उन्हें एक और घर में ले गए। उस का द्वार बंद था खुलने पर फूलशाह ने देखा उस में दो स्त्रियां हैं दोनों हिन्दुस्थानी थीं। अङ्गरेजों को देख कर डर गईं।

एक अङ्गरेज ने शाह साहब से कहा—हाम इन को अपना दिल कुशी (खुश) करने का वास्ते लाया है पर ये हम लोग का बाट नईं समझने सकटा इस से डरटा है। टुम इन में किस को पसंड करटा है?

फूलशाह ने कहा—ज़रा ठहरो हम इन्हें अच्छी तरह देखलें—यह कह कर स्त्रियों को द्वार पर आने का संकेत किया।

स्त्रियां डरी थीं कोने में खड़ी हो रहीं। एक अंगरेज हंसते २ दोनों का हाथ पकड़ के फूलशाह के पास ले आया और कहा—अब देखो—

शाह साहब बोले—यह तुम्हें देख के डरती हैं इस से ज़रा हट जाओ।

अगरेज हँस के हट गए। वह तो तमाशा देखना चाहते ही थे।

फूलशाह द्वार के सन्मुख खड़े थे। अंगरेजों के टलते ही स्त्रियों का हाथ पकड़ के घर के बाहर ले आए। फिर बाहर से दरवाज़ा मूंद दिया। अंगरेज़ आके द्वार खटकाने और शाह साहब को कुवाक्य कहने लगे।

शाह शाहब ने युवतियों से कहा—अब तुम भाग चलो हमारे साथ जल्दी २ निकल चलो। तुम मेरी मा हो।

अंगरेजों ने पदाघात से द्वार भग्न कर दिया पर बाहर उन्हें कोई दिखाई न दिया फिर ढूंढ़ा ढांढ़ा भी बहुत पर न शाह साहब का पता लगा न स्त्रियों का।

उनतीसवां परिच्छेद।

गुहा के भीतर अमर सिंह को मूर्छा आगई थी फिर रात को ज्वर आ गया।

अंगरेजरमणी दूसरे खण्ड में रही। पहिले उस में आने के समय अंधेरा दिखाई दिया पर पीछे से उस को सब वस्तु देख पड़ने लगीं।

अमर सिंह को निद्रा आगई तब बाबाजी ने रमणी से कहा—इन्हें तनिक देखते रहना मैं अभी आता हूं।

रमणी ने पूछा—हम अपना घर कब जायगा?

बाबाजी ने उत्तर दिया—यह मैं नहीं कह सकता तुम्हारे घर का वृत्तान्त ले आता हूं तो बतलाऊंगा। जान पड़ता है सिपाहियों ने घर तहस नहस कर दिया है इस से जब तक दूसरे घर का ठीक न हो जाय तुम्हें यहीं रहना चाहिए। सुन्दरी युवतियों को बहुत शंका रहती है।

युवती फिर कुछ न बोली आंखें भर लीं।

बाबाजी चलते समय कह गए—घबराओ नहीं रोगी पर दृष्टि रक्खो।

कुछ काल के उपरांत स्वामी जी लौट आए। कुछ कपड़ा और भोजन की सामग्री भी लेते आए और युवती से कहने लगे—यह कपड़ा पहिनो, जितना

डर अंगरेजी भेष में है उतना हिंदुस्तानी में नहीं है। तुम भेष बदल लो मैं तब तक जाता हूं पानी ले आऊं।

रमणी ने पूछा—हमारा घर का क्या हाल है ?

महात्मा जी ने कहा—घर जला दिया गया उस में कोई नहीं है।

युवती बोली—छोटा कौन ? हमारा बहिन था सो और जगह गया है हाम बी वहीं जाने मांगटा था—यह कह के उस ने हाथ जोड़ कर घुटने टेक कें सजल नेत्र हो ईश्वर को धन्यवाद दिया।

यह देख के बाबाजी का भी जी भर आया और एक मट्टी का घड़ा ले के बाहर गए।

जब उस में जल भर के लौटे तब देखा कि अंगरेजकन्या ने हिन्दुस्तानी भेष ग्रहण कर लिया है। वह लड़कपन में खेल के लिए बहुधा ऐसा भेष धारण करती थी इस से सहज में धारण कर लिया। उस उपद्रव के समय प्राण और धर्म बचाने को बहुतसी मेमें भेष बदले रहती थीं।

बाबाजी के आने पर उस ने प्रसन्न मुख से पूछा—हाम ठीक पहिना है ? आप हाम को पहिचानने सेकटा है ?

बबाजी ने कहा—ठीक है, सिर पर कपड़ा डाल रक्खा करो नहीं तो बालों से लोग पहिचान लेंगे।

युवती ने घूंघट काढ़ लिया और उस के भीतर से मुसकिरा के कटाक्ष किया। बाबाजी जितेंद्रिय थे और कोई होता तो निस्संदेह इस कवित्त का उदाहरण बन जाता कि " बान को मारो बचै तो बचै न बचै अँखियान की सान को मारो "।

बाबाजी उस के सरल स्वभाव से प्रसन्न हो के बोले—मां! हम तुम्हें क्या कह के पुकारा करें ?

युवती ने कहा—हामारा नाम लरा है। पर आप हाम को मां कहटा है काए ? हमारा ग्राडी नईं हुवा। होता बी तो आप का सा लेरका छोटा नईं।

यह कहते २ उस का मुख लज्जा से लाल हो गया।

बाबाजी बोले—हम केवल जन्म देनेवाली ही को मा नहीं कहते। हमारी मा बहुत हैं। देवियों को छोड़ के मनुष्य जाति में भी सोलह प्रकार की मात । होती हैं उन में कन्या भी है इसी नाते से मैंने तुम्हें ' मां ' कहा है। जो बुरा न मानो तो इसी नाम से तुम को पुकारा करूं। नाम सब काल स्मरण नहीं रह सकता।

युवती ने हंस के कहा—आप जो चाहे पुकार सकता है। हम रंज नहीं होने सकता।

बाबाजी ने कहा- इस समय कुछ खा के घड़े से पानी पी लो।

युवती—हमारा पानी पीने से बरटन कराब होगा नईं ?

बाबाजी ने हंस के उत्तर दिया—हम संन्यासी हैं हमें जाति का विचार नहीं है। अमर सिंह पीड़ित हैं इस समय यह भी द्विविधा न करेंगे।

नींद खुलने पर अमर सिंह ने बड़े कष्ट से थोड़ा सा भोजन किया। रात को फिर ज्वर आ गया। कंधे में बड़ी पीड़ा थी। रक्त बहने से बहुत ही अबल हो गए थे। उसी से ज्वर था। ज्वर के ताप से शय्या के पत्र सूखे जाते थे। बंसुलिया बाबा ने नये पत्ते ले आकर बिछा दिया। ज्वर की पीड़ा से अमर सिंह छटपट करने लगे। कभी २ अकबक भी बोलने लगे।

लरा ने उन के पास रात को जाग कर सेवा करने का मानस विदित किया पर बाबाजी ने न माना। कहा—तुम जागने से दुःख पाओगी इस से सो रहो मुझे जागरण का अभ्यास है।

लरा दो तीन बार आ २ कर बैठी अंत में स्वामी जी की आज्ञा से जा के सो रही।

प्रत्यूष काल में लरा बाहर गई। निकटवाली नदी में हाथ मुंह धो कर बहुत से वनपुष्प तोड़ लाई। सूर्योदय के समय महापुरुष ने उस से कहा—तुम यहीं रहना मैं प्रातःसंध्या कर के तुम्हारे लिए भोजन और इन के लिए पथ्य ले आऊं।

प्रभात के समय अमर सिंह को नींद पड़ गई। स्वामी जी की आज्ञा से लरा चुप चाप रोगी के सिरहाने बैठी। बंसुलिया बाबा बाहर गए। लरा ने फूलों की सेज बनाई।

अमर सिंह को भली भांति नींद न आती थी। ज्वर की वृद्धि के कारण कभी आंखें खोलते थे कभी मूंद लेते थे। कभी करवट लेते तो लरा को रानी समझते थे। एक बार कहा भी—रानी! आई हो ?

युवती ने कहा—मैं लरा हूं—वह रानी को न जानती थी।

अमर ने लरा की बात नहीं समझी। आंखें मूंद कर उस की गोद में हाथ रख दिया वह सुहलाने लगी। बाबाजी लौट आए। मृदु स्वर से बोले—इस समय जी कैसा है ?

लरा—अच्छा नईं है, आप देखे।

बाबाजी विकार का पूर्वरूप देख के चिन्ता करने लगे। लरा नींद भूख की चिन्ता छोड़ कर रोगी की टहल में संलग्न हुई। स्वामी जी ने भी अत्यन्त आग्रह देख के निषेध नहीं किया।

लरा अमर सिंह की शय्या के पास बैठ के उन का सुन्दर, शीर्ण, क्लिष्ट मुख देखती थी। प्रलाप के समय की अस्पष्ट असम्बन्ध बातें सुनती थी। उस समय उसे स्मरण होता था कि मेरी रक्षा करने ही में इन की यह दशा हुई है। इस से लरा के हृदय में पहिले स्नेह फिर प्रेम का संचार होने लगा।

विकार की अवस्था में अमर सिंह लरा को रानी समझते थे। कभी उस की गोद में शिर रख देते थे। कभी स्नेह संबोधन से बुलाते थे। कभी उसे पास न देखते तो घबड़ा उठते थे।

इसी प्रकार प्राय: एक सप्ताह बीत गया। बाबाजी नित्य अपनेहाथ से औषध बना के देते रहे। एक दिन लरा ने कातर स्वर से पूछा—क्या यह अच्छा नहं होगा ?

स्वामी जी ने कहा—शीघ्र अच्छे हो जायंगे। कोई चिन्ता नहीं है। फिर लरा ने कोई प्रश्न नहीं किया। वह जानती थी कि अमर सिंह कुंवर सिंह के भाई हैं।

धीरे २ रोग घट चला, एक रात अमर सिंह ने प्रलाप नहीं किया, निद्रा भी अच्छी आई। कई दिन के जागरण से लरा भी कातर थी सो गई, बाबाजी द्वार पर बैठ कर जागते रहे।

भोर को लरा जागी तो देखा बाबाजी बाहर गए हैं। और अमर सिंह शांत भाव से सो रहे हैं, लरा उन के पास आ बैठी।

अमर सिंह स्वप्न देखते थे मानो बहुत थक कर पर्वतवाली निरझरिनी पर लेट रहे हैं, चारों ओर से चिड़ियां चह चहा रही हैं, संध्या के सूर्य की किरणें शरीर पर पड़ रही हैं। रानी पास बैठी हैं, रानी के गले में उन के हाथ पड़े हुए हैं।

लरा उन का सुख के स्वप्न से प्रफुल्लित मुख देख रही थी। उन की बाहें फैल कर उस के गले में पड़ गई। लरा ने शिर झुका लिया उन के ललाट पर इस के अधर का स्पर्श हो गया।

इतने में अमर सिंह की आंख खुल गई। देखा तो एक अपूर्व सुन्दर मुख मुख पर धरा है, किस का मुख है ? रानी का ? क्या रानीका इतना परिवर्तन

हो गया ? इसी प्रकार के संदेह से अधीर स्मरणशून्य हो के अमरसिंह लरा का मुख देखने लगे।

अमर सिंह को आंखें खोलते देख के लरा उठ बैठी। उन की आंखों में बिकार का लक्षण न देख कर उसे बड़ा हर्ष और लज्जा हुई।

अमर सिंह ने फिर आंखें मूँद लीं। लरा के हाथ पर हाथ रक्खे हुए पुकारे रानी! (अभी पूर्व स्मृति नहीं आई)।

लरा ने कहा—रानी कौन है?

स्वर अति कोमल, मधुर और स्नेहपूर्ण था पर रानी का सा न था। अमर सिंह ने ध्यान देके देखा तो दीर्घनिश्वास त्याग कर के करवट लेली।

फिर नींद आ गई। लरा बैठी रही। मन में सोचने लगी—रानी कौन है?

अब बाबाजी लौट कर आए तो उन से पूछा—रानी कौन है?

बाबाजी—क्यों? यह नाम कहां सुना है?

लरा—अमर सिंह यह नाम बार २ लेता है?

बाबाजी—रानी इन की स्त्री का नाम है। आज जी कैसा है?

लरा—अच्छा है, नींद आया।

बाबाजी—अच्छा अब तुम विश्राम करो हम इन के पास बैठते हैं।

लरा कुछ बोली नहीं चली गई।

तीसवां परिच्छेद।

दूसरी बार नींद भंग होने पर अमर सिंह को पूर्ण रूप से चेत आ गया। स्वामीजी को देख कर प्रणाम के लिए उठना चाहा पर उठ न सके। स्वामी जी ने उन के मस्तक पर हाथ रखकर कहा—उठो मत मैं आशीर्वाद देता हूं शीघ्र आरोग्य हो।

अमर सिंह ने क्षीण स्वर से जिज्ञासा की— यहां आए मुझे कितनी देर हुई?

स्वामी जी ने कहा—कई दिन हुए। यह भी मेरा ही आश्रम है।

अमर—मैं यहां कैसे आया?

स्वामी जी—एक अंगरेजरमणी की रक्षा करने में तुम्हें चोट लगी थी। तब से यहीं हो। तुम अभी बड़े निर्बल हो बहुत बातें न करो। यह दूध पीलो।

दूध पी के अमर सिंह बोले—एक बात और बतला दीजिए। यहां मैं के दिन से हूं।

बाबाजी—दश दिन से।

अमर—दश दिन से! पर्वत पर समाचार आप ने भेजा है?

बाबाजी—अब भेज दूंगा। बहुत बातें न करो।

दोनों चुप हो रहे।

कुछ काल में लरा आई। इस बार अमर सिंह से कुछ दूर पर बैठी।

अमर सिंह उसे देखने लगे। देख के बोले—हम तो तुम्हें कुछ जानते हैं। तुम्हारा नाम क्या है?

लरा।

क्या तुम भी कई दिन से यहीं हो?

हां।

मुझे नित्य देखती रही हो?

नहं। कभी २।

हमें कुछ २ सुध आती है कि हम ने सपने में देखा था, कोई दिन रात हमारे पास रहती है जान पड़ता है तुम्हीं उस स्वप्न को सत्य करनेवाली हो।

लरा के नेत्र अत्यंत कोमल हो गए। बोली—टुम को इटना टकलीफ़ मेरा वास्टे हुवा है। हाम टुमारा बडला डेने सेकटा नहं।

अमर—यह क्या कहती हो। मैंने कुछ भी तुम्हारा उपकार नहीं किया। केवल राजपूत का कर्तव्य किया है।

चारों ओर फूल बिछे थे। लरा नित्य प्रातःकाल फूल ले आती थी। एक फूल उठा के वह देखने लगी।

अमर सिंह ने मृदुस्वर से प्रश्न किया—इतने दिन से ऐसे स्थान में रहती हो तुम्हें कष्ट नहीं होता?

लरा—उंगली से फूल की एक पंखड़ी तोड़ती २ बोली—नहं।

अमर—स्वामी जी से क्यों न कहा तुम्हें कहीं सुभीते के ठौर में भेज देते।

कोमल चम्पक अंगुली से पुष्प को खंडित करती हुई लरा कहने लगी—टुमारा खिडमट कौन करटा?

अमर—उस का बन्दोबस्त स्वामीजी कर लेते। तुम्हें यहां गरमी में रहना पड़ा यह अच्छा नहीं हुवा।

लरा का गला भर सा आया। बोली—टुम जाने मांगटा टो हम बी अबी जाटा है।

यह सुन के अमर सिंह ने अत्यन्त विस्मय से कहा—तो क्या तुम्हारा जाने को जी नहीं चाहता ?

लरा—उत्तर न दे कर फूल नोचती रही।

कुछ काल के उपरान्त अमर सिंह को भी कोई पूछने योग्य बात न सूझी। सहसा बोल उठे—तुम यहां बन में पड़ी हो तुम्हारे साहब को न जाने कितनी चिन्ता होगी।

लरा ने लजा के शिर झुका के कहा—हमारा शाडी नहीं हुवा।

अमर सिंह भी लज्जित हो गए। बोले—हां ठीक है ! तुम्हारे यहां तो जवानी में व्याह होता है न। पहिले हमारे यहां भी ऐसी ही चाल थी।

और कुछ बातें न होने पाईं। स्वामी जी आ गए। लरा उठ गई। बाबाजी के द्वारा लरा की सज्जनता अमर सिंह को विदित हुई। अन्त में बाबाजी ने कहा—हम ने अंगरेजों में ऐसी सुशीला कभी सुनी भी नहीं है।

अमर सिंह स्वप्न की बातें स्मरण करने लगे। लरा के आने पर कहा—तुम ने हम से कोई बात नहीं बतलाई। तुम न होती तो हमारा रोग कठिनता से दूर होता।

लरा बोली—बाबाजी को डुवा डो। हाम क्या करने सकटा।

अमर—उन का तो धर्म ही है पर तुमने इतना कष्ट सहा इस का बदला हम कैसे दें ?

लरा (उन की ओर देखती हुई) हाम बूल नईं गेया टुम हाम को आफ़ट से बचाया है।

अमर—यह क्या कहती हो। तुम्हारा बच जाना बड़े सौभाग्य का विषय था।

अमर सिंह क्रमशः उठने बैठने लगे। स्वामी जी ने लरा को गुहा के बाहर निकलने का निषेध कर रक्खा था जिस में कोई राहमार वा सिपाही न देखने पावे। वह केवल सांझ और भोर को बाहर जाती थी। अमर सिंह धीरे २ बाहर जाने योग्य हुए पर दुर्बलता अभी बहुत थी। लरा उन के साथ बाहर वृक्ष के नीचे वा नदी के तीर पर बैठती थी। स्वामी जी ने अमर सिंह से कह दिया था कि हमने तुम्हारे यहां समाचार भेज दिया है पर जब तक भली भांति अच्छे न हो जाओ तबतक यहीं रहना चाहिए।

एक दिन संध्या के उपरांत चंद्रमा के प्रकाश में अमर सिंह घास पर लेटे हुए थे। लरा निकट बैठी थी। स्वामी जी कुछ दिन रहे से बाहर चले गए थे। अमर और लरा बात चीत कर रहे थे इतने में बंसी की ध्वनि सुन पड़ी। अमर सिंह उठ बैठे। लरा ने चकित हो के पूछा—कौन बजाता है?—अमर सिंह ने कहा चुप चाप सुनो जान पड़ता है स्वामी जी बजाते हैं।

प्रदोष के समय उस निर्जन बन में वंशी बजने लगी। दोनों जने बड़े ध्यान से सुनने लगे। पहिले लरा चकित हो के अमर के अति निकट खिसक बैठी थी। सुनते २ आंखों में आंसू भर आए और कपोलों पर बहने लगे।

अमर सिंह भी मुरली के नाद से अत्यन्त चंचल हो गए थे। लरा को रोते देख और भी बिकल हो गए। लरा ने अश्रुपूरित नेत्रों से अमर सिंह की ओर देखा उस चितवन ने हृदय पर अधिकार कर लिया। अमर सिंह की सारी सुध भूल गई। वंशी थम गई। अमर का मोहभंग हो गया। माथा घूमने लगा। उठ कर कहने लगे "चलो भीतर चलें। स्वामी जी कहीं पासही हैं आते ही होंगे।"

अमर सिंह का स्वर कुछ नीरस था। लरा एक बार उन की ओर देख के आंखें मूंद के रह गई। उसे भी देहाभ्यास न था। दोनों जने गुहा के भीतर जाने का उपक्रम कर रहे थे कि हाथ में वंशी लिएहुए महापुरुष आ के कहने लगे—मैं किसी को इस का शब्द नहीं सुनाता पर तुम दोनों मेरे स्नेहपात्र हो इस से सुना दिया। फिर अमर सिंह से बोले—कल तुम्हारे साथ पर्वत की ओर चलूंगा। तुम्हारे संगियों को बड़ी चिन्ता चढ़ रही है। पर तुम अभी शीघ्रता से नहीं चल सकते धीरे २ चले चलना। कल सवारी भी आनेवाली है।

अमर सिंह ने पुलकित हो के प्रणाम किया और कहा—प्रभु की जो आज्ञा—उन के मन में यह पूछने की इच्छा भी न हुई कि बाबाजी ने यह सब प्रबंध कैसे किया। क्योंकि वह जानते थे कि यह चाहें तो क्या नहीं कर सकते।

दूसरे दिन कई एक राजपूत कई घोड़ों को ले के आ गए। एक बनचारी उन्हें मार्ग दिखाने आया था। स्वामी जी ने अंगरेजकन्या से पूछा—तुम कहां जाओगी?—उस ने उदास हो के कहा—जहां आप भेज दिंगा—अमर सिंह बोले—अभी तो हमारे साथ चलने दीजिए फिर बहुत सोच समझ के कहीं भेज देंगे जिस में विपत्ति की शंका न हो।

स्वामी जी अमर सिंह के कथन में सम्मत हुए। अमर सिंह ने लरा को

एक घोड़े पर बिठला दिया और महात्माजी की आज्ञा से एक पर आप चढ़े। बाबाजी ने पैदल ही चलना पसन्द किया। रास्ते में लरा ने पूछा—हाम रानी को डिकने सेकटा है?—अमर सिंह ने कहा—क्यों नहीं।

रानी की मूर्ति उन के मनोमंदिर में विराज रही थी।

इकतीसवां परिच्छेद।

भागीरथी पार हो के कुंवर सिंह ने आजमगढ़ की ओर यात्रा की। मार्ग में कई सौ विद्रोही सिपाही उन से आमिले। अत्रौलिया नामक स्थान में एक अंगरेजी सेना ने उन पर आक्रमण किया। पहिले युद्ध में कुंवर सिंह का दल पराजित हो गया। दूसरे दिन अवसर देख के बाबू साहब ने अंगरेजों पर धावा किया! वे लोग खाना खा रहे थे इतने में देशीय योद्धा टूट पड़े इस से उन्हें भागते ही बना। जो भागने में पीछे रहे वह मार डाले गए। कुछ दूर आगे जा के अंगरेज सेनापति ने सैन्यसंग्रह कर के लड़ाई का उद्योग किया पर उस में भी पराजय हुई। सेनापति आजमगढ़ भाग गए। कुंवर सिंह ने पीछा किया।

अंगरेजों को आजमगढ़ में आश्रय पाने की आशा न थी। सेनापति ने सहाय प्राप्ति के लिए लखनऊ, बनारस, और इलाहाबाद दूत भेजे। आजमगढ़ में उन की सहायता के लिए कुछ सेना भेजी गई।

कुंवर सिंह ने आके दुर्ग और नगर वेष्टित किया। अंगरेजों ने गढ़ से निकल के सामना किया पर अन्त में हार के फिर छिप रहे। इस में बहुत से अङ्गरेज मारे गए।

सेनापति ने देखा अब दुर्ग की रक्षा कठिन है। नगर का अधिकांश शत्रुओं ने ले लिया है। किले की फौज दिन २ घटती जाती है।

लार्ड कैनिंग इलाहाबाद में थे। उन्होंने आजमगढ़ के अंगरेजों की विपद-वार्ता सुनी। आजमगढ़ पर कुंवर सिंह का पूर्ण अधिकार हो जाना बड़ी विपत्ति का कारण होता। बारानसी और आजमगढ़ के बीच में अधिक सेना न थी, कुंवर सिंह को बनारस ले लेना सहज था। इस वृद्ध राजपुत के युद्ध-कौशल, कार्यतत्परता, शीघ्रता का परिचय पाकर लार्ड कैनिंग ने विस्मित हो के कहा—हम लोगों के सौभाग्य से कुंवर सिंह अस्सी वर्ष के हैं, यदि चालीस वर्ष की अवस्था होती तो न जानें क्या करते—बनारस पर कुंवर सिंह का अधिकार हो जाने से इलाहाबाद और पश्चिमोत्तर प्रदेश के अङ्गरेज

शत्रुओं के पूर्णतया वश में आ जाते। राजधानी का सम्बाद मिलना दुष्कर हो जाता। उत्तर दक्षिण पश्चिम के प्रधान २ नगर और दुर्ग विद्रोहियों के हाथ आही गए थे। केवल पूर्व का रास्ता खुला था यदि उसे भी बाबू साहब रोक लेते तो अंगरेजों को भागना तक कठिन हो जाता।

लाट साहब ने शीघ्र ही एक सेनापति को दल बल समेत काशी भेजा। वह बारानसी का प्रबंध कर के आजमगढ़ को चले। लखनऊ से भी कुछ सेना आजमगढ़ भेजी जा चुकी थी। कुंवर सिंह इन सेनाओं के आने का समाचार पा कर युद्ध का उद्योग करने लगे। दोनों सेना का साक्षात आजमगढ़ के सन्मुख हुवा।

मध्य में तंस नाम की छोटी सी नदी है, उस पर नाव का पुल था। अंगरेजों की सेना को आते देख के नदी के दूसरे पार पुल के सामने विपक्षी लोग ठहर गए। कुंवर सिंह चाहते तो पुल तोड़ डालते पर ऐसा करने से अंगरेजो दल उधर से न आता और बाबू साहब ने स्थिर कर लिया था कि कौशल के साथ अंगरेजों को तंस नदी पर ला के अपनी सेना भागीरथी के उस पार ले जायंगे और अंगरेज जब तक आजमगढ़ में प्रबन्ध करेंगे तब तक हम जगदीशपुर चले जाएंगे और वहां कुछ दिन विश्राम कर के फिर युद्ध में प्रवृत्त हो जाएंगे।

इस समय कुंवर सिंह के आधीन बहुत सी सेना थी। इस के पहिले एक सेना जौनपुर के निकट अंगरेजों से लड़ चुकी थी। उस में एक प्रधान अंगरेज सेनापति का भतीजा मारा गया था।

पुल के सन्मुख बड़ी भारी लड़ाई हुई। कुंवर सिंह कई सौ चुने हुए योद्धा ले के पुल की रक्षा करने लगे। शेष सैन्य नगर प्रदक्षिण कर के दक्षिण और भागीरथी के तट पर गई। तब तक बाबू साहब भी पुल छोड़ के आगेवाली सेना से जा मिले।

पुल उतर के अंगरेजों ने कुंवर सिंह का पीछा किया। अंगरेजी सेना थोड़ी थी उस में भी पुल पर कई प्रधान सेनाध्यक्ष और कुछ सेना मर गई थी। अंगरेजों ने देखा कि कुंवर सिंह की सेना श्रेणी बांधे निर्भय चली जाती है। इस समय लड़ने में हमारीही हार होगी। इस से अंगरेजी दल बढ़ा नहीं।

बत्तीसवां परिच्छेद

'क्या सचमुच आते हैं ?'

लक्ष्मी ने कहा—सचमुच नहीं तो क्या। अंग्रेवाले बाबाजी ने कहला भी भेजा है। लोग घोड़ा ले के गए हैं।

रानी को विश्वास न होता था। वह यही समझी थी कि अमरसिंह शत्रुओं के हाथ से जूझ गए। जब से व्याह हुवा था तब से पति का दर्शन तक दुर्लभ रहा केवल युद्ध के कुछ दिन पहिले देखादेखी हुई थी तब से प्रीति अत्यन्त बढ़ गई थी। पर ऐसी प्रीति का सुख क्या बहुत दिन रहेगा ? रानी भली भांति जानती थीं कि वह युद्ध के समय किसी काम को कठिन नहीं जानते। ऐसे लोगों का युद्ध में मारा जाना आश्चर्य ही क्या है ? केवल कुछ दिन से स्वामी के साथ मेल हुवा था जिस में निश्चिन्तता के साथ सेवा करनेका अवसर न मिला था। शत्रु की शंका, वैधव्य की शंका, वियोग की शंका सदा बनी ही रहती थी। रामशरण की दुष्टता के उपरांत और भी एक भय बना रहता था। अमर सिंह चकित की भांति आते थे और चल देते थे। यह सब बातें सोच २ कर रानी नित्य अपने भाग्य की निंदा करती रहती थीं। इस से कई दिन अमर सिंह का समाचार न मिलने से और भी शंका बढ़ गई। अंत में जब सुना कि जीते हैं और आते भी हैं तो सहज में प्रतीति न हुई। क्या गए हुए दिन फिर फिरेंगे ?

शोक के मारे रानी की देह दुबली हो गई थी, रंग मलिन पड़ गया था। पहिले का सा रूप नहीं रहा था। पहिले रूप देख के नेत्र चौंधिया जाते थे अब आंसू भर जाते हैं, मानो वह अतुल रूपराशि करुणासागर में पड़ी रहती थी।

लक्ष्मी भी आगे की भांति चंचल और हास्य गीतमयी न थी। रानी का दुःख उसे भी सताता रहता था। पर आज फिर मुख पर हंसी लौट आई है।

रानी ने कहा—परतीत नहीं पड़ती कि फिर वह देखने को मिलेंगे। क्या भाग में ऐसा सुख बदा है ?

लक्ष्मी ने उत्तर दिया—मैं तुम से सदा कहती रहती हूं कि झूठमूठ की शंका न किया करो। आने में तनिक देर हो जाय तो क्या ऐसी बातें सोचनी चाहिए ? वह बहुत जगह जाते हैं आठ दस दिन की देर हो जाना कोई अचरज है ?

रानी ने कहा—देर होने का कारन भी तो नहीं जान पड़ता। बाबाजी ने इतना ही कहला भेजा था कि उन का जी अच्छा नहीं है अभी कुछ दिन न आवेंगे। जो हम जान लेती, कहां हैं, क्या रोग है, तो जा के सेवा करतीं। पर दूत ने तो कुछ बतलाया ही नहीं। कौन जाने स्वामी जी ने उसे मना कर दिया हो या वह कुछ जानता ही नहो। राम जी करैं वह आ जायं तो हाल तो जानूं क्या था।

लक्ष्मी ने कहा—धीरज धरो आते ही होंगे दो एक दिन में।

अमर सिंह आए। रानी आनंद के आंसू बहाने लगीं कुछ बोल न सकीं। अमर सिंह ने लरा को दिखा के कहा—इन्हें जानती हो?

लक्ष्मी अचंभे से उसे देखने लगीं। उस का वेष अभी तक हिंदुस्तानी था। पर मुख देखने से हिन्दुस्तानी न जान पड़ती थी।

रानी ने उसे देख के कहा हम ने इन्हें कभी नहीं देखा।

लरा ने उन का हाथ पकड़ के कहा—आप रानी है?

रानी—हां। तुम्हारा नाम क्या है?

हामारा नाम लरा।

रानी कुछ न समझीं। तब अमर सिंह ने सब वृत्तांत कहा। केवल लरा की रक्षा के लिए अपने आहत होने की चर्चा न की।

लक्ष्मी ने पूछा—यह बन में कैसे आई थीं?

लरा ने मुसकिरा के कहा—एई हाल बाबू से पुचो। हाम को कैस टरह बचाया। कैस टरह बीमार हुवा पुचो।

क्रमशः सब बातें खुल गईं। अमर सिंह अपने साथियों से मिलने बाहर गए।

रानी ने लरा से कहा—तुम ने हमारे साथ जो भलाई की है उस का बदला हम क्या दे सकती हैं।

लरा ने उत्तर दिया—हाम कुंच नईं किया, टुमारा बाबू हमारा जान बचाया है।

और बातें होने लगीं। लरा अभी तक क्वारी है. यह जान कर रानी और लक्ष्मी को बड़ा विस्मय हुवा। लक्ष्मी ने पूछा तो तुम्हारा ब्याह कब होगा?

लरा ने कहा—बोलने सकटा नईं। हाम ब्याह करने नईं बी मांगटा।

लक्ष्मी ने मन में सोचा कि बालकपन में विधवा हो जाने से तो बहुत दिन कुंवारी रहना अच्छा है।

कुछ दिन लरा वहीं रही। अमर सिंह ने उस का सब इतिवृत्त जान कर आरा भेज देना स्थिर किया। यात्रा का दिन आया। लरा रानी और लक्ष्मी से बिदा मांगने गई। रानी से बोली—टुमारा नाम टीक है। ऐसा खिसमट रानी का नई छोटा जैसा टुमारा है। हाम को कबी २ याड करो। हाम अब नई' मिलेगा।

अमरसिंह कई राजपुतों के साथ उसे पहुंचाने गए, मार्ग में बहुत बातें नहीं हुई। आरा के निकट आ के लरा ने अपना वेश परिवर्तन किया।

आरा में अमरसिंह के कई दूत रहते थे। समाचार पा के एक दूत नगर के बाहर आया। वही अंगरेजरमणी को ले गया। आरा में लरा के एक आत्मीय का घर था।

लरा ने एक बार अमरसिंह के हाथ को अपनी अंगुली से स्पर्श किया। यह न सोच सकी कि क्या कहूं। गला रूंध गया। कुछ काल चुप रही फिर बोली—रानी से बोलो हाम को बूल जाय मट। तुम बी याद रकेगा?

अमरसिंह ने कहा—राजपुत्र कभी उपकार को नहीं भूलते।

लरा आरा चली गई। अमरसिंह पर्वत पर लौट आए।

तेंतीसवां परिच्छेद।

रामशरण को आरा में रहने से निर्वाह न देख पड़ा। फूलशाह को गोरों के हाथ सौंपने पर उसे घर तक आना कठिन हो गया। गोरे देख पावेंगे तो जुरूर पकड़ लेंगे। इस से वह आरा छोड़ भागने का दाव सोचने लगा। पियारी मंदिर में रहती थी। सम्पत्ति के समय उसे जो सुख न मिलता था अब मिलने लगा। रामशरण सोच में था कि इसे कहां छोड़ जाऊं। क्या यहीं छोड़ कर चल दूं? यह बिचार विदित होने पर पियारी ने रो कर कहा—हमें भी साथ ले चलो जो तुम्हारे करम में लिखा होगा हम भी भुगत लेंगी।

रामशरण निष्ठुरता से हंस के बोला—तुम यहां बड़े मजे में रहोगी। फूलशाह मदद करेंगे। नहीं तो गोरे मदद देंगे।

पियारी—हमें छोड़ न जाना। अकेले आदमी को जादा डर रहता है दो होंगे तो अच्छा होगा।

यह बात रामशरण के भी मन में आ गई। जहां चारों तरफ़ दहशत हो वहां औरतों से भी मदद मिल सकती है पर औरत साथ होने में आफतें भी

बड़ी होती है यह विचार कर बोला—तुम्हें साथ लेने में तो और भी खौफ़ है। गोरे या सिपाही देखेंगे तो दिक करेंगे।

पियारी और भी रो कर कहने लगी—सिपाही औ गोरों से जितना डर हम को है उतना ही तुम को भी है। ऐसी राह से चलो जहां वे न मिलें।

अंत में रामशरण ने उसे साथ रखना ही ठीक समझा। वह काशी जी जाने के विचार में था। बहुत लोग वहीं भाग गए थे। क्योंकि वहां अंगरेजों का अधिक अत्याचार न था। जीविका भी वहां मिल सकती थी।

एक रात्रि को सुभीता पाके वह आरा से चल दिया। उन दिनों प्राय: सभी भागनेवाले संन्यासी बन के भागते थे, वैसा ही रामशरण ने भी किया। पियारी संन्यासिनी के भेष में उस के साथहुई। दोनों राजमार्ग छोड़ कर बन के रास्ते से चले। राजपथ में सदा सेनाएं आया जाया करती थीं। बन में भी कई दल अमर सिंह को खोजते थे। रामशरण दो एक बार पकड़ जाने से बच गया। इस से अंगरेजों की दृष्टि से बचने की मनसा से गम्भीर बन में चला गया।

रामशरण और पियारी को कई दिन चलने के उपरांत पर्वतश्रेणी दिखाई दी। यह दोनों न जानते थे कि अमर सिंह वहीं रहते हैं।

राजपूत जानते थे कि अंगरेजों ने बन में प्रवेश किया है। इस से वह बड़े सावधान रहते थे। अंगरेजों ने बन का कुछ भाग काट भी डाला था, जहां अमर सिंह थे वहां पहुंचना सहज न था तो भी अमर सिंह ऐसी चेष्टा में थे कि अंगरेज पता न पावें। और यह भी चिंता रखते थे कि किसी प्रकार उन्हें बन से निकाल बाहर करें।

एक दिन सूर्योदय के उपरांत अमरसिंह वासस्थान के निकटवर्ती वृक्ष के नीचे खड़े थे। रानी और लक्ष्मी भी पास खड़ी बातें कर रही थीं। कुछ दूर पर कई एक राजपुत्र युद्ध के लिए सज रहे थे। अमर सिंह का अश्व सज्जित हो रहा था। वह स्वयं युद्ध का वेष धारण किए थे। तलवार सदा कटिप्रदेश में रहती ही थी। इस समय हाथ में चाबुक भी था।

अमर सिंह युद्ध में न जाते थे केवल अंगरेजों की खोज में जाते थे कि वह कहां हैं क्या करने की चेष्टा में हैं। इसी अवसर पर दो राजपुत्र एक संन्यासी को पकड़ लाए और पीछे २ एक संन्यासिनी आई। अमर सिंह ने पूछा—इन्हें क्यों पकड़ा है ?

एक राजपुत ने कहा—यह यहां अपने आने का कारण नहीं बतलाता और आज कल बहुत से बदमाश इसी वेष में फिरते हैं कौन जाने यह भी गोइंदा हो।

अमर—गोइंदे क्या स्त्री को साथ लिए रहते हैं ?

राजपुत—संन्यासी भी तो युवती को लिए बन में नहीं फिरा करते।

अमर सिंह को भी संदेह हुवा। संन्यासी आंखें न मिलाता था। केवल माला खड़का रहा था। उस का शरीर कांपता था संन्यासिनी की आंखों में आंसू भरे थे मुंह सूख गया था।

रानी बड़ी तीव्र दृष्टि से उस की ओर देख रही थीं। एकाएकी कहने लगीं—यह और कोई नहीं है वही पापी रामशरण है! जटा औ दाढ़ी नकली लगाए है!

यह कहना था कि उस की दाढ़ी और जटा खींच कर अलग कर दी गई। साथ ही अमर सिंह ने गरदन पकड़ कर धरती पर पटक दिया और छाती पर पांव धर के खड़े हो गए। कमर से तलवार भी निकाल ली।

रामशरण की छाती के हाड़ चर्र मर्र करने लगे। स्वास रुक गई। आंखें निकल आईं। इस से अमर सिंह ने पांव उठा लिया। कहा—ऐसे दुष्ट को पैर से कुचल के मारेंगे तो पैर अपवित्र हो जायंगे!—राजपुतों को आज्ञा दी कि इस के शरीर को टुकड़े २ कर के सियारों को खिला दो।

रामशरण उन के पैर पर गिर के भीत, शुष्क, आर्तस्वर से कहने लगा—मैं बेशक नीच हूं! पर आप अपनी बुजुर्गी की तरफ़ देखिए! मेरे गुनाह को और जो चाहिए सज़ा दीजिए पर जान बचा दीजिए! रच्छा कीजिए!

अमर सिंह ने राजपुतों को हाथ से इंगित किया वे रामशरण को मरे बकरे की नाईं टांग कर ले चले। रामशरण रोने चिल्लाने लगा। लच्छी डर कर सूख गई। रानी स्थिरता के साथ खड़ी कठोर दृष्टि से देखती रहीं। मन में सोचती थीं कि इसी चंडाल ने हमारा धर्म लेना चाहा था।

पियारी दौड़ कर रानी के चरणों पर गिर पड़ी और आंसू बहाती हुई बोली—हमारे सामी की रच्छा करो! रानी ने कठोर स्वर से कहा—जानती हो तुम्हारे स्वामी ने क्या पाप किया है ?

पियारी—यह मैं नहीं जानती, न जानना चाहती हूं, इतना जानती हूं कि इस ने तुम्हारा बड़ा कसूर किया है! पर तुम देवी हो, पतीवरता हो, मैं

भीख मांगती हूं मेरे सुहाग की रच्छा करो। मेरे स्वामी के परान मुझे भीख में दे दो। भगवान तुम्हारा राज सुहाग बनाए रक्खे। मेरी चूड़ियां तुम्हारे ही बचाए बच सकती हैं। मैं भीख मांगती हूं तुम्हारी लौंड़ी हूं मेरा सुहाग अपनी निछावर में दे दो।

रानी के नेत्र अत्यन्त कोमल हो गए। हृदय की कठिनता जाती रही कोमल स्वर से पुकारीं—स्वामी!।

अमर सिंह पास आए। रानी ने कहा—उस पापी को छोड़ दीजिए। मैं आप से उस के प्राण की भिच्छा चाहती हूं।

"तुम! उस के प्राण!" अमर सिंह को बड़ा विस्मय हुवा। कि रानी उस की रच्छा करना चाहती हैं।

रानी ने अपने चरणों पर पड़ी हुई स्त्री को दिखा के कहा—यह उस की घरवाली है। स्त्रियों के लिए विधवा हो जाने से मर जाना अच्छा होता है। इस को आज्ञा दें कि अपने पति को ले के चली जाय।

अमर सिंह समझ गए। कुछ चिन्ता कर के कहने लगे – कि तुम्हीं उसे अपनी ओर से छोड़ दो—यह कह के राजपूतों को आज्ञा की कि—बंधुए को यहां ले आओ।

रानी ने उक्त स्त्री से पूछा तुम्हारा नाम क्या है? स्त्री ने कहा—मेरा नाम पियारी है।

रानी—क्या यह तुम से प्रीति करता है?

स्त्री चुप हो रही। फिर कुछ देर में बोली—नहीं, पर मेरे लिए तो यही सब कुछ हैं।

रानी ने कहा—तुम सुलच्छनी हो तुम्हारे गुनों से यह कभी सुधर जाय तो अचरज नहीं है।

इतनी बातें हुई थीं कि राजपूत लोग रामशरण को ले आए।

अमर सिंह ने रानी से कहा—अब कहो क्या कहती हो?

रानी ने कहा—रामशरण!

रामशरण कांपता हुवा चारों ओर देख रहा था। प्राण बचने की आशा न थी। रानी को राच्छसी की भांति देखता था। उन के मुंह से अपना नाम सुन के और भी भयातुर हो गया। जाना कि यह मुझे अपने सामने बध करावेगी। रामशरण ने हाथ जोड़ कर रानी से कहा—मेरी जान न लीजिए। मैंने आप की उंगली तक नहीं छुई, आप बहादुरों के खानदान की हैं। मेरी क्या मजाल

थी कि बेअदबी करता। मेरी जान लेने से आप को क्या फ़ायदा होगा? पियारी इस समय अलग हट कर खड़ी हो रही थी। रानी बोलीं—तू एक ही चंडाल है। तेरा मर जाना ही अच्छा है पर तू मरेगा तो एक बिचारी बिधवा हो जायगी। इसी से तू मारा न जायगा अपनी स्त्री के पुन्य परताप से तू बचगया। अब जहां जी चाहे चला जा पर अपने प्रान बचानेवाली को भूल न जाना।

रानी के मुख का भाव, बात करने की चेष्टा, तेजस्विनी मूर्ति देख के अमर सिंह बड़े ही आनंदित हुए। राजपूत अमर सिंह की ओर देखने लगे। अमर सिंह ने संकेत द्वारा छोड़ देने की आज्ञा दी। अभीतक रामशरण को बचने की आशा न थी बनावट से बिनती कर रहा था। मुक्ति की आज्ञा सुन कर वाक्यशून्य हो गया। पियारी ने रानी के चरण छू के कहा जैसे आपने मुझे सुखी किया है वैसे ही रामजी आप को सदा सुखी रक्खें।—यह कहकर पति का हाथ पकड़ के चलने को उद्यत हुई। अमर सिंह ने आगे बढ़ के रामशरण से कहा—तू बच गया अब सुख से चलाजा पर एक चिन्ह भी लेता जा जिस में सब लोग तुझे सहज में पहिचान सकें।

यह कहकर रामशरण के ललाट पर ऐसी तीव्रता से कोड़ा मारा कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक का चमड़ा उड़ गया। लहू बहने लगा। कपड़े से माथा छिपा के शिर झुका के वह चल दिया। पियारी भी रोती २ साथ चली।

रानी ने अमरसिंह से पूछा—यह क्या किया?

अमरसिंह ने कहा—कुछ नहीं एक चिन्हारी कर दी है।

रामशरण और पियारी दूर चले गए। तब बन की नदी के तीर पर पहुंच के पियारी ने उस के मस्तक का लहू धोया और कपड़ा भिगो के बांध दिया।

रामशरण ने कहा—तेरे ही पीछे तो हमारी यह हालत हुई है।

पियारी—मेरे पीछे!

रामशरण—हां तू साथ न होती तो हम इधर क्यों आते? यह कह के दुष्ट ने स्त्री को लात मारी।

पियारी ने कुछ चिंता न मानी। मार तो उसे नित्य ही खानी पड़ती थी।

रामशरण के कपाल पर यह चिन्ह जन्म भर बना रहा।

चौंतीसवां परिच्छेद ।

विद्रोहियों के शिरधरा लोग आपस में मिल के एक दूसरे की सहायता न करते थे इसी कारण अंगरेजों ने जय लाभ कर लिया। बिहार में बाबू कुंवर सिंह, अवध में मौलवी साहब, मध्य भारत में तांतिया टोपी ने, अपने पराक्रम से अंगरेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। जो कहीं यह सब एकत्रित होके युद्ध करते तो अंगरेजों का जय पाना कठिन था। अंगरेजों को यह बड़ी सुविधा रहती कि एक स्थान पर उन की सेना विपत्तिग्रस्त होती तो दूसरे स्थान से सहायता आजाती थी। लखनऊ और आरा आदि अनेक स्थान पर इसी प्रकार उन की रक्षा हुई थी। कुंवर सिंह आजमगढ़ में आए तो इलाहाबाद और लखनऊ से अंगरेजों को सहायता प्राप्त हुई पर बाबू साहब को कहीं से सहायता न मिली। कुंवर सिंह ने देखा काशी जी का रास्ता बन्द है और किसी ओर जाने से कोई फल न होगा, इस से बिहार लौट जाना ही उचित समझा। जब वह भागीरथी के सन्मुख जाने लगे तो आजमगढ़ के सेनापति ने दूसरे सेनापति को समाचार दिया। द्वितीय दलपति पहिले से आके उसी मार्ग में जम रहे। राजपूतों ने मार्ग में कुछ विश्राम किया और प्रचार कर दिया कि सेना बलिया नामक ग्राम के सन्मुख पार उतरेगी। बलिया में अंगरेज सेनापति था वह यह सम्बाद पाकर फूल उठा। कुंवर सिंह ने गुप्तभाव से कुछ सेवकों को शिवपुर नामक स्थान में भेज दिया वह स्थान बलिया से १० कोस पूर्व है। वहां जाके सेवकों ने बहुत सी नावें संग्रह कीं। रात बीतने पर बाबू साहब ने चुप चाप यात्रा की। बलिया में अंगरेज रात भर युद्ध का आयोजन करते रहे। सेनापति ने बिचारा था कि जो भोर तक कुंवर सिंह न आवेंगे तो हम आपही जा के उन पर आक्रमण करेंगे। प्रभात हो गया। अंगरेजों का दल सिपाही सेना से लड़ने को चला। जहां रात्रि को कुंवर सिंह ने छावनी की थी वहां अंगरेज़ जा पहुंचे। पर सिपाही वहां कहां ? वह तो शिवपुर घाट को चल दिए थे। यह समाचार पाते ही सेनापति ने उधर को कदम बढ़ाया। पांच, छः कोस बालू का पथ वेग से चलने पर भी शीघ्र नहीं निमटता। अंगरेज़ पहर दिन चढ़ने के उपरान्त गंगातीर पहुंचे। कुंवर सिंह की बहुत सी सेना पार हो चुकी थी, वह स्वयं कई राजपूतों के साथ नाव पर चढ़ रहे थे, इतने में अंगरेज आ पहुंचे। नौका खुल गई, अंगरेजों ने उस पर गोली चलाना आरम्भ किया। बाबू साहब नाव पर खड़े थे एक गोली उन की

बाईं कुहनी में आ लगी। हड्डी टूट गई हाथ झूलने लगा। रक्त से कपड़े भींग गए। साथवाले कपड़े से हाथ को बांधने लगे पर उन्हों ने निवारण कर के कहा—यह तो बेकाम हो गया। बांधने से क्या होगा। इसे काट डालो फिर कपड़े से लहू रोकना।

राजपूत चुप हो रहे। कुंवर सिंह बोले—कोई डर नहीं है। जो कोई हमारी आज्ञा पालन करना चाहे वह इस हाथ को काट दे।

किसी ने ऐसी आज्ञा न मानी। कुंवर सिंह कटि में सदा तीक्ष्ण भुजाली रखते थे उसे दहिने हाथ में निकाल के एक ही आघात में भग्न हस्त को बाबू साहब ने छेदन कर डाला और यह कह के गंगा जी में फेंक दिया कि—गंगा माई! यह राजपूत का हाथ अपने चरणों के तले रखना!

पार पहुंच के कुंवर सिंह नाव से उतरे। लहू निकल जाने के कारण अत्यन्त निर्बल हो गए थे इस से घोड़े पर न बैठ सके। लोग निकटवाले गांव से पालकी ले आए। उस पर लेट के कुंवरसिंह जगदीसपुर चले।

पैंतीसवां परिच्छेद।

रामशरण को यह चिन्ता सताने लगी कि किसी तरह अमर सिंह से बदला लेना चाहिए। पर्वत पर इसे अनुमान हो गया था कि राजपूत लोग अंगरेज़ों से लड़ने का सामान कर रहे हैं। इस से इस ने अंगरेज़ों से मिलने का बिचार किया।

अंगरेज़ों से भी डरता ही था। उन दिनों भागनेवाले कैदी को बिना विचार ही फांसी होती थी। तौभी रामशरण ने "पर अकाज लगि तन परिहरहीं" का उदाहरण बन के अंगरेज़ों के पास गमन किया। वन में एकमैदान के मध्य अंगरेज़ों ने छावनी डाली थी वहां यह भी पहुंचा। पियारी को कहीं छिपा गया। वहां के पहरेदार ने इसे गिरफतार कर लिया।

रामशरण ने उस से कहा—हमें जरनैल साहब के पास ले चलो।

वह ले गया तो इस ने सेनापति से कहा—मैं हुजूर को एक खुशखबरी सुनाने आया हूं।

सेनापति ने सन्देह में आकेकहा—टुम गोइंडा जान परटा है। टुम को फांसी होगा।

रामशरण के भाग्य से वहां कोई पहिचाननेवाला न था। अंगरेज़ सेनापति

और सैनिक गण आरा चले गए थे। इस से रामशरण ने निर्भय हो के कहा—हुजूर मुझे फांसी देने से क्या फ़ायदा होगा। पहिले मेरी अर्ज़ सुन लीजिए फिर जो मुनासिब समझिए कीजिए।

सेनापति (दाढ़ी मुंह में दबा के) जल्डी बोलो क्या बोलटा है ?

रामशरण—हुजूर! मैं गोइंदा होता तो बेखौफ़ यहां न चला आता। मैं अमर सिंह को देख आया हूं। हुक्म हो तो वहां सिपाहियों को ले जाऊं नहीं तो वह खुद भी इधर ही आनेवाला है। सेनापति (दाढ़ी को दो उंगलियों से उठाते हुए) टुमारा बाट उस का आने पर टीक समजा जायगा। टबटक टुम कैड रहो।

रामशरण—बहुत अच्छा हुजूर! पर एक अर्ज़ यह भी है कि अमर सिंह के देख लेने से कुछ न होगा अगर मेरी बात मानिए तो उसे कैद कर लीजिएगा या उस की लाश आरा में भेज सकिएगा।

सेनापति—बोलो क्या बाट ?

रामशरण—पहिले तो यहां से फौज हटा दीजिए। पर जाहिरा में फौज और छावनी यहीं रखिए जिस में वह धोखा खा जाय। इस तरह का धोखा खा के राजपूत इधर आजायंगे तब मैं उसे गिरफ़तार करा दूंगा।

सेनापति—वेल! टुम होशयार आडमी जान परटा है। अगर हाम टुमारा एतबार करे टो बोलो टुम क्या करेगा ?

रामशरण—मैं ऐसी तदबीर करूंगा जिस में अमर सिंह आप के पास अकेला आ जाय और अगर यह न हुवा तो भी कुछ हर्ज नहीं है आप लड़ाई का सामान कर रखिएगा।

सेनापति (मुसकिरा के) हामारा फौज डी जगह रहेगा टो अमर सिंह को अच्छा मौका मिल जाने सेकटा और फिर टुमारा वास्टे बरा डरकट (दरख़्त) डेकने होगा पासी डेने को।

रामशरण—हुजूर जो चाहें कर सकते हैं मैं भाग न जाऊंगा। पर अब देरी करना ठीक नहीं है। अमर सिंह आता ही होगा। अगर मेरी बात ऐतिबार के लायक न निकले तो मुझे फांसी दिलवा दीजिएगा।

सेनापति उस के मुंह की ओर देखते थे। बोले—इस टरफ़ टो अमर सिंह का कैरकाह (खैरखाह) बैठ है टुम उस का डुश्मनी करटा है काए ?

रामशरण ने माथे पर से कपड़ा हटा के कोड़े को दाग दिखाई। और

आंखों में लहू भर के कहा—उसी ने मेरी यह हालत की है, उस के कैद हो जाने से हुजूर का भी काम होगा और मेरा भी कलेजा ठंढा हो जायगा।

सेनापति—यह डाग कैसा है ?

रामशरण (मुंह लटका के) चाबुक का हुजूर।

सेनापति—उस ने टुम को मारा काए वास्ते ?

इस के उत्तर में रामशरण ने इस आशय की गप्प हांकी कि मैं सरकार का खैरखाह हूं बागियों का पता लगाने को इधर उधर फिरता था इतने में राजपूत लोग अमरसिंह के पास पकड़ ले गए। उन्हीं ने बड़े ज़ोर से चाबुक मारा और दूसरे दिन फांसी देने के लिए कैद कर लिया। मैं पहरेवालों से मिल के भाग आया हूं।

सेनापति को विश्वास सा हो गया। पूछा—टो बागी लोग कब टक आवेगा ?

रामशरण—आते ही होंगे। कल रात को यहां दुपहर तक पहुंच जाने की सलाह करते थे।

सब बातें सुन के सेनापति ने सेना को सज्जित होने की आज्ञा दी। सेना छावनी के पास ही बन में छिप रही। छावनी में केवल थोड़े से लोग रह गए और थोड़ी ही दूर पर रामशरण और चार सिपाही घोड़ों पर चढ़ के खड़े हो रहे। सैनिकों को आदेश कर दिया गया कि रामशरण भागना चाहे वा कोई शठता करे तो उसे मारडालना। रामशरण ने भी समझ लिया कि कोई बदज़ाती करूंगा तो बचूंगा नहीं।

सिपाहियों को देर तक राह नहीं देखनी पड़ी। रामशरण ने राजपूतों का एक दल सावधानी से आते हुए देखा। सीखे हुए घोड़े निशब्दता से चले आते थे। रामशरण ने अमर सिंह को देखते ही गाली देना आरम्भ किया। अमर सिंह विस्मय के साथ इधर उधर देखने लगे। इसे देखा तो साथियों से मुसकिरा के कहा—तनिक ठहरो मैं आता हूं।

अमर सिंह रामशरण के पास घोड़ा बढ़ा ले गए। रामशरण भी अंगरेज़ी सेना की ओर भागा। चारों सिपाही भी वृक्षों का आड़ से उस के साथ हुए। भरी हुई बन्दूकें उन के हाथ में थीं। रामशरण प्राण प्रण से भाग के अंगरेज़ों की सेना में जा पहुंचा। अमर सिंह क्रोध के मारे उस की धूर्तता न समझ सके उसी के पीछे चले गए। पीछे से चारों सैनिक भी आ गए। अमर सिंह ने

तलवार निकाल के दो चार को मार गिराया पर अंत में बन्दी हो गए। सेनापति की आज्ञा थी कि कोई उन का वध न करे। क्योंकि उन से बहुत सी आशा थी।

इतने में राजपुत्र भी आ गए पर वह बहुत थोड़े से ऊपर से लड़ने को निकले भी न थे इस से कुछ ही काल लड़कर चले गए।

रामशरण ने सेनापति को लम्बी चौड़ी सलाम की और कहा—हुजूर अब मेरे लिए फांसी का हुक्म हो। मैं हाज़िर हूं।

सेनापति ने हंस के कहा—हाम बूल गया था। टुम आरा चले बरा इनाम पावेगा। टुम बरा अच्छा काम किया।

रामशरण हाथ जोड़ के बोला—हुजूर अगर पहिले मुझ से कोई क़सूर हो गया हो तो ?

सेनापति—वोह! सब माफ़ किया जायगा।

रामशरण—हुजूर ठीक फरमाते हैं ?

सेनापति—टुम हामारा बाट टीक जानटा नई ?

रामशरण ने बड़ी नम्रता से कहा—भला हुजूर की बात क्योंकर ठीक न समझूंगा। लेकिन बिहतर होगा कि अमर सिंह को यहीं फांसी दिलवा दीजिए तो और राजपूत भी डरकर इताअत क़बूल कर लेंगे नहीं तो पीछे से अमर सिंह भाग जाय तो अजब नहीं। वह एक ही सुतफ़नी है।

सेनापति ने कहा—नई इस को आरा में ले जायगा वहां जो होगा टीक होगा। एई आडमी अमर सिंग है या नई हाम टो जानटा नई। सिरफ़ टुम बोलटा है।

रामशरण ने कुछ मुंह बिगाड़ के कहा—हुजूर को अभीतक एतिबार नहीं है।

सेनापति—एटवार है टोबी कानून का पाबंडी होगा नई ? इस को आरा ले जाने होगा।

रामशरण ने अमर सिंह की ओर फिर कर कहा—अब कहिए ?

इस पर सेनापति ने रामशरण को डांट के कहा—वेल! टुम ऐसा बाट बोलने सकेगा नई—साथ ही अमर सिंह से कहा—डिको! टुम को आरा ले चलटा है वहां जो होगा टीक होगा पर यहां कोई टुमारा बेइज़टी करने सकेगा नई।

सैनिक लोग अमर सिंह को ले गए। रामशरण ने सेनापति से कहा—हुजूर एक अर्ज है।

सेनापति—वो क्या ?

रामशरण—एक डोली का हुक्म कर दीजिए।

सेनापति—उस का क्या होगा ?

रामशरण—मेरी औरत उस पर चढ़ के आरा जायगी हुजूर।

सेनापति (आश्चर्य से) वेल टुमारा औरट।

रामशरण—हां हुजूर। मेरी ससुराल नजदीक ही है। ससुर मर गए हैं घर में कोई है नहीं। हुक्म हो तो औरत को आरा ले जाऊं।

सेनापति ने कहा—अच्छा उस का बंदोबस्त कर डेगा। मन में सोचे "नेटिव लोग कैसा जानवर का माफिक है"

अमरसिंह बन्दी हो के आरा में आए।

छत्तीसवां परिच्छेद।

अमरसिंह के बन्दी होने का समाचार शीघ्र ही आरा भर में फैल गया। लरा ने भी सुना।

सेनापति अमरसिंह को मैजिस्ट्रेट के पास ले गए। मैजिस्ट्रेट साहब अपने बंगले ही में कचहरी करते थे। बंगले के चारों ओर सदा थोड़ीसी सेना और पहरा रहता था। उन के बंगले के पास ही लरा भी अपने नातेदार के साथ रहती थी।

लरा को देख के आरा के अंगरेज बड़े विस्मित हुए थे और उस का वृत्तान्त सुन के और भी चकित हो गए थे। यह किसे विश्वास था कि विद्रोहियों के हाथ से अंगरेजयुवती रक्षा पावैगी। कुछ दिन आरा के अंगरेजों में लराही की चर्चा अधिक हो रही थी। वहां के मैजिस्ट्रेट साहब का व्याह न हुवा था। वह लरा पर मोहित हो गए थे। इच्छा थी कि विद्रोह-शांति के उपरांत विवाह का प्रस्ताव करेंगे। लरा किसी से बहुत मिलती जुलती न थी।

मैजिस्ट्रेट के बंगले में अमर सिंह के आने का सम्वाद पाके लरा वहां जा पहुंची। मैजिस्ट्रेट बैठे हुए सेनापति से पूछ पाछ कर रहे थे। अमर सिंह खड़े थे। आठ दश सिपाही शस्त्र लिए पहरा दे रहेथे। इतने में लरा को देख

के मैजिस्ट्रेट साहिब ने उस के लिए अपनी कुरसी छोड़ दी। लरा कभी उन के यहां अकेली न जाती थी। जाती भी थी तो विचारालय में प्रवेश न करती थी। उन दिनों विचार में बहुत विलंब न होता था।

लरा बैठ गई तब मैजिस्ट्रेट ने कहा—वेल, मिस टाइलर ! कुच हुकूम ? (लरा के पिता का नाम टाइलर था)

लरा ने कहा—नईं ! हाम मोकाडमा डेकने आया है।

मैजिस्ट्रेट—बरा मेहरबानी। टुम अमर सिंग का पास कुच डिन मेमान (मिहिमान) रहा है उस को डेक के पहिचान सेकटा है ?

लरा सोचने लगी क्या जवाब दूं। अमर सिंह ने एक बार उस की ओर देख के मुंह फेर लिया था। उन की ओर देख के लरा लज्जित हो गई थी। इधर सैनिक, सेनापति, मैजिस्ट्रेट लरा की ओर देख रहे थे। लरा ने कहा अलबट (अलबत्ता पहिचान सकती हूं)।

मैजिस्ट्रेट ने अमर सिंह को दिखा के पूछा—ये आडमी अमर सिंग है ?

लरा ने कहा—यें क्या बोलटा है ?

मैजिस्ट्रेट यथार्थ विचारासन पर होते और लरा सचमुच साक्षी होती तो ऐसा प्रश्न न किया जाता। लरा का उत्तर सुनके मैजिस्ट्रेट साहब ने मुसकिरा के कहा—अबी इस से पूचा नईं। आउर इसका बाट का एटबार बी नहीं है। पर अमर सिंग को बौट लोग जानटा है। डो चार गवाही बुलाने होगा आप उस को जानटा है, इसी से हाम पूचा।

लरा ने कहा—ए आडमी अमर सिंग जान परटा नईं।

लरा ने विचार किया था कि ऐसा कहने से कदाचित यह छुट जायं। ऐसे अवसर झूठ बोलना बुरा नहीं है।

अमर सिंह लरा की ओर देख के स्नेहपूर्ण स्वर से बोले—मिस टाइलर ! (मैजिस्ट्रेट के मुख से सुन के यह नाम सीख लिया था) आप हमें बचाने के लिए ऐसा कहती हैं पर राजपूत मृत्यु से इतना नहीं डरते कि अपना नाम ग्राम छिपावें। ऊपर से अमर सिंह को कौन नहीं जानता। क्या अंगरेज हमें इतनी जल्दी भूल गए होंगे। क्या यह साहब खुद हमें नहीं पहिचानते ?

मैजिस्ट्रेट ने लरा से कहा—अब आप क्या बोलटा है ?

लरा ने कहा—ये आडमी खुड (खुद) कैटा है टो हाम क्या बोलने सेकटा—यह कह के लरा चली गई।

मैजिस्ट्रेट ने दो चार पहिचाननेवालों को बुलाया। सभी ने पहिचाना, तो साहब ने अमर सिंह से कहा—टुमारा बाबट कमिशनर शायब का राय लिया जायगा पर टुम को फांसी होगा आलबट। टुम बरा बागी है। टुम छोटा रहने से बलबा चूटेगा नहीं।

अमर सिंह ने कहा—हम मरने को तैयार हैं पर हमें फांसी न देके गोली से क्यों न मारते ?

मैजिस्ट्रेट—नहीं गोली से सिर्फ सिपाही मारा जाटा।

अमर—हम ऐसे साधारण राजपूतों को तुम सिपाही नहीं समझते ?

मैं०—नहीं। टुम बागी हाय।

अमर—तो तुम चोर हो।

मैजिस्ट्रेट ने क्रोध रोक के कहा—ईस को ले जाओ। होश्यारी से रक्खो। ये बरा बागी चालाक हाय—

सेनापति ने मैजिस्ट्रेट से पूछा—ये कहां रक्खा जायगा ?

विद्रोहियों ने कारागार फूंक दिया था। सेना मैदान में छावनी किये थी सैन्याध्यक्ष लोग एक टूटे फूटे घर में रहते थे। अमरसिंह कहां रक्खे जायं ?

मैजिस्ट्रेट के बंगले में दो नए कमरे बने थे। उन के दरवाजे भी मजबूत थे। एक में सरकारी खजाना था। एक खाली पड़ा था। उसी में अमर सिंह का रखना उत्तम समझा गया। मैजिस्ट्रेट जानते थे कि आरा के बहुत से लोग कुंवर सिंह और अमर सिंह के शुभचिंतक हैं। अवसर पा के भगा ले जायं तो आश्चर्य नहीं। इस से अमर सिंह को अपने ही यहां के कमरे में रक्खा और पहरेवालों की संख्या दूनी कर दी। उस कमरे में दो द्वार थे एक बाहिर की ओर था उसी से अमर सिंह भीतर गए। दूसरा द्वार भीतर की ओर था उस में से मैजिस्ट्रेट के शयनगृह का भी मार्ग था। बीच में दो कोठे और थे। इधर पहरे की आवश्यकता न थी। तीन कठिन द्वार भग्न किए बिना अमर सिंह मैजिस्ट्रेट साहब के शयनगृह में न जा सकते थे। पहिला द्वार लोहे के छड़ों का था, उस का तोड़ना मनुष्य का काम न था। इन सब दरवाजों की ताली साहब अपने पास रखते थे। शयनागार में सदा भरी हुई पिस्तौल रहती थी। अमर सिंह निरस्त्र थे।

जिन्हों ने फूलशाह को बंद किया था वह दूसरे मैजिस्ट्रेट थे। यह मैजिस्ट्रेट अमर सिंह को बंद कर के लौटे तो देखा एक द्वार पर लरा खड़ी है।

साहब ने उस से कहा—आह ! आप को इटना डेरी टैरना परा ! माफ़ करो! हाम अबी आटा, यें काम कर के। आप बैटे।

लरा कमरे में जा बैठी। साहब भी दूसरी कुरसी पर बैठे।

लरा ने पूछा—वेल ! क्या हुवा।

मैजिस्ट्रेट ने कहा—उस को कैड कर रक्का। कमिश्नर शायब का हुकूम होने से पांसी होगा। आप इटना डिन उस का साट रहा पहिचानने साकटा नईं !

लरा का गंडस्थल अरुण हो गया। एक तसवीर देखने के मिश से मुंह फेर के बोली—हाम उस का लेडी (स्त्री) का पास रैटा था। उस को अच्छी टरह डेका नईं। इटना बरा बागी पकरा गैया है, कमिश्नर बरा कुशी होगा। टुमारा और जनरल शायब का टर्की होगा।

मैजिस्ट्रेट—हाम तो कुच किया नईं। जनरल का टारीफ़ होने साकटा आलबट।

लरा—कैडी कहां हाय ?

मैजि—एई बांगला का नया कम्मरा में रक्का। टाली हामारा पास। (जेब से निकाल के दिखा दी) आउर आडमी का एटबार नईं करने सेकटा।

कुछ काल तक और बातें कर के लरा ने कहा—आज राट को हामारा गार (घर) में काना (खाना) काओ।

साहब ने आनंदित हो के उत्तर दिया—बरा कुशी से ! पर आज आप हामारा मेमान होटा नईं काए ?

लरा ने मंद मुसकान के साथ कहा—आच्चा !

साहब—और सब लोग को बी बुलाने मांगटा ?

लरा—नाईं—हाम अकेला अवेगा।

साहब आनंद के मारे निर्वाक हो गए। लरा ने विदा के अभिप्राय से हाथ फैलाया। साहब ने कोमल करपल्लव ग्रहण कर के अंगुली के द्वारा अधर स्पर्श किया, लरा ने हंस के हाथ खींच लिया। कहा—वेल, राट को मिलेगा।

हास्यलावण्यमधुरिमामयी सुन्दरी चंचल गति से चल दी, साहब शोभा देखते रह गए।

उस दिन साहब से और कोई काम नहीं हो सका।

लरा ने अकेले निमंत्रण ग्रहण किया है यह सुन के उस के आत्मीयगण

विस्मित और कुछ अप्रसन्न भी हुए पर वह स्वतंत्र थी कोई रोक न सकता था। संध्या के उपरांत लरा मैजिस्ट्रेट साहब बहादुर के यहां उपस्थित हुई।

भोजन के पश्चात इधर उधर की बातें होने लगीं। साहब पहिले लरा को गंभीर और रूपाभिमानिनी समझते थे पर आज उस की बाक्चातुरी और सरलता देख के मुग्ध हो गए। उन्हें जान पड़ा कि ऐसी रूपवती और गुणवती संसार भर में न होगी। प्रेम के आरंभ में सब लोग ऐसी ही कल्पना करते हैं।

साहब ने उसे गाने के लिए अनुरोध किया पर उस ने स्वीकार न किया। साहब ने दो चार प्रीति की बातें कीं लरा ने चतुरता से वह भी टालटूल दीं। इस से साहब ने समझा कि अभी कुछ दिन धीरज धरना चाहिए।

बंगले के एक कोने में दुनाली बंदूक धरी थी। उसे लरा उठा लाई और बोली—ओह! कैसा कराब चीज़!

साहब इस अदा पर और भी निछावर हो गए। हंस के बोले—कराब क्यों?

लरा—वेल, ए न होटा टो इटना लराई न होटा, आडमी मरटा नहीं।

साहब—बंडूक नहीं था टब बी टो आडमी लोग लरटा मरटा था। कोई हटयार न होटा टो बी डुनिया में एक सब से जेयाडा टेज़ हटयार था।

लरा—वो क्या हटयार?

साहब—"औरट लोग का आंक" (नेत्र)। यह कह के साहब लरा के नेत्रों की ओर देखने लगे।

लरा हंसने लगी। बोली—शायब लोग का बाटचीट उस से भी टेज़ होटा है।

हंसने में लरा के हाथ से बंदूक गिर गई। उस की नली से बाएं हाथ की उंगली में कुछ चोट आ गई। लरा ने दुःख बोधक अस्फुट चीत्कार किया और उंगली को दूसरे हाथ से दबा लिया।

साहब घबरा के उठ खड़े हुए। लरा ने कुछ हंसते कुछ रोते से स्वर के साथ कहा—वोह कुच डर नहीं उंगली में थोरा सा लगा।

साहब विकलता से बोले—डाकटर को बुलाटा है।

लरा—नहीं थोरा सा पानी डेने से टीक हो जायगा।

साहब स्वयं पानी लाने गए तब तक लरा ने पाकेट से एक शीशी निकाल के एक कांच के पात्र में किसी पदार्थ की दो चार बूंद डाल दीं जो बहुत ध्यान दिए बिना जान न पड़ती थीं।

साहब पानी ले कर आए। उसे अंगुली पर छोड़ कर लरा ने कहा—वैल कमटाकटी मालूम होटा है।

साहब—टो शेरी (एक प्रकार की मदिरा) डेटा है—यह कह के फिर चले गए। और उस की शीशी ले आए। लरा एक छोटा सा ग्लास लिए खड़ी थी वह साहब को दे दिया। साहब ने उस में मद्य भर दिया, लरा पी गई। और बोतल उठा के उस पात्र को भरा जिस में अपने पास से द्रव पदार्थ डाला था। उक्त काचभाजन को अपने अरुण अधर में लगा के साहब से कहा—लेव टुम बी पियो।

इस प्रकार कटाक्ष कर के और होठों से लगा के यदि लरा ज़हर का प्याला दे देती तो उसे भी साहब अमृत ही समझ के पी जाते। झट ग्लास ले कर जहां पर सुघर सुंदरी का अधरामृत लगा हुवा था वहीं मुंह लगा के 'अकालमृत्युहरण' कर गए।

लरा दूसरी ओर देखने लगी। साहब पी चुके, तब बोली—अब जाटा है।

साहब (कातर स्वर से) अबी ? हाट में बोट चोट लगा है टो······

लरा—नई'। अब डर्ड नई' हाय। चलो थोरा डेरी बाग में चले।

साहब के भाग्य से अमरसिंह के साथ ही लरा भी प्रेमजाल में आबद्ध हो गई क्या ?

दोनों जनों को बाग में टहलते देख के साहब के नौकरों ने निश्चय कर लिया कि अब दोनों का व्याह ठहर गया। व्याह की चर्चा पहिले भी साहब ने की थी अब भी की पर लरा ने कहा—अबी चारो टरफ़ लराई हो रहा है, अबी ऐसा बाट टीक नई' है।

साहब ने कहा—टो कुच डिन का बाड ?

लरा ने उत्तर दिया—डेकेगा। अबी हाम टुमारा डोस्ट है—लेकिन ऐसा बाट मट बोलो।

साहब निरुत्तर हो गए। कुछ काल के उपरांत बोले हमारा सीर घूमटा है। खरा रैने साकटा नई'।

लरा—थक गया है। बीटर चलो।

भीतर ले जा के लरा ने साहब को एक कौच पर लिटा दिया और कहा—डाकटर को बुलाटा है।

साहब—नई', थोड़ा डेरी चुप रहने से टीक हो जाटा।

लरा—अभी टरे थो भी हाम जाटा है।

" नहीं " कह के साहब खड़े हो गए। आंखों से बेसुधी के लक्षण देख पड़ने लगे। लरा ने शांत स्वर से कहा—अच्छा हाम बैटा हाय। आप लेटे।

फिर साहब को बोलने की सामर्थ्य न रही। सो गए। केवल अधनिकले अच्छरों से " बस " का शब्द निकला।

लरा बैठ के उन की ओर देखने लगी। साहब ने दो एक बार आंख खोलना चाहा फिर बन्द कर लीं। हाथ फैला के कहा—मिस टाइलर।

लरा—ओ एस। (हां)

लरा।

उत्तर नहीं मिला।

लरा।

लरा—सुनटा हाय।

प्रिया।

उत्तर नहीं मिला।

लरा ने अधरदंशन किया। साहब का चित्त जाल में बंध रहा था। किंतु उस का प्रिया कहना लरा को विष सा लगता था। फिर दो एकबार लरा का नामोच्चारण करने की चेष्टा की। उस ने भी हूं हां कर दी। अंत में साहब सोगए।

लरा ने साहब को विष नहीं दिया था। केवल तीव्र मादक वस्तु दी थी, इस से साहब की नींद रात भर खुलना असम्भव था।

सैंतीसवां परिच्छेद।

साहब को सोते देख के लरा ने उन की जेब से ताली निकाल ली। फिर चुपचाप एक एक द्वार खोलती हुई अमर सिंहवाले कमरे में गई। वह सोते थे। जगाया। और धीरे से कहा—कुच बोलो मट हमारा साट आओ।

लरा चुपके से द्वारबन्द करती हुई उन्हें साहब के सोनेवाले कमरे में लाके बोली—साहब का कपड़ा पहिन लो। नहीं पहरेवाला पैचान जायगा।

अमर सिंह ने लरा के दोबारे कहने से अंगरेजी भेष धारण किया। लरा ने उन्हें भरी हुई पिस्तौल उठा कर दी। और कहा—कोट में छिपा लो। हामारा हाट पकर के चलो।

लरा ने साहब की जेब में फिर चाभियां रख दीं तथा अमर सिंह का

हाथ पकड़ के बाग में लाई। दो चार सेवकों ने देखा तो जामा आदी हो गई। इस रीति से दोनों जने वाटिका के प्रांत में आके फाटक से निकल आए तब अमर सिंह ने पूछा—हमें बचाने से तुम पर तो कुछ आफत न आवेगी।

लरा ने कहा—कुच नईं होगा। औरट का कसूर नईं समजा जाटा।

अमर—अच्छा तो अब घर जाओ। यह उपकार हम कभी नहीं भूल सकते।

लरा—चलो अबी आप का साट और चलटा है। एहां डर नईं है।

दोनों जने आगे जाके एक वृक्ष के नीचे खड़े हुए। अमर सिंह ने कहा रात बहुत गई है अब घर जाओ। यह उपकार मैं जन्म भर स्मरण रखूंगा।

लरा—ज़रा टैरेगा नईं ?

अमर—हमें तो कुछ नहीं है पर बहुत रात बिता के जाओगी तो तुम्हारे घर में लोग क्या समझेंगे ?

लरा—ओह कुच समजे। हाम रोज़ टो ऐसा नईं करटा।

अमर सिंह चुप हो रहे। लरा भी कुछ न बोली। कुछ कहना ही न था तो खड़े रहने का कारण ?

कुछ काल के उपरांत अमर सिंह ने लरा का हाथ पकड़ के कहा—अब जाता हूं।

लरा का हाथ कांपता था। बोलते समय स्वर भी कांपने लगा। बोली—जाओ।

दोनों व्यक्ति अपने २ मार्गों को चल दिए। अमर सिंह खड़े होके उसे देखने लगे। जब वह दृष्टि से बाहर हो गई तो यह भी चले गए।

प्रातःकाल सेवकों ने अमर सिंह के भाग जाने का समाचार जाना। साहब भी जागे तो शिरःपीड़ा बोध करने लगे। रात की बात की सुध कहां ? क़ैदी के भागने का वृत्तांत सुन के अचम्भे में आ गए। शयनगृह में आके देखते हैं तो अमर सिंह के कपड़े पड़े हैं एक पिस्तौल नदारद। जान गए सब लरा के काम हैं। अमरसिंह के ढूंढने को चारों ओर लोग छूटे। साहबबहादुर लरा के यहां गए। उस से मिल के कहा—आप से कास (खास) बाट करना है। लरा उन्हें अपने कमरे में ले गई। दोनों बैठे। साहब बोले—आप अमर सिंह को चोर (छोड़) डिया ?

लरा ने मुसकिरा कर कहा—आप टीक सोचटा है। राट को नींड कैसा आया ?

साहब ने कुछ कुवाक्य कहना चाहा पर न कह केवल यही कहा—टुम राट का वकट् (वक्त) कोई नींड का डवा डिया।

लरा—हां। आप बीट डिन से सोया था नई'।

साहब की खिसी और रिस और भी बढ़ गई। बोले—ए बाट कुल (खुल) जाने से टुमारा क्या हालट होगा ?

लरा—कुलेगा नई'। मेजिस्ट्रेट कोलेगा टो बडनामी होगा।

साहब—टुम हमारा कैयाल (खयाल) कुच नई' किया। हामारा इज्जट जाने सेकटा नौकरी जाने सेकटा।

लरा—जाने सेकटा काए ? बीट सा कैडी लोग बाग जाटा है। आप टो बागा डिया नई'।

साहब (वेग से) ऐसा बेकूफी काए किया ?

लरा—ओ: बेकूफी नई' किया। जो आडमी हामारा जान बचाया इज्जट बचाया उस को बड ला डिया सिर्फ। ऐसा होने से आप बी एई करटा नई' ?

साहब कुछ काल लरा का मुख देखते रहे। अंत में अधीरता के साथ हाथ पकड़ लिया कहा—हाम इस का पर्वा नई' करेगा। आप हामारा मेम साएब होगा ? बोलो।

लरा (हाथ छुड़ाकर) ओ नो। शाडी करने मांगटा नई'।

"क्यों ?" साहब संशय करने लगे। और कुछ ठहर के पूछा—टो और किसी से मुहब्बट है ?

लरा (सक्रोध) टुम पूछनेवाला कौन हाय ?

साहब—कोई नई'। उस का नाम सुनने सेकटा ? अमर सिंग ?

यह नाम सुन के लज्जा के मारे लरा का मुख लाल हो गया (प्रेम से न कि अनुराग से) साहब समझ गए कि इस में संदेह नहीं है।

लरा ने कहा—टुम से चिपाने का कैया काम है ? और कुच जानने चाहटा ?

साहब—हां अमर टुमारा डोस्ट है ? (अमर सिंह की कांति देख साहब ने समझा था कि ऐसा हो तो आश्चर्य नहीं है)

लरा—नई'। मुहब्बट का बाट वो बी जानटा नई', हमारा मन का बाट वो बूजने सका नई'। टुम बी किसी से बोलो मट। हमारा साट शाडी का बाट बी बोलो मट।

साहब ने घृणाबोधक स्वर से कहा—टुम इटना डीन उम्र का साट रहा वो टुमारा मुहब्बट जानने सेका नईं काए? बागी लोग मेम साहब को टो डरटा नईं?

लरा—वो:! अमर सिंग डरेगा कीस को? वो बहाडूर आडमी है। हाई फ़ेमली (उच्च कुल) का है। वो जैला मैजिस्ट्रेट नईं है। उस का बीबी बरा क़ूबसूरट। टुम अमर का साट कुच डिन रहे टो सीक सेकटा है औरट का मुहबट।

लरा यह कह के बाहर चली गई। साहब कुछ लज्जित कुछ विस्मित कुछ विरक्त हो के अपने घर लौट गए।

अड़तीसवां परिच्छेद।

कुंवर सिंह जगदीशपुर फिर आए। मार्ग में वंशीवाले बाबाजी से भेंट हुई थी। वह बाबू साहब की शुश्रुषा करने लगे थे। पर अंत में जगदीशपुर ला के कह दिया—घाव बहुत ही गहिरा लगा है। बचने की आशा नहीं है।

कुंवर सिंह ने कहा—यह मैं भी जानता हूं पर सिपाही लोग न जानें तो अच्छा है नहीं तो उन का उत्साह जाता रहेगा।

अमर सिंह ने छुट जाने पर रास्ते में यह सम्वाद पाया तो भाई की सेवा में आके उपस्थित हुए। रानी और लक्ष्मी पर्वत ही पर रहीं।

कुंवर सिंह के आने का समाचार आरा में पहुंचा तो अंगरेज सेनापति ने आयर साहब की वीरता का स्मरण कर के कुंवरसिंह को जगदीशपुर से हटा देने का संकल्प किया। आरा की सारी सेना ले के यात्रा भी करदी।

कुंवर सिंह को उठने की शक्ति न थी। इस कारण अमर सिंह से कहा—भैया सेना का भार ग्रहण करो और अंगरेजों को यहां न आने दो। हमारी इच्छा है कि जगदीशपुर ही में प्राण छूटैं।

अंगरेजों की सेना अहंकार और विजय के उल्लास से भरी हुई आ रही थी। इधर से अमर सिंह भी थोड़ासा दल भाई के पास छोड़ के बाकी सेना के साथ शत्रु का सामना करने को रास्ते में जा डटे। बन में दोनों सेनाओं का सामना हुवा। अमर सिंह तथा दूसरे राजपूतों के द्वारा उत्साहित हो कर सिपाहियों ने घोर युद्ध किया। अंगरेजों का दल कुछ ही काल के उपरान्त ठहर न सका। अमर सिंह ने स्वयं वर्मधारण कर के घोड़े को आगे बढ़ा कर

गोलन्दाज को मारना आरम्भ किया। अंगरेजों का दल भागा, सेनापति ने रोकना चाहा पर कौन रुकता है अन्त में वह भी भाग चले।

अमर सिंह ने सेनापति के सामने जा कर कहा "क्यों साहब हमें पहिचानते हो" जनरल साहब ने पहिचान लिया पर कुछ उत्तर न दे के तलवार से आक्रमण किया। दोनों में युद्ध होने लगा साहब ने अमर सिंह के गले पर खड्ग प्रहार किया। अमर सिंह ने सिर झुका दिया इस से कुछ चोट न आई तलवार सिरत्राण ही में लग कर रह गई। साहब घोड़े की पीठ पर कुछ झुक गए थे इतने में अमर सिंह ने उन के मस्तक पर तलवार मारी सेनापति दो टुकड़े हो कर धरती पर गिर पड़े।

सेनापति के मरते ही अंगरेज लोग जी छोड़ के भागे। और सिपाहियों ने खदेड़ २ के उन्हें मारना आरम्भ किया। तथा उन की तोप और और २ अस्त्र छीन लिए। आरा लौटते २ अंगरेजों का तिहाई दल भी न रह गया।

आरा में अंगरेजों को बड़ा ही भय उपस्थित हो गया। यदि ऐसे में अमर सिंह चढ़ाई करते तो अवश्य जयी होते। पर कुंवर सिंह का ध्यान कर के वे जगदीशपुर ही लौट आए।

कुंवरसिंह ने आनंदपूर्वक भाई को आलिंगन किया और प्रधान २ राजपुतों को बुलवाया। कहा हमारा अंतिम समय आ गया है। अब आप लोग अमरसिंह को हमारा स्थानीय समझें इन का पराक्रम आप से छिपा नहीं है।

राजपुतों ने एक स्वर से बाबू साहब का वाक्य स्वीकार किया। और तीसरे दिन वंशीवाले बाबा जो, अमर सिंह तथा अन्यान्य क्षत्रियों के सम्मुख बाबू कुंवर सिंह ने बैकुंठ वास किया।

उनचालीसवां परिच्छेद।

अमर सिंह के बंदी हो जाने पर भी रामशरण का फूटा हुआ करम फूटा ही बना रहा। आरा में आ के उस ने अपने और पियारी के लिए पहिले घर ढूंढ़ा। दूसरे ही दिन खबर फैली कि अमर सिंह कारागार से नौ दो ग्यारह होगए। सेनापति, मैजिस्ट्रेट आदि सभी चिंताग्रस्त हैं। अब रामशरण पुरस्कार मांगने किस के पास कौन मुंह ले के जाता। इस के उपरांत ही सेनापति जगदीशपुर पर चढ़ के गए और वहीं के हो गए इस से रामशरण ने जो अंगरेजों का उपकार किया था उस का जाननेवाला भी कोई न रहा।

जगदीशपुर में अंगरेजों की पराजय से आरा में हलचल पड़ गई। पीछे जब दानापुर से कुछ सेना आई तब थोड़ा बहुत प्रबंध आरम्भ हुवा। विद्रोही और कुंवर सिंह के अनुचर के नाम से सैकड़ों लोग फांसी चढ़ा दिए गए। यह देख के रामशरण ने भागना चाहा पर भाग्य तो साथ ही घूमता था, इस से पकड़ गया और प्रधान विद्रोही, तथा कुंवर सिंह का सहायक ठहराया गया। यद्यपि उस ने सब अपराध अस्वीकार किए बरंच अमर सिंह के पकड़ा देने की चर्चा भी की पर क्या होता है। मैजिस्ट्रेट साहब ने उस से पूछा—टुम सरकार का टरफ़ से डरोगा था ?

रामशरण ने कहा—हां गरीब परवर ! रिपोर्ट मंगा कर देखी जाय हर साल मेरी तारीफ़ लिखी हुई निकलेगी।

इस बात पर मैजिस्ट्रेट ने कर्णपात न किया। पूछा—टुम कुआर सिंग का डरोगा बी रहा ?

अब रामशरण के प्राण सूख गए। बड़े कष्ट से कहा—हुज़ूर। बरायनाम। दिल से सरकारही की खैर मनाता था। बीबीगंज में आयर साहब को पुल बतलाया था। हां जान के खौफ़ से कुंवर सिंह की नौकरी भी कर ली थी।

मैजिस्ट्रेट ने बड़े नीरस स्वर से प्रश्न किया—टुमारी सिवा और कोई सरकार का नौकर बी कुआर सिंग का नौकरी किया ?

रामशरण थर थर कांपने लगा। आंख के सामने अंधकार छा गया। टूटे फूटे स्वर से बोला—हुज़ूर। और सब भाग गए थे।

मैजिस्ट्रेट—टुम बागा नईं काए ?

रामशरण—हुज़ूर मुझे बहुत पीछे खबर मिली थी। ऊपर से मैं पुलिस के महकमे में था, भागता तो नौकरी जाती रहती।

मैजिस्ट्रेट—टुम अमर सिंग को ग्रेफ़टार कराया था ?

रामशरण (पुनर्जीवित की भांति) हां हुज़ूर। मैं न होता तो वह कभी न पकड़ा जा सकता। इस के बहुत लोग गवाह हैं, बुला के दर्याफ़्त कर लीजिए।

मैजिस्ट्रेट—टुम सरकार से बी नमकहरामी किया कुआर सिंग से बी किया। टुम को जरूर पांसी होगा। हां टुम को डरकट में नईं होगा—डस्टूर माफिक होगा।

दूसरे दिन फ़ांसी का हुक्म दिया गया। रामशरण रोने लगा धरती पर

लोटने लगा। साहब का पैर धरना चाहा पर मैजिस्ट्रेट का इशारा पाते ही सेवक गण पकड़ लें चले। रामशरण पागल सा हो गया मैजिस्ट्रेट को, अंगरेजों को; कुंवर सिंह को, अमर सिंह को गाली बकने लगा।

रामशरण को बधस्थान में ले गए। देखने को बहुत सी भीड़ इकट्ठी हो गई। इस समय रामशरण अधमरा सा हो गया था। लोगों ने ढकील फकील के सीढ़ी पर चढ़ाया। डर के मारे रामशरण चारों ओर देखने लगा।

भीड़ में एक स्थान पर एक पुरुष शांत भाव से खड़ा था और उस के पास एक स्त्री चुपचाप रो रही थी। इन्हें देख के रामशरण जान गया कि फूलशाह और पियारी हैं।

पियारी फूलशाह के चरण पर गिर पड़ी। फूलशाह ने उसे उठाना चाहा पर वह न उठी। तब शाह साहब ने दो चार आश्वास वाक्य कह के उसे उठाया और आप जनसमुदाय के मध्य अदृश्य हो गए।

थोड़ी देर में जल्लाद ने रामशरण को बांधने का यतन किया। इतने ही में एक कोलाहल उठा और दर्शकगण एक दूसरे पर गिरने लगे। हल्ला मचा कि अमर सिंह आगए। इस से भय, विस्मय एवं कौतुक वशतः बधस्थान के आसपास वाला मानवसमुद्र उच्छलित हो उठा। फांसी का काठ भी धक्के से मड़मड़ करने लगा। जल्लाद और प्रहरीगण भी प्राण भय से सशंकित हो गए।

रामशरण हक्का बक्का खड़ा था, देखा कि फूलशाह भीड़ के मध्य अटल पर्वत को भांति खड़े हैं। उन्होंने संकेत द्वारा रामशरण से कहा कि भीड़ में फांद पड़। वह फांद पड़ा। कोलाहल और भी बढ़ गया। जब कुछ थम्हा तो जाना गया कि अमर सिंह वा राजपूत कहीं नहीं आए गए और रामशरण का भी पता नहीं है।

उसी रात्रि को आरा से दो कोस पश्चिम पीपलपांती नामक पीपलों के वृक्षसमुदाय के मार्ग से एक मनुष्य बड़ी सावधानी के साथ जाता था। कुछ दूर पर एक बड़े वृक्ष तले ठहरा। उसी वृक्ष की दूसरी ओर एक बड़ा दृढ़काय पुरुष इसे मिला उस ने कहा—रामशरण ?

फूलशाह। ऐसे समय ऐसे स्थान पर अकेला और कौन आ सकता था ? रामशरण उन के चरण पर गिर पड़ा। कांपते २ बोला—खुदावन्द ! आपही ने मुझे बचाया है। कहीं फिर न पकड़ा दीजिएगा।

फूलशाह कुछ हट कर बोले—मैं तुम्हें क़ैद करानेवाला कौन हूं ? मौत

तुम्हारे साथ २ फिरती है जब वक्त आवेगा खुद ही पकड़ जाओगे । भाग के अंगरेज़ों के हाथ से बच गए लेकिन किस्मत के हाथ से कहां बच सकते हो ? बुरे कामों का नतीजा तो देखना ही पड़ेगा ।

रामशरण चला गया । बन में प्रवेश करते समय एकबार फिर के देखा । उस कटाक्ष का देखनेवाला कोई न था । देवता वह जानता कि उसी दृष्टि के द्वारा रामशरण ने सारी आशाओं को तिलांजली देके बन में प्रवेश किया । केवल प्रतिशोध ही लेना उस का एकमात्र अभीष्ट रह गया । कैसा प्रतिशोध ? किस से ?

चालीसवां परिच्छेद ।

जगदीशपुर के बन में कुंवर सिंह की मृत्यु हुई । जिस समय वह मृत्यु-शय्या पर पड़े थे उस समय जगदीशपुर का वैभव, पूर्व पुरुषों का ऐश्वर्य, उन्हें स्मरण होता था । उन के पितृ पितामहादि के महल, प्राचीर, देवमंदिर, दुर्ग सब भस्म हो गए थे । अंगरेज़ों के विरोधी न होते तो कुछ न होता । कुंवर सिंह को यह दुःख भी था कि छोटे भाई को कुछ दिए नहीं जाते पर बंशीवाले बाबाजी तथा अमर सिंह के धैर्यदान करने से संतोष हो गया । मरणकाल में फिर उन्हें कोई चिंता नहीं रही । शांत भाव से वीरगति प्राप्त हो गई ।

कुंवर सिंह के साथ राजपूतों की आशा भी चली गई । अमर सिंह में राज-पुत्रोचित सब गुण थे पर कुंवर सिंह की सी प्रवीणता कहां ? वह स्वयं लड़ना जानते थे पर सेना का सञ्चार करना क्या जानें ? कुंवर सिंह की सी असाधारण बुद्धि और दूरदर्शिता उन में न थी ।

राजपूतों ने अमर सिंह की आधीनता स्वीकार की पर आगे का सा उद्योग न रहा । अंगरेज़ों को परास्त कर के आरा पर अधिकार जमाने की आशा न रही । इधर अंगरेज़ों ने जब देखा कि बन में अमर सिंह से पार पाना कठिन है तो दूसरा उपाय आरंभ किया । बन को काटने और जलाने का लग्गा लगा दिया । अमर सिंह का दल दिन २ घटने लगा कुछ लोग भाग गए कुछ लड़ भिड़ कर मर गए । क्रमशः युद्ध करना असंभव हो गया ।

उन का जो कुछ थोड़ा बहुत ऐश्वर्य था सो भी अंगरेज़ों के हाथ जा पड़ा । उन्हों ने सोचा अब युद्ध करना व्यर्थ है । कुंवर सिंह की नाईं मर जाना ही श्रेय है । पर उस से भी क्या होगा ? जीवन के लिए और बंधन भी

तो हैं। पर्वत विजन देव मंदिर में बैठी जो दिन रात मनाती हैं कि हमारे पति और देवर को चोट न लगे उन्हें छोड़ के किसी आशा के विना लड़ मरना ही क्या उचित है ? जो नवीन अनुराग अमर सिंह के हृदय में उदीप्त हुवा था, उस को अभी तक तृप्ति न हुई थी। जब से रानी के साथ परिचय हुवा तभी से युद्ध का आरंभ हो गया। ऐसे में दोनों का निश्चिंतता के साथ मिल बैठना कहां संभव था ? कभी:२ कुछ ही काल के लिए दर्शनस्पर्शन की सुविहिता मिलती थी फिर मृत्यु का सामना करने की शीघ्रता पड़ जाती थी। कभी कई दिन तक देखने तक का अवसर न प्राप्त होता था। यह बातें स्मरण होने पर निरर्थक मरना कब रुचने लगा ?

संसार में अब कुछ नहीं रहा। कुंवर सिंह का गौरव लौट के नहीं आनेका। अंगरेजों के राज्य में रहने से जीवन तक का संशय है। पर कुछ चिंता नहीं। कुछ न हो तो रानी तो हैं। उस के साथ रहने से कोई दुःख कैसे सता सकता है ?

अमर सिंह रानी के पास गए। वह मार्ग ही देखती थीं। उन की आकुलता केवल लक्ष्मी को विदित थी। अमर सिंह ने उन्हें सारी कथा सुना के कहा—अब भाग चलने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। युद्ध के योग्य सेना नहीं रही। पर भाग के चलें कहां ? हमें अपने लिए कोई चिंता नहीं है, पर तुम स्त्री हो कष्ट कैसे सह सकोगी ? ईश्वर न करे जो कहीं शत्रु के हाथ पड़ गईं तो क्या दशा होगी ?

रानी ने प्राणेश्वर का हाथ अपने हृदय पर धारण कर के कहा—अभी तक आप लड़ाई में लगे हुए थे इसी से मैं कुछ कह नहीं सकी पर अब जो कुछ भाग में बदा है वह दोनों जने मिल के भोगेंगे। मैं साथ रहूंगी तो आप को खटखट बहुत उठानी पड़ेगी। पर क्या आप मुझे छोड़ के अपनी रक्षा करेंगे ? अब लड़ाई भिड़ाई का काम नहीं है। जहां जी चाहे वहां चलें पर मुझे भी साथ ले चलें।

अमर सिंह रानी का मुख चंद्र देख २ सोच रहे थे क्या आश्चर्य है जो अब भी भाग्य में सुख लिखा हो। सुख केवल धन सम्पत्ति ही से तो नहीं मिलता। यह बिचारते हुए बोले—अकेली तुम्हारी ही चिंता भी तो नहीं है। लक्ष्मी कहां रहेंगी ? चारों ओर विपत्ति है। चारो ओर शत्रु हैं। मार्ग में पद २ पर भय है। कष्ट का ओर छोर नहीं है। तुम दोनों जनी स्त्री हो, यह सब कैसे सह सकोगी ?

लक्ष्मी कुछ दूर पर खड़ी थीं। रानी की ओर देख के बोलीं—हमारे लिए चिन्ता न करो। जो तुम दोनों की गति होगी हमारी भी हो रहेगी। काम पड़े तो हम मर भी सहज में सकती हैं।

रानी ने दौड़ के उन का हाथ पकड़ लिया और अमर सिंह से कहा—आप हम दोनों की चिन्ता न करें। वैरियों का भी हमें डर नहीं है। क्या राजपूतों की बहू बेटियां मरना जानती नहीं हैं? एक बार एक वैरी के हाथ में पड़ भी तो चुकी हैं। वह सुध कर लें। अब की बेर पहिले ही मर जायेंगी और क्या होगा? फिर इस की कौन चिन्ता है?

अमर सिंह की भौंहें चढ़ गईं। रामशरण का स्मरण होने से उन्हें कई बातों की सुध आ जाती थी और दहिना हाथ तलवार पर जा पड़ता था।

रात्रि को अचानचक वंशीवाले बाबाजी ने आके दर्शन दिए। रानी, लक्ष्मी और अमर सिंह ने उन की चरणवन्दना की। अमर सिंह ने कहा—प्रभु के दर्शन से बड़ा ही उपकार हुआ। अब आज्ञा दीजिए मुझे क्या कर्तव्य है?

स्वामी जी ने कहा—मैं इसीलिए आया हूं। तुम्हारा विचार यह स्थान त्याग देने का है?

अमर—और क्या कर सकता हूं? अंगरेज़ों ने बन का जलाना प्रारंभ कर दिया है। मेरी सेना कुछ कट गई। कुछ भाग गई। युद्ध कैसे करूंगा?

स्वामीजी—अब युद्ध की आवश्यकता भी नहीं है। तुम अपना कर्तव्य पालन कर चुके। कुंवर सिंह परमधाम को पधार गए। जगदीशपुर भी भूमिसात हो गया। अब वह गौरव नहीं फिरेगा। तुम भी उस की चिन्ता न करो। इस समय यही उचित है कि स्त्रियों को लेके कहीं चले जाओ। अंगरेज़ी राज्य में न रहो।

अमर—कहां जाऊं महाराज?

स्वामीजी—नयपाल जाना उत्तम होगा। वहां सुख से रहोगे। पहिले गंगा उतर के गोरखपुर जाओ। वहां से बन के रास्ते शीघ्रता और सावधानी के साथ चले जाना कोई शंका नहीं है। अज्ञात व्यक्ति को अपना परिचय न देना।

अमर सिंह ने यह उपदेश अंगीकार किया।

इकतालीसवां परिच्छेद ।

युद्ध समाप्त हो गया। अमर सिंह रानी और लक्ष्मी तथा कई एक विश्वासी अनुचरों को लेके नेपाल की ओर चले। आरा में अंगरेज़ों को उन के जाने का समाचार नहीं मिला। बन में छिपे हुए राजपुत्र कुछ दिन और अंगरेज़ों से लड़ते रहे। अंगरेज़ों ने जाना कि अमर सिंह ही प्रच्छन्न भाव से लड़ते हैं।

अमर सिंह ने अति गुप्त भाव से सावधानी की साथ प्रस्थान किया। बन से अलग कभी न होते थे। कभी २ दिन को न चलके रात ही को यात्रा करते थे। रानी और लक्ष्मी को बड़ा कष्ट होता था पर कभी कहती न थीं। अमर सिंह जानते तो बड़े कातर होते। ऐसे दुःख में भी रानी के सुख की सीमा न थी। क्योंकि दिन रात पति के साथ रहना और सेवा करना मिलता था। सच है "काह करब बैकुंठ ले कलप बिरिछ की छांह। अहिमद ढाक सुहावने जो प्रियतम गलबांह॥" लक्ष्मी भी छाया की भांति रानी के संग रहती थीं। सेवक लोग प्राणपन से उन का क्लेश घटाने की चेष्टा करते रहते थे। कई दिन इसी भांति चलते २ सब भागीरथी के तट पर पहुंचे। पार होतेही फिर उतनी शंका न थी। नेपाल का पथ खुला हुआ था।

तीर पहुंचते दुपहर ढल गई थी। पार उतरना अच्छा न था। एक साथी पहिले अनुसंधान लेने गया। निष्कण्टक मार्ग देख कर अमर सिंह ने अर्धरात्रि को पार जाना स्थिर किया।

गंगातीर पर निबिड़ बन था। उसी में एक वटवृक्ष के तले तीनों जनों ने विश्राम किया। जिस ओर से भय था उधर कुछ दूर पर अनुचर वर्ग जा बैठे।

सूर्यास्त में कुछ विलम्ब था। शाखापत्र भेद कर के दिवाकर की किरणें चारों ओर फैल रही थीं। वायु के साथ जान्हवी प्रवाह का कल्लोल मृदु मृदु सुनाई देता था। बन के मध्य चारों ओर घोंसलों से पक्षियों का शब्द आ रहा था। उस के साथ कभी २ दूरस्थित नौकावाहियों का गाना सुन पड़ता था।

अमर सिंह बट की एक जटा पकड़े खड़े थे। उसे हिला रहे थे। रानी उन के पांव के पास बैठी हुई सुख का दर्शन कर रही थीं। लक्ष्मी कुछ दूर पर और ओर मुंह किए खड़ी थीं।

जहां सब ठहरे थे उस स्थान के चारों ओर थोड़ी दूर तक तरु लता गुल्म समभूमि थी फिर आगे घना जंगल था। वहां एक प्रकार की घास बहुत

खड़ी २ थी जिस के मध्य से कुछ दिखाई न देता था। बीच २ में लताओं से आच्छादित कई जाति के छोटे २ पौधे थे। कुछ ही दूर चल कर विशाल विटपावली पूरित हिंसक जीवजन्तुसंकुल अन्धकारमय अरण्य था।

अमर सिंह खड़े थे। एक चींवटी उन की पीठ पर रेंग रही थी। रानी ने उसे देखा तो उठ के उठा के फेंक दिया। फिर अमर सिंह की पीठ से सटा के अपना हाथ उन के गले में डाल दिया। अमर सिंह वही कोमल कर कमल पकड़ के रानी की ओर फिरे और मुखचंद्र का चुम्बन कर लिया। रानी हट के खड़ी हो गईं और कहने लगीं—क्या करते हैं ? आप को लाज नहीं आती यह कह के लक्ष्मी के पास चल दीं। उन्हीं को लज्जा थी पर वह उस ओर देखती न थीं। उस से रानी ने स्वामी की ओर एक कुटिल कटाक्ष कर के फिर देखा। अमर सिंह ने भी बाहें पसार के बुलाने का इंगित किया। रानी ने भ्रूसंचालन द्वारा लक्ष्मी की ओर दिखा दिया।

लक्ष्मी खड़ी हुई अनमनी सी एक बनपुष्प को नोच रही थीं। सामने एक छोटे से पेड़ पर चिड़ियों का जोड़ा बैठा था। पीछे मानव दम्पति परस्पर मुखावलोकन द्वारा जगतचिंता बिसार रहे थे। संध्या के सूर्य का प्रकाश क्रमशः घट रहा था। पर इस हर्ष एवं प्रेमपूर्ण संसार से लक्ष्मी को क्या सम्बन्ध। इतने लोग मरते हैं हमें न जाने मौत क्यों भूल गई है ?

लक्ष्मी उन पक्षियों का चंचुसम्मेलन देख रही थीं। इतने में दोनों पखेरू भयसूचक शब्द कर के उड़ गए। उन्हीं के नीचे की घास कुछ विचलित हुई। लक्ष्मी स्थिर दृष्टि से उधर ही देखने लगीं। घास कुछ हिलने लगी जिस से ज्ञान पड़ा कोई जंतु उस के भीतर से आ रहा है।

लक्ष्मी ने सुन रक्खा था कि बाघ इसी प्रकार घास के मध्य विचरता है। इस कारण भयभीत हो कर चिल्लाना चाहा। पर व्याघ्र के बदले जो कुछ देखा उस से चिल्लाना कैसा बोलना भी दुर्घट हो गया।

लक्ष्मी को उस घास में एक बंदूक की नल दिखाई दी और फिर अदृश्य हो गई। इस के उपरांत बंदूकधारी ने बड़ी सावधानी से तनिक शिर उठा के देखा और झुका लिया। उस ने लक्ष्मी को नहीं देखा उस की दृष्टि अमर सिंह पर थी। लक्ष्मी ताड़ गईं कि वह छिप कर अमर सिंह पर चोट किया चाहता है।

उस मनुष्य के मुख का थोड़ा ही भाग देख कर लक्ष्मी पहिचान गई थीं

कि वह कौन है। अमर सिंह ने रामशरण के माथे पर चाबुक से जो चिन्ह कर दिया था वही चिन्ह लक्ष्मी को देख पड़ा।

लक्ष्मी ने जब अमर सिंह पर विपत्ति आते देखी तब मुख से कोई बात नहीं निकाली। शीघ्रता से आ के उन के सम्मुख खड़ी हो गईं। जिधर घास का जंगल था उधर ही खड़ी हो रहीं और अमर सिंह को अपनी आड़ में कर लिया।

ज्योंही लक्ष्मी आके खड़ी हुईं योंहीं घास के भीतर से धुएं की रेखा निकली और साथ ही भुसुंडी का शब्द हुआ। वृक्षों पर बैठे हुए बहुत से पक्षी कोलाहल करके चारों ओर उड़ने लगे। नदी के उस पार तक उक्त शब्द प्रतिध्वनित हुआ। सेवकगण उसे सुन कर दौड़ आए। बाणविद्ध विहंगिनी की नाईं लक्ष्मी गिर पड़ीं। अमरसिंह पास ही खड़े थे उन्हें धरती पर गिरते देख के संभाल लिया और धीरे २ लिटा दिया।

घास में से उठती हुई धूमरेखा अमरसिंह ने देखी थी सेवकों को अंगुली द्वारा उधर ही खोजने की आज्ञा दी पर स्वयं नहीं उठ सके क्योंकि एक हाथ लक्ष्मी के मस्तक के नीचे था सेवकगण एक बंदूक ढूंढ़ लाए पर किसी मनुष्य का पता न पाया।

लक्ष्मी ने गिरते समय कुछ अस्फुट शब्द कहा था फिर नहीं बोल सकीं। एक बार अमर सिंह की ओर देख के रह गईं। मुख पर यंत्रणा का कोई चिन्ह न था। उन की स्थिर दृष्टि के सम्मुख अमरसिंह ने अपनी आंखें झुकालीं आंखों। में आंसू भर आए।

रानी दौड़। आईं लक्ष्मी को माता की भांति बड़े यत्न से अपनी गोदी में लिटा लिया। लक्ष्मी ने एक बार उन की ओर देखा। और, फिर अमरसिंह के मुख की ओर देख के रह गईं।

रानी ने जाना था कि लक्ष्मी अनजान में अचानचक आहत हो गई हैं पर अमर सिंह ने जान लिया कि हमें बचाने के लिए इन्हीं ने अपने प्राण दे दिए हैं। लक्ष्मी की दृष्टि से रानी को भी यही बात भासित होने लगी।

गोली कहां लगी है यह जानने के लिए अमर सिंह व्याकुल नेत्रों से लक्ष्मी के हाथ, पांव, स्कन्ध, ग्रीवादि देखने लगे पर कहीं घाव का चिन्ह न देख पड़ा न कहीं से लहू निकलते देखा तो व्याकुल लोचन से रानी की ओर देख के रह गए। रानी समझ गईं कहने लगीं यह लाज करने का समय नहीं है आपही देख लें।

अमर सिंह ने उन का वक्षस्थल खोल के देखा। बाईं ओर गोली का घाव था वहां से अति क्षीण रक्तधारा बहती थी।

देख के रानी को बड़ा धैर्य हुआ। कहने लगीं—डर क्या है, जीजी! तनिक ही तो लगा है। लहू भी बहुत नहीं निकलता। घबराओ मत्ती बातें करो!

अमर सिंह जान गए कि इन्हों ने हमारे लिए जीव दे दिया है गोली चलानेवाले ने चोट पूरी की है पर भली भांति देख नहीं सका।

लक्ष्मी को बोलने की शक्ति न थी। देह रोमांचित मुख और वक्षस्थल अरुणित हो रहा था।

क्रमशः नेत्र निष्प्रभ हो गए और अन्त में मुंद गए। संध्या होते होते समाप्त हो गईं।

अमर सिंह ने कितने ही लोगों का अपने हाथ से वध किया था कितनों ही को मरते देखा था पर ऐसा दृश्य कभी न देखा था इस से बालक की भांति रोने लगे।

रानी कुछ काल तक चुप रहीं फिर पति के चरण पकड़ कर बोलीं—हमें ऐसी मौत क्यों न हुई? हम आप के लिए काहे न मर गईं?

अमर सिंह ने कुछ उत्तर न दिया, रोने लगे।

रानी ने लक्ष्मी की पदधूलि अपने माथे पर लगाई। और रोने लगीं।

ऐसा अनुराग किसी प्रकार निषिद्ध नहीं है। एक पुरुष को दूसरे के लिए मरने का पूरा अधिकार है। लक्ष्मी के मन का भाव कोई न जानता था वह आप भी न जानती थीं। पर मरने के समय सब ने जान लिया।

लक्ष्मी के अन्तिम काल की दृष्टि अमर सिंह के मन में चिरकाल तक जाग्रत रही। रानी भी भूल न सकीं।

परिशिष्ट ।

अमर सिंह और रानी निर्विघ्नता के साथ नयपाल पहुंच गए। वहां की राजकर्मचारियों ने इन्हें बड़े आदर से आश्रय दिया। यह वहीं रहने लगे।

रामशरण अमर सिंह की हत्या करना चाहता था पर इच्छा पूरी न हुई इस से शिथिल प्रयत्न हो गया। कुछ दिन के उपरान्त फिर आरा में पकड़ गया। इस बार प्राणरक्षा का यत्न नहीं कर सका। विचार के पश्चात उसे फांसो दे दी गई। फांसी के अवसर पर भीड़ में केवल एक स्त्री उस के लिए रोई थी।

अमर सिंह के नयपाल चले जाने पर फूलशाह भी निरुद्देश हो गए। बंगुलिया बाबाजी को कुछ दिन तक लोगों ने देखा फिर किसी ने न जाना कि वह कहां चले गए।

लरा अनव्याही हो रही। विद्रोह के समय वह आरा में थी। बहुत लोग उसे देखने आते थे, बहुत से धनी और गुणी आते थे पर वह विवाह करना स्वीकार न करती थी। इस का कारण केवल वही जानती थी वा मैजिस्ट्रेट साहब जानते थे। कुछ ही दिन के उपरांत वह कुंवारी ही संसार से चल बसी।

॥ शुभमस्तु ॥

BENGAL LIBRARY
4 APL 1907

विज्ञापन

रामचरित मानस जीवनी, फोटो और जिल्द सहित ७)

रामचरित मानस बिना जिल्द और फोटो ४)

रामायण परिचर्या परिशिष्ट प्रकाश टीका १०)

मानसभावप्रकाश टीका १०)

किष्किन्धाकांड सटीक सौ सौ ९०० पृष्ठों में २॥)

कवितावली रामायण और हनुमानबाहुक सटीक ॥)

वैराग्यसंदीपिनी बंदन पाठक कृत टीका सहित ॥)

बरवा रामायण ” ” ≈)

श्रीरघुवरगुणदर्पण (भक्ति का अपूर्व ग्रन्थ) ॥)

योगदर्शन भाषाभाष्यसहित २॥) और १)

आर्यमीमांसा ॥)

भाषाशब्दकोष (हिन्दी का अपूर्व कोष) ॥≈)

सटीक मानस मयंक ४।)

हरिश्चन्द्रकला प्रथम खण्ड नाटक समूह ४)

” २ य० इतिहास समूह १)

” ३ य० राजभक्ति ग्रन्थसमूह २)

” ४ र्थ० भक्तरहस्य भक्ति ग्रन्थसमूह ४)

” ५ म० काव्यामृतप्रवाह कविताग्रन्थ ४)

बाबू हरिश्चन्द्र जी की सचित्र जीवनी— १॥)

मैनेजर—खड्गविलासप्रेस—बांकीपुर ।